माहनामा

रबीउ़ल आख़िर 1438 सि. हि. | जनवरी 2017 सि. ई.

फ़ैज़ाने मदीना

(दा 'वते इस्लामी)

रूहानी इलाज

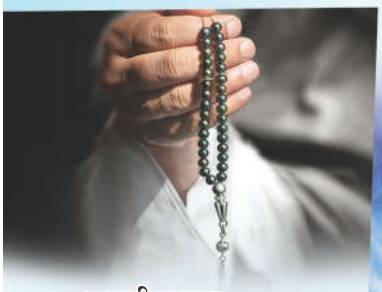

मदनी क्लीनिक

खुदा के फ़ज़्ल से हम पर है साया ग़ौसे आ'ज़म का
हमें दोनों जहां में है सहारा ग़ौसे आ'ज़म का

मज़ारे ग़ौसे आ'ज़म का रूह़ परवर मन्ज़र

अह़कामे तिजारत

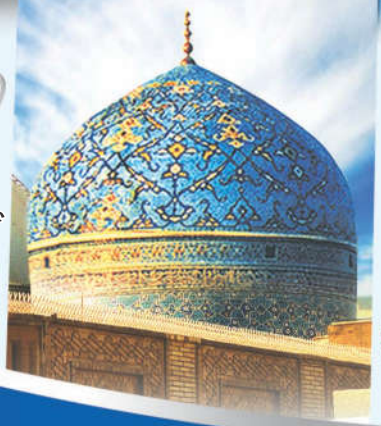

दा 'वते इस्लामी की धूमधाम

घर अम्न का गहवारा कैसे बने ?

मक्तूबाते अमीरे अहले सुन्नत

- लोहा नर्म हो जाता.... ! 6
- ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام और समझदार च्यूंटी 10
- सुल्त़ानुल औलिया हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म 32
- गुमशुदा चीज़, रिश्तेदार में रुकावट वग़ैरा के औराद 49
- सर्दी से बचने के 11 मदनी फूल 50

ब फ़ैज़ाने नज़र

सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह, इमामे आ'ज़म, फ़क़ीहे अफ़्ख़म, ह़ज़रते सय्यिदुना

इमाम अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

ब फ़ैज़ाने करम

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह

इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

फ़ैज़ाने मदीना माहनामा
जनवरी 2017 ई.

बच्चे की आंख ज़ाएअ़ हो गई

इत्तिलाआ़त के मुताबिक़ एक तीन सालह बच्चे के वालिद का दोस्त इन के घर आया और मोबाइल फ़ोन के केमेरे से बच्चे की तस्वीर बनाने लगा। तस्वीर बनाने से पहले वोह केमेरे की फ़्लेश लाइट बन्द करना भूल गया और दस इंच के फ़ासिले से बच्चे की तस्वीर बनाई। आधे घन्टे बा'द बच्चे की आंखों से आंसू बहने लगे और वालिदैन ने महसूस किया कि बच्चे को देखने में दुश्वारी हो रही है। बच्चे को फ़ौरन डॉक्टर के पास ले जाया गया, जिस ने मुआ़इने के बा'द बताया कि केमेरे की तेज़ फ़्लेश लाइट के बाइस इन का बेटा एक आंख से नाबीना हो चुका है। डॉक्टर का कहना है कि चार साल की उ़म्र तक बच्चे की आंख में क़रीब से केमेरे की फ़्लेश लाइट पड़ने से आंख के रेटीना में मौजूद मेक्यूला (Mecula) शदीद मुतअस्सिर होता है जिस के सबब बीनाई ज़ाएअ़ होने का बहुत ज़ियादा ख़दशा होता है और येह एक नाक़ाबिले इलाज मस्अला है। इस उ़म्र तक बच्चे की आंख में मेक्यूला पूरी त़रह़ नश्वो नुमा नहीं पाता इस लिये येह इस क़दर तेज़ रौशनी बरदाश्त नहीं कर सकता। डॉक्टरों ने लोगों को हिदायत की है कि चार साल की उ़म्र से क़ब्ल बच्चे की तसावीर बनाने से पहले पूरी त़रह़ यक़ीन कर लें कि उन के केमेरे की फ़्लेश लाइट बन्द है वरना उन का बच्चा उ़म्र भर के लिये नाबीना भी हो सकता है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मोबाइल फ़ोन के पैदाकर्दा मसाइल में से एक मौक़अ़ बे मौक़अ़ तस्वीर बनाने का शौक़ भी है आज कल चूंकि कमो बेश हर शख़्स के पास मोबाइल फ़ोन मौजूद होता है लिहाज़ा जिसे जहां मौक़अ़ मिलता है वोह किसी की भी तस्वीर या वीडियो बना लेता है चाहे सामने वाला इस पर राज़ी हो या न हो। येह शौक़ उस वक़्त ग़ैर इन्सानी रूप धार लेता है जब कहीं बम धमाका, एक्सीडन्ट या कोई और सानेह़ा रू नुमा हो और मौक़अ़ पर मौजूद अफ़राद हलाक होने वालों की मुन्तक़िली और ज़ख़्मियों की मदद करने के बजाए उन की तस्वीर या वीडियो बनाने में मश्ग़ूल हो जाते हैं। यक़ीनन येह एक संग दिलाना अ़मल है। ऐसा करने वाले अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता ख़ुद किसी ऐसे सानेह़े का शिकार हों और मौक़अ़ पर मौजूद अफ़राद इन की मदद के बजाए इन लम्ह़ात को मह़फ़ूज़ करने में मसरूफ़ रहें तो इन के दिल पर क्या गुज़रेगी!

मोबाइल फ़ोन से तस्वीर साज़ी के शौक़ का एक और नुक़्सान मुख़्तलिफ़ जिस्मानी अ़वारिज़ (बीमारियों) की सूरत में भी ज़ाहिर हो सकता है। मसलन पैदाइश के फ़ौरन बा'द वालिदैन या दोस्त अह़बाब का बच्चों की तसावीर बना कर उन्हें सोश्यल मीडिया पर अपलोड (Upload) करना एक आ़म सी बात बनती जा रही है। ब ज़ाहिर तो इस में कोई ह़रज नज़र नहीं आता लेकिन मज़कूरा वाक़िए़ से पता चलता है कि ऐसा करना बसा औक़ात बहुत बड़े नुक़्सान का बाइस बन सकता है, बिलख़ुसूस जब केमेरे की फ़्लेश लाइट ऑन हो।

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

रबीउ़ल आख़िर 1438 हि. | जनवरी 2017 ई.

शुमारा नम्बर (1)

पेशकश : मजलिसे माहनामा फ़ैज़ाने मदीना

हदिया

फ़ी शुमारा (सादा) : 35 रूपे

सालाना मअ़ डाक ख़र्च : 450 रूपे

सालाना मअ़ रजिस्टरी : 850 रूपे

फ़ी शुमारा (रंगीन) : 60 रूपे

सालाना मअ़ रजिस्टरी : 1100 रूपे

रंगीन शुमारे को आ़म डाक से रवाना नहीं किया जाएगा

एड्रेस

मक्तबतुल मदीना

421, मटिया महल, उर्दू मार्केट, जामेअ़ मस्जिद,

देहली-6 , फ़ोन नं. 011-23284560

Web: www.dawateislami.net

Email: mahnama@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ؕ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

फ़ेहरिस (Index)

नम्बर	सिल्सिला	मौज़ूअ़	सफ़्हा
1	तफ़्सीरे कुरआन	नेकी पर मदद करने और गुनाह पर मदद न करने का हुक्म	4
2	ह़दीस शरीफ़ और इस की शर्ह़	बेकार कामों से बचिये	5
3	मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब	लोहा नर्म हो जाता....!	6
4	रौशन मुस्तक़्बिल	ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام और समझदार च्यूंटी	10
5	दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत	रस्मो रवाज	11
6	रौशन सितारे	ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	14
7	अह़कामे तिजारत	दर्ज़ियों का एक मस्अला / मोबाइल पर एडवान्स बेलेन्स लेना कैसा?	16
8	मुआ़शरे के नासूर	धोका	18
9	अह़मद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी	फ़तावा रज़विय्या से मदनी फूल	19
10	इस्लामी ज़िन्दगी	बरदाश्त	20
11	आसान नेकियां	रबीउ़ल आख़िर में की जाने वाली आसान नेकियां	21
12	अश्आ़र की तशरीह़	ज़र्रे झड़ कर तेरी पैज़ारों के	23
13	कैसा होना चाहिये...!	शौहर को कैसा होना चाहिये?	24
14	सुन्नत और ह़िक्मत	नाखुन काटने की सुन्नतें और आदाब	25
15	नौजवानों के मसाइल	नाकामी	26
16	ह़िफ़ाज़ती तदाबीर	आग से जलने पर इब्तिदाई त़िब्बी इमदाद	28
17	फलों और सब्ज़ियों के फ़वाइद	कद्दू शरीफ़ और सेब के फ़वाइद	29
18	कुतुब का तआ़रुफ़	सिरातुल जिनान फ़ी तफ़्सीरे अल कुरआन	30
19	घर अम्न का गहवारा कैसे बने?	इ़ज़्ज़त दीजिये इ़ज़्ज़त लीजिये	31
20	तज़्किरए सालिह़ीन	सुल्त़ानुल औलिया हुज़ूर ग़ौसुल आ'ज़म	32
21	इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल	मिस्वाक शरीफ़ के फ़ज़ाइल	33
22	इस्लाम की रौशन ता'लीमात	बड़ों का एह़तिराम कीजिये	34
23	मक्तूबाते अमीरे अहले सुन्नत	सब्र की अहम्मिय्यत और उस के फ़ज़ाइल	36
24	तज़्किरए सालिह़ात	उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا	37
25	मदनी क्लीनिक	सफ़ाई सुथराई की अहम्मिय्यत व ज़रूरत	39
26	ता'ज़ियत व इ़यादत	ख़लीफ़ए मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द के विसाल पर ता'ज़ियत	41
27	अमीरे अहले सुन्नत की बा'ज़ मसरूफ़ियात	मर्कज़ी मजलिसे शूरा का मदनी मश्वरा / बिस्मिल्लाह ख़्वानी / इ़यादत व ता'ज़ियत	43
28	मन्क़बत	तेरे दर से है मंगतों का गुज़ारा या शहे बग़दाद	45
29		अमीरे अहले सुन्नत की ऑप्रेशन की झलकियां	46
30	रूह़ानी इ़लाज	गुमशुदा चीज़, रिश्ते में रुकावट और बच्चों का इग़वा	49
31	मदनी फूलों का गुलदस्ता	बुज़ुर्गाने दीन के फ़रामीन / सर्दी से बचने के 11 मदनी फूल	50
32	दा'वते इस्लामी की मदनी ख़बरें	ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची है	51
33		दा'वते इस्लामी की बैरूने मुल्क की मदनी ख़बरें	55
34	May Dawat-e-Islami Progress!	Dawat-e-Islami News (Overseas)	60
35	May Dawat-e-Islami Progress!	Brief Activities of Dawat-e-Islami's Majalis	64

सच्ची बात सिखाते येह हैं

सच्ची बात सिखाते येह हैं
सीधी राह चलाते येह हैं
रब है मो'ती येह हैं क़ासिम
रिज़्क़ उस का है खिलाते येह हैं

اِنَّا اَعْطَیْنٰکَ الْکَوْثَر
सारी कसरत पाते येह हैं
ठन्डा ठन्डा मीठा मीठा
पीते हम हैं पिलाते येह हैं
नज़्ए रूह में आसानी दें
कलिमा याद दिलाते येह हैं
मरक़द में बन्दों को थपक के
मीठी नींद सुलाते येह हैं
मां जब इक लोते को छोड़े
आ आ कह के बुलाते येह हैं
अपनी बनी हम आप बिगाड़े
कौन बनाए बनाते येह हैं
इन के हाथ में हर कुन्जी है
मालिके कुल कहलाते येह हैं
कह दो रज़ा से खुश हो खुश रह
मुज़्दा रिज़ा का सुनाते येह हैं

हदाइके़ बख़्शिश अज़ आ'ला हज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

तूही मालिके बहरो बर है या अल्लाहु या अल्लाह

तू ही मालिके बहरो बर है या **अल्लाहु** या **अल्लाह**
तू ही ख़ालिके़ जिन्नो बशर है या **अल्लाहु** या **अल्लाह**

तू अबदी है तू अज़ली है तेरा नाम अ़लीमो अ़ली है
ज़ात तेरी सब से बरतर है या **अल्लाहु** या **अल्लाह**

वस्फ़ बयां करते हैं सारे संगो शजर और चांद सितारे
तस्बीहे़ हर ख़ुश्को तर है या **अल्लाहु** या **अल्लाह**

तेरा चर्चा गली गली है डाली डाली कली कली है
वासिफ़ हर एक फूलो समर है या **अल्लाहु** या **अल्लाह**

रात ने जब सर अपना छुपाया चिड़यों ने येह ज़िक्र सुनाया
नग़्मा बार नसीमे सह़र है या **अल्लाहु** या **अल्लाह**

बख़्श दे तू अ़त्तार को मौला वासित़ा तुझ को उस प्यारे का
जो सब नबियों का सरवर है या **अल्लाहु** या **अल्लाह**

वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

हम पर है साया ग़ौसे आ'ज़म का رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

खुदा के फ़ज़्ल से हम पर है साया ग़ौसे आ'ज़म का
हमें दोनों जहां में है सहारा ग़ौसे आ'ज़म का

मुरीदी ला तख़फ़ कह कर तसल्ली दी ग़ुलामों को
क़ियामत तक रहे बे ख़ौफ़ बन्दा ग़ौसे आ'ज़म का

गए इक वक़्त में सत्तर मुरीदों के यहां आक़ा
समझ में आ नहीं सकता मुअम्मा ग़ौसे आ'ज़म का

अज़ीज़ो कर चुको तय्यार जब मेरे जनाज़े को
तो लिख देना कफ़न पर नामे वाला ग़ौसे आ'ज़म का

लह्द में जब फ़िरिश्ते मुझ से पूछेंगे तो कह दूंगा
त़रीक़ा क़ादिरी हूं नाम लेवा ग़ौसे आ'ज़म का

निदा देगा मुनादी ह़श्र में यूं क़ादिरियों को
कहां हैं क़ादिरी कर लें नज़ारा ग़ौसे आ'ज़म का

फ़िरिश्तो रोकते हो क्यूं मुझे जन्नत में जाने से
येह देखो हाथ में दामन है किस का ग़ौसे आ'ज़म का

येह कैसी रौशनी फैली है मैदाने क़ियामत में
निक़ाब उठा हुवा है आज किस का ग़ौसे आ'ज़म का

कभी क़दमों पे लौटूंगा कभी दामन पे मचलूंगा
बता दूंगा कि यूं छुटता है बन्दा ग़ौसे आ'ज़म का

लह्द में भी खुली हैं इस लिये उ़श्शाक़ की आंखें
कि हो जाए यहीं शायद नज़्ज़ारा ग़ौसे आ'ज़म का

सदाए सूर सुन कर क़ब्र से उठते ही पूछूंगा
कि बतलाओ किधर है आस्ताना ग़ौसे आ'ज़म का

जमीले क़ादिरी सौ जां से हो क़ुरबान मुर्शिद पर
बनाया जिस ने तुझ जैसे को बन्दा ग़ौसे आ'ज़म का

(क़िबालए बख़्शिश, स. 52)

तफ़्सीरे क़ुरआने करीम

नेकी पर मदद करने और गुनाह पर मदद न करने का हुक्म

मुफ़्ती अबू सालेह़ मुह़म्मद क़ासिम अ़त्तारी

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَتَعَاوَنُوۡا عَلَى الۡبِرِّ وَالتَّقۡوٰى‌ ۖ وَلَا تَعَاوَنُوۡا عَلَى الۡاِثۡمِ وَالۡعُدۡوَانِ‌ ۖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ‌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيۡدُ الۡعِقَابِ ۝۲﴾ (پ۶، المآئدۃ:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो और **अल्लाह** से डरते रहो बेशक **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है।

इस आयते मुबारका में **अल्लाह** तआ़ला ने दो (2) बातों का हुक्म दिया है : (1) नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करने का। (2) गुनाह और ज़ियादती पर बाहमी तआ़वुन न करने का।

بِر से मुराद हर वोह नेक काम है जिस के करने का शरीअ़त ने हुक्म दिया है और तक़्वा से मुराद येह है कि हर उस काम से बचा जाए जिस से शरीअ़त ने रोका है। اِثْم से मुराद गुनाह है और عُدْوَان से मुराद **अल्लाह** तआ़ला की ह़ुदूद में ह़द से बढ़ना। (جلالین، ص94) एक क़ौल येह है कि اِثْم से मुराद कुफ़्र है और عُدْوَان से मुराद ज़ुल्म या बिदअ़त है। (خازن، 1/461) ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : नेकी से मुराद सुन्नत की पैरवी करना है। (صاوی، 2/469) ह़ज़रते नवास बिन समआ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से नेकी और गुनाह के बारे में पूछा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : नेकी हुस्ने अख़्लाक़ है और गुनाह वोह है जो तेरे दिल में खटके और लोगों का उस से वाक़िफ़ होना तुझे ना पसन्द हो।

(ترمذی، 4/173، حدیث:2396)

येह इन्तिहाई जामेअ़ आयते मुबारका है, नेकी और तक़्वा में इन की तमाम अन्वाओ़ अक़्साम दाख़िल हैं और اِثْم और عُدْوَان में हर वोह चीज़ शामिल है जो गुनाह और ज़ियादती के ज़ुमरे में आती हो। इल्मे दीन की इशाअ़त में वक़्त, माल, दर्स व तदरीस और तह़रीर वग़ैरा से एक दूसरे की मदद करना, दीने इस्लाम की दा'वत और इस की ता'लीमात दुन्या के हर गोशे में पहुंचाने के लिये बाहमी तआ़वुन करना, अपनी और दूसरों की अ़मली ह़ालत सुधारने में कोशिश करना, नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना, मुल्क व मिल्लत के इजतिमाई मफ़ादात में एक दूसरे से तआ़वुन करना, सोश्यल वर्क (Social Work) और समाजी ख़िदमात सब इस में दाख़िल हैं। गुनाह और ज़ुल्म में किसी की भी मदद न करने का हुक्म है। किसी का ह़क़ मारने में दूसरों से तआ़वुन करना, रिश्वतें ले कर फ़ैसले बदल देना, झूटी गवाहियां देना, बिला वज्ह किसी मुसलमान को फंसा देना, ज़ालिम का इस के ज़ुल्म में साथ देना, ह़राम व नाजाइज़ कारोबार करने वाली कम्पनियों में किसी भी त़रह़ शरीक होना, बदी के अड्डों में नोकरी करना येह सब एक त़रह़ से बुराई के साथ तआ़वुन है और नाजाइज़ है। سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक की ता'लीमात कितनी उ़म्दा और आ'ला हैं, इस का हर हुक्म दिल की गहराइयों में उतरने वाला, इस की हर आयत गुमराहों और गुमराह गरों के लिये रौशनी का एक मीनार है। इस की ता'लीमात से सह़ीह़ फ़ाइदा उसी वक़्त ह़ासिल किया जा सकता है जब उन पर अ़मल भी किया जाए। अफ़्सोस, फ़ी ज़माना मुसलमानों की एक ता'दाद अ़मली त़ौर पर क़ुरआनी ता'लीमात से बहुत दूर जा चुकी है। **अल्लाह** तआ़ला सभी मुसलमानों को क़ुरआन के अह़कामात पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। (सिरातुल जिनान, 2/378)

हदीस शरीफ़ और इस की शर्ह

बेकार कामों से बचिये

मुहम्मद ए'जाज़ नवाज़ अ़त्तारी मदनी

नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مِنْ حُسْنِ اِسْلَامِ الْمَرْءِ تَرْكُهٗ مَالَا يَعْنِيْهِ या'नी किसी शख़्स के इस्लाम की ख़ूबी येह है कि बेकार बातें छोड़ दे। (مسند امام احمد، 3/259، حدیث: 1737)

मश्हूर मुह़द्दिस व शारेह़े ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली अल क़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस्लाम की ख़ूबी से मुराद कमाले इस्लाम है और बेकार बात से मुराद वोह बात है जिस की त़रफ़ किसी दीनी या दुन्यवी ज़रूरत में ह़ाजत न हो। इमाम नववी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : येह ह़दीस उन अह़ादीस में से है जिन पर इस्लाम का दारोमदार है। (مرقاۃ، 8/585، تحت الحدیث: 4840ملتقطا) ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : या'नी कामिल मुसलमान वोह है जो ऐसे कलाम ऐसे काम ऐसी ह़रकात व सकनात से बचे जो उस के लिये दीन या दुन्या में मुफ़ीद न हों, वोह काम या कलाम करे जो उसे या दुन्या में मुफ़ीद हो या आख़िरत में। سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन दो कलिमों में दोनों जहान की भलाई वाबस्ता है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/465)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेकार कामों में से एक फ़ुज़ूल गुफ़्तगू करना भी है, इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बे फ़ाइदा गुफ़्तगू की ता'रीफ़ येह है कि तुम्हारा ऐसा कलाम करना कि अगर उस से रुक जाते तो गुनहगार न होते और न ही फ़िल ह़ाल या आइन्दा कोई नुक़्सान होता। मसलन तुम किसी मजलिस में लोगों के सामने अपने सफ़र का ज़िक्र करो और उस में जो पहाड़ और नहरें देखीं और जो वाक़िआ़त तुम्हारे साथ पेश आए उन्हें और दीगर बातें बयान करो तो येह वोह उमूर हैं कि अगर तुम इन्हें बयान न भी करते तब भी गुनहगार न होते और न ही कोई नुक़्सान उठाते। मज़ीद फ़रमाते हैं : जब एक कलिमे के ज़रीए अपने मक़्सूद को अदा कर सकता है लेकिन इस के बा वुजूद दो कलिमे कहता है तो दूसरा कलिमा फ़ुज़ूल या'नी ह़ाजत से ज़ाइद होगा और येह भी मज़मूम (व ना पसन्दीदा) है। (احیاء العلوم، 3/345، 348)

बुज़ुर्गाने दीन का अन्दाज़ : बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त फ़रमाते और फ़ुज़ूल बातों से बचते थे : ❁ सय्यिदुना मन्सूर बिन मो'तमिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने चालीस साल तक इ़शा के बा'द गुफ़्तगू न की। ❁ सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ैसम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बीस (20) साल तक दुन्यावी गुफ़्तगू न की, जब सुब्ह़ होती तो दवात, काग़ज़ और क़लम रखते और जो गुफ़्तगू भी करते उसे लिख लेते, फिर शाम के वक़्त अपने नफ़्स का मुह़ासबा करते। (احیاء العلوم، 3/340)

फ़ुज़ूल जुम्लों की चन्द मिसालें : हां भई क्या हो रहा है ? यार ! बिजली की लोडशेडिंग बहुत बढ़ गई है, आज गर्मी बहुत है, गाड़ी कितने में ख़रीदी ? न जाने ट्रेफ़िक कब खुलेगी ! आप के शहर में महंगाई बहुत ज़ियादा है, आप के अ़लाक़े में मकान का क्या भाव चल रहा है ? वग़ैरा (जब कि इन बातों का कोई सह़ीह़ मक़्सद न हो)

फ़ुज़ूल बातों से बचने का आसान इ़लाज : फ़ुज़ूल बात मुंह से निकल जाने की सूरत में बतौ़रे कफ़्फ़ारा 12 बार **अल्लाह अल्लाह** कह लिया करें या एक बार दुरूद शरीफ़ ही पढ़ लें, इस त़रह़ करने से हो सकता है शैत़ान हमें इस ख़ौफ़ से फ़ुज़ूल बातें करने पर न उभारे कि येह लोग कहीं ज़िक्रो दुरूद का विर्द कर के मुझे परेशानी में न डाल दें। लिख कर या इशारों में बात करना भी मुफ़ीद है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे
मेरी फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकाल दो

लोहा नर्म हो जाता....!

मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

शैखे त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइद, इबादात और मुआ़मलात पर इस्लामी भाइयों के सुवालात के जवाबात बड़े ही दिलचस्प और आसान अन्दाज़ में अ़त़ा फ़रमाते हैं, इन में से चन्द सुवालात व जवाबात यहां दर्ज किये जा रहे हैं।

सुवाल : किस नबी عَلَيْهِ السَّلَام ने लोहे का काम किया है ? नीज़ क्या हम येह काम उन की सुन्नत की अदाएगी की निय्यत से कर सकते हैं ?

जवाब : ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने लोहे का काम किया है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें येह मो'जिज़ा अ़त़ा फ़रमाया था कि आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब लोहे को अपने दस्ते मुबारक में लेते तो वोह मोम की त़रह़ नर्म हो जाता था जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 422 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "अ़जाइबुल कुरआन मअ़ ग़राइबुल कुरआन" सफ़ह़ा 63 पर है : "ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام बा वुजूद येह कि एक अ़ज़ीम सल्त़नत के बादशाह थे मगर सारी उ़म्र वोह अपने हाथ की दस्तकारी की कमाई से अपने ख़ुर्दो नोश का सामान करते रहे। **अल्लाह** तआ़ला ने आप को येह मो'जिज़ा अ़त़ा फ़रमाया था कि आप लोहे को हाथ में लेते तो वोह मोम की त़रह़ नर्म हो जाया करता था और आप उस से ज़िर्हें बनाया करते थे और इन को फ़रोख़्त कर के उस रक़म को अपना ज़रीअ़ए मआ़श बनाए हुवे थे और **अल्लाह** तआ़ला ने आप को परन्दों की बोली सिखा दी थी।"

फ़ी ज़माना लोहे को भट्टी के ज़रीए़ गर्म कर के नर्म किया जाता है तो यूं भट्टी चलाते वक़्त सुन्नत की अदाएगी की निय्यत का येह मौक़अ़ मह़ले नज़र नहीं आता और न ही इस त़रीक़े के मुत़ाबिक़ इस का सुन्नत होना कहीं पढ़ा है क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तो बिग़ैर भट्टी के अपने हाथों से ही लोहे को नर्म कर के ज़िर्हें बना लिया करते थे।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

च्यूटियों को भगाने का नुस्ख़ा !

सुवाल : च्यूंटियां घरों में उ़मूमन खाने पीने की अश्या में घुस कर चीज़ों को ख़राब कर देती हैं और काटती भी हैं तो क्या उन्हें मारना जाइज़ है ? नीज़ उन्हें भगाने का नुस्ख़ा भी इरशाद फ़रमा दीजिये।

जवाब : च्यूंटियां भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करती हैं इन्हें बिला वज्ह नहीं मारना चाहिये। हां ! अगर काटती हों तो अपने से ज़रर दूर करने के लिये इन्हें मार सकते हैं। अलबत्ता जहां मारने के बजाए हटाने से काम चल सकता हो तो फिर इन्हें न मारा जाए मसलन अगर कपड़ों या बदन वग़ैरा पर चढ़ गईं तो कपड़े को झाड़ने या फूंक मारने के ज़रीए भी इन्हें दूर किया जा सकता है। येह बहुत ही नाज़ुक होती हैं, बा'ज़ लोग इन्हें बड़ी बे दर्दी के साथ पकड़ते या बिला वज्ह झाड़ू वग़ैरा से हटाते हैं जिस से येह फ़ौरन मर जाती हैं या फिर सख़्त ज़ख़्मी हो कर तड़पती रहती हैं ऐसा नहीं करना चाहिये।

जहां च्यूंटियां बहुत ज़ियादा आती हों तो उन्हें भगाने के लिये पन्सारी की दुकान से "हींग" ख़रीद कर वहां डाल दीजिये या इस की छोटी छोटी पोटलियां बना कर वहां रख दीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ च्यूंटियां भाग जाएंगी।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्लास्टिक के बरतनों में खाना पीना कैसा ?

सुवाल : आज कल उ़मूमन खाने पीने की अश्या को प्लास्टिक की थेली में रखा जाता है और प्लास्टिक के बरतन में खाना गर्म करना और खाना पीना आ़म है, माहिरीन का कहना है कि प्लास्टिक के अन्दर कुछ ख़त़रनाक केमीकल होते हैं जो गर्म होने पर खाने में शामिल हो जाते हैं जो कि सिह़्ह़त के लिये नुक़्सान देह होते हैं और बा'ज़ सूरतों में ख़त़रनाक बीमारियों का सबब भी बनते हैं, लिहाज़ा उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के लिये इस के मुतअ़ल्लिक़ कुछ ह़िक्मत भरी बातें बयान फ़रमा दीजिये ताकि हम इन नुक़्सानात से महफ़ूज़ रह सकें।

जवाब : साइन्सी तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ प्लास्टिक के बरतनों में बा'ज़ ख़त़रनाक केमीकल होते हैं यहां तक कि इन के इस्ति'माल से बा'ज़ अमवात भी हुई हैं। प्लास्टिक के बरतनों और थेलियों में गर्म ग़िज़ाएं मसलन चाए वग़ैरा डालने या प्लास्टिक के बरतन में रख कर माइक्रो वेव ओवन (Microwave Oven) में खाना वग़ैरा गर्म करने से प्लास्टिक में मौजूद केमीकल इन में शामिल हो जाते हैं और इन को इस्ति'माल करने की सूरत में येह केमीकल पेट में पहुंच जाते हैं जिस से बाल झड़ने, बांझपन (या'नी बे औलादी) गुर्दे की पथरी और गुर्दे के दीगर अमराज़, बद हज़मी, अल्सर, जिल्द या'नी स्किन की बीमारियां, दिल के अमराज़ ह़त्ता कि केन्सर हो जाने के इमकानात पैदा हो जाते हैं लिहाज़ा प्लास्टिक के बरतन इस्ति'माल करने के बजाए स्टील, शीशे, चीनी, मिट्टी और लकड़ी के बरतन इस्ति'माल कीजिये।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से तांबे-पीतल के बरतनों में खाना पीना साबित नहीं। मिट्टी या काठ (या'नी लकड़ी) के बरतन थे और पानी के लिये मशकीज़े भी। (फ़तावा रज़विय्या, 22/129) बा'ज़ रिवायात के मुत़ाबिक़ कांच के बरतन भी सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास थे। (سبل الهدى والرشاد، 7/361)

وَاللهُ اَعْلَمُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रोज़ाना एक सेब खाइये और ख़ुद को डॉक्टर से बचाइये

सुवाल : मौजूदा दवाएं बा'ज़ औक़ात मनफ़ी असरात भी रखती हैं, इन के मनफ़ी असरात से अपने आप को कैसे बचाया जाए ? नीज़ कहा जाता है कि "रोज़ाना एक सेब खाना डॉक्टर से दूर रखता है" येह कहां तक दुरुस्त है ?

जवाब : अगर मरज़ हल्का फुल्का हो तो ख़ुद को दवाओं का आ़दी बनाने के बजाए बिग़ैर अदवियात के काम चला लेना चाहिये क्यूंकि तक़रीबन तमाम ही अदवियात के ज़िमनी असरात (Side Effects) होते हैं और ख़ास कर "एन्टी बायोटिक" (Antibiotic) के ज़ियादा ज़िम्नी असरात (Side Effects) सुनने में आए हैं कि येह बीमारी के जरासीम को मारने के साथ साथ ज़रूरी जरासीम का भी ख़ातिमा कर देती है लिहाज़ा ज़रासे सर या जिस्मानी दर्द के लिये गोलियां (Tablets) न खाई जाएं कि येह गुर्दों को ख़त्म कर सकती हैं।

अदवियात के मनफ़ी असरात से बचने का एक ह़ल मैं ने त़िब की एक किताब में पढ़ा है कि जो "एन्टी बायोटिक" टेब्लेट खाएं तो इस के साथ दही इस्ति'माल करें तो येह दही इस के साइड इफ़ेक्ट का तोड़ करेगा। बहर ह़ाल दही भी सब को मुवाफ़िक़

आए येह भी ज़रूरी नहीं लिहाज़ा अपने त़बीब ही से रुजूअ़ किया जाए क्यूंकि बा'ज़ औक़ात त़बीब "एन्टी बायोटिक" टेब्लेट के साइट इफ़ेक्ट के तोड़ की भी टेब्लेट दे देते हैं।

रही बात "रोज़ाना एक सेब खाना डॉक्टर से दूर रखता है" तो येह एक मुह़ावरा है जो सेब के बहुत ज़ियादा फ़वाइद के पेशे नज़र बोला जाता है जिसे हम ज़माने से सुनते चले आ रहे हैं। रोज़ाना एक सेब खाना तो बीमारी से क्या बचाएगा, दर ह़क़ीक़त बीमारियों से बचाने वाली **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब की तमाम ज़ाहिरी बात़िनी बीमारियां दूर फ़रमा कर हमें सिह़्ह़त तन्दुरुस्ती और आ़फ़िय्यत वाली ज़िन्दगी नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पहाड़ों को ईमान का गवाह बनाना

सुवाल : क्या हम पहाड़ों को अपने ईमान का गवाह बना सकते हैं?

जवाब : जी हां। कलिमा पढ़ कर पहाड़ों, दरख़्तों, पथ्थरों, मिट्टी के ढेलों, रैत के ज़र्रों और बारिश के क़त़रों वग़ैरा को अपने ईमान का गवाह बना सकते हैं। इस ज़िम्न में सरकारे आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن का पहाड़ों को कलिमए शहादत पढ़ कर गवाह बनाने का वाक़िआ़ मुलाह़ज़ा कीजिये।

चुनान्चे, मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن जबलपुर के सफ़र में पहाड़ों की सैर के लिये जब तशरीफ़ ले गए तो कश्ती निहायत तेज़ जा रही थी, लोग आपस में मुख़्तलिफ़ बातें कर रहे थे, इस पर इरशाद फ़रमाया : "इन पहाड़ों को कलिमए शहादत पढ़ कर गवाह क्यूं नहीं कर लेते!" (फिर फ़रमाया :) एक साह़िब का मा'मूल था जब मस्जिद तशरीफ़ लाते तो सात ढेलों को जो बाहर मस्जिद के त़ाक़ में रखे थे अपने कलिमए शहादत का गवाह कर लिया करते, इसी त़रह़ जब वापस होते तो गवाह बना लेते। बा'दे इन्तिक़ाल मलाइका उन को जहन्नम की त़रफ़ ले चले, उन सातों ढेलों ने सात पहाड़ बन कर जहन्नम के सातों दरवाज़े बन्द कर दिये और कहा : "हम इस के कलिमए शहादत के गवाह हैं।" उन्हों ने नजात पाई। तो जब ढेले पहाड़ बन कर ह़ाइल हो गए तो येह तो पहाड़ हैं। ह़दीस में है : "शाम को एक पहाड़ दूसरे से पूछता है : क्या तेरे पास आज कोई ऐसा गुज़रा जिस ने ज़िक्रे इलाही किया? वोह कहता है : न। येह कहता है : मेरे पास तो ऐसा शख़्स गुज़रा जिस ने ज़िक्रे इलाही किया। वोह समझता है कि आज मुझ पर (उसे) फ़ज़ीलत है।" येह (फ़ज़ीलत) सुनते ही सब लोग बा आवाज़े बुलन्द कलिमए शहादत पढ़ने लगे, मुसलमानों की ज़बान से कलिमा शरीफ़ की सदा बुलन्द हो कर पहाड़ों में गूंज गई। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 313, 314)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम वासित़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक बार ह़ज के मौक़अ़ पर मैदाने अ़रफ़ात में सात कंकर हाथ में उठाए और उन से फ़रमाया : ऐ कंकरो! तुम गवाह हो जाओ कि मैं कहता हूं "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ" तर्जमा : **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) उस के बन्दए ख़ास और रसूल हैं। फिर जब सोए तो ख़्वाब में देखा कि मह़शर बरपा है और ह़िसाब किताब हो रहा है, इन से भी ह़िसाब लिया जाता है और हुक्मे दोज़ख़ सुनाया जाता है, अब फ़िरिश्ते सूए जहन्नम लिये जा रहे हैं जब जहन्नम के दरवाज़े पर पहुंचते हैं तो उन सात कंकरों

में से एक कंकर दरवाज़े पर आ कर रोक बन जाता है फिर दूसरे दरवाज़े पर पहुंचे तो दूसरा कंकर इसी त़रह दरवाज़े के आगे आ गया, यूं ही जहन्नम के सातों दरवाज़ों पर हुवा फिर मलाइका अ़र्शे मुअ़ल्ला पर ले कर ह़ाज़िर हुवे। **अल्लाह** तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया : ऐ इब्राहीम ! तू ने कंकरों को अपने ईमान पर गवाह रखा तो इन बे जान पथ्थरों ने तेरा ह़क़ ज़ाएअ़ न किया तो मैं तेरी गवाही का ह़क़ कैसे ज़ाएअ़ कर सकता हूं ? फिर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने फ़रमान जारी किया कि इसे जन्नत की त़रफ़ ले जाओ चुनान्चे, जब जन्नत की त़रफ़ ले जाया गया तो जन्नत का दरवाज़ा बन्द पाया, कलिमए पाक की गवाही आई और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ जन्नत में दाख़िल हो गए। (دُرۃ الناصحین ص37)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

गाड़ियों को सजाना और चमकाना

सुवाल : आज कल बहुत से लोग अपने आप से भी ज़ियादा अपनी गाड़ियों (मोटर साईकल, रिक्शा, कार और बस वग़ैरा) को सजाते बल्कि दुल्हन बनाते नज़र आते हैं तो क्या गाड़ियों को इस त़रह़ सजाने के लिये पैसा ख़र्च करना इसराफ़ नहीं ?

जवाब : अपनी गाड़ियों (मोटर साईकल, रिक्शा, कार और बस वग़ैरा) को सजाने और चमकाने में कोई ह़रज नहीं जब कि निय्यत अच्छी हो, लोग अपने घरों, दुकानों और मह़ल्लों को भी तो सजाते हैं। हां ! अगर लोगों को नीचा दिखाने और अपनी वाह वाह करवाने की निय्यत से हो तो इस सूरत में फ़ख़्र व रिया की वज्ह से मन्अ़ है। इसी त़रह़ अगर जानदारों की तसावीर बना कर ज़ीनत व सजावट की तो येह ज़ीनत ह़राम है लिहाज़ा अच्छी निय्यत से जाइज़ ज़ेबो ज़ीनत का एहतिमाम किया जाए जैसा कि तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के सौ फ़ीसद इस्लामी **"मदनी चैनल"** में अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ पेना फ़्लेक्स (Panaflex) के ज़रीए जाइज़ और मुबाह़ ज़ैबाइश व आराइश का एहतिमाम किया जाता है ताकि "मदनी चैनल" देखने वालों का रुजह़ान बढ़े और वोह ज़ियादा से ज़ियादा इस से फ़ैज़याब हो सकें।

ज़ाहिरी सजावट के साथ साथ बात़िनी सजावट मसलन ब्रेक, एन्जिन और ऑइल वग़ैरा येह चीज़ें भी ज़रूर देख लेनी चाहिये। उ़मूमन जो लोग ज़ाहिरी सजावट का इतना एहतिमाम करते हैं वोह इन चीज़ों का भी ख़याल रखते हैं और बड़ी एह़तियात़ के साथ गाड़ी चलाते हैं ताकि कहीं टकरा न जाए या किसी ख़राबी के बाइ़स उलट न जाए। बहर ह़ाल जाइज़ ज़ेबो ज़ीनत जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों के लिये ह़लाल फ़रमाई है उस के करने में कोई मुज़ायक़ा नहीं चाहे वोह लिबास हो या और कोई सामाने ज़ीनत। अलबत्ता मेरा अपना ज़ेह्न सादगी का है क्यूंकि मेरे मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सादगी पसन्द थी और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सादगी का येह आ़लम था कि चटाई पर आराम फ़रमा लेते, कभी ख़ाक ही पर सो जाते और अपने हाथ मुबारक का सिरहाना बना लेते।

है चटाई का बिछौना कभी ख़ाक ही पे सोना
कभी हाथ का सिरहाना मदनी मदीने वाले
तेरी सादगी पे लाखों तेरी आ़जिज़ी पे लाखों
हो सलामे आ़जिज़ाना मदनी मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام और समझदार च्यूंटी

मुहम्मद आसिफ़ इक़बाल अ़त्तारी मदनी

एक मरतबा **अल्लाह** तआ़ला के नबी हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام बहुत बड़ा लश्कर ले कर एक वादी से गुज़रे जहां बहुत ज़ियादा च्यूंटियां थीं, लश्कर को देख कर च्यूंटियों की मलिका ने तमाम च्यूंटियों से कहा : ऐ च्यूंटियों ! तुम सब अपने घरों में चली जाओ कहीं हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام और उन का लश्कर तुम्हें बे ख़बरी में कुचल न दे। "समझदार च्यूंटी" की येह बात हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने तीन (3) मील दूर से सुन ली और मुस्कुरा कर अपने लश्कर को रोक दिया ताकि च्यूंटियां अपने घरों में दाख़िल हो जाएं। **अल्लाह** तआ़ला ने इस वाक़िए़ को क़ुरआने मजीद में इस त़रह़ बयान फ़रमाया है :

﴿حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ یّٰۤاَیُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا یَحْطِمَنَّكُمْ سُلَیْمٰنُ وَ جُنُوْدُهٗ ۙ وَ هُمْ لَا یَشْعُرُوْنَ ۝ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا﴾ (پ۱۹، النمل:۱۸، ۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : यहां तक कि जब च्यूंटियों के नाले पर आए, एक च्यूंटी बोली : ऐ च्यूंटियो ! अपने घरों में चली जाओ तुम्हें कुचल न डालें सुलैमान और उन के लश्कर बे ख़बरी में, तो उस की बात से मुस्कुरा कर हंसा।

प्यारे मदनी मुन्नो और मदनी मुन्नियो ! इस सच्ची कहानी से हमें बहुत सी प्यारी प्यारी बातें पता चलीं। पहली बात येह कि तीन मील दूर से च्यूंटी की इतनी हल्की आवाज़ को सुन लेना **अल्लाह** तआ़ला के नबी हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का मो'जिज़ा है और **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से **अल्लाह** तआ़ला के नबियों और वलियों की सुनने और देखने की त़ाक़त आ़म लोगों की सुनने और देखने की त़ाक़त से बहुत ज़ियादा हुवा करती है। आप ग़ौर कीजिये कि जब हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की सुनने की क़ुव्वत इतनी है तो फिर तमाम नबियों के सरदार और सब से अफ़्ज़ल हमारे प्यारे आक़ा हज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुनने और देखने की त़ाक़त का आ़लम क्या होगा !

दूसरी बात येह पता चली कि एक च्यूंटी भी जानती है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी किसी पर ज़ुल्मो ज़ियादती नहीं करते इस लिये उस ने दूसरी च्यूंटियों से कहा कि "अपने घरों में चली जाओ वरना बे ख़बरी में हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का लश्कर तुम्हें कुचल न दे।" क्यूंकि जान बूझ कर तो वोह ऐसा हरगिज़ नहीं करेंगे। लिहाज़ा हमें भी बे ज़बान जानवरों पर रह़्म करना चाहिये। तीसरी बात येह मा'लूम हुई कि च्यूंटियों और इस जैसे दूसरे नुक़्सान न देने वाले कीड़ों को बिला वज्ह मारना और इन पर ज़ुल्म नहीं करना चाहिये। एक बार बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه वोश बेसिन (Wash Basin) पर हाथ धोने के लिये पहुंचे मगर रुक गए, फिर फ़रमाया कि वोश बेसिन में चन्द च्यूंटियां रेंग रही हैं, अगर मैं ने हाथ धोए तो येह बह कर मर जाएंगी, लिहाज़ा कुछ देर इन्तिज़ार फ़रमाने के बा'द च्यूंटियां आगे पीछे हो गईं तो फिर आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने हाथ धोए।

प्यारे मदनी मुन्नो और मदनी मुन्नियो ! येह बातें हमेशा याद रखिये कि जो जानवर तक्लीफ़ नहीं पहुंचाते उन्हें मारना नहीं चाहिये। गली कूंचों में बैठे हुवे कुत्तों या घूमती फिरती हुई बिल्लियों को बिला वज्ह पथ्थर न मारिये, और न ही उन के गले में रस्सी डाल कर उन्हें इधर उधर खींचिये येह उन बेचारों पर ज़ुल्म है। यूं ही ख़्वाह म ख़्वाह च्यूंटियों को न मारिये। जिन जानवरों से तक्लीफ़ पहुंचने का ख़त़रा हो उन से दूर रहिये। छिपकली और गिरगिट वग़ैरा को मार सकते हैं बल्कि इन को मारने पर सवाब भी मिलता है और यूं ही चूहों को भी मार सकते हैं क्यूंकि येह नुक़्सान पहुंचाते हैं, कपड़े और दूसरी चीज़ों को कुतर कर ख़राब कर देते हैं।

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

रस्मो रवाज

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दा'वते इस्लामी) मुसलमानों की शरई रहनुमाई में मसरूफ़े अ़मल है, तहरीरन, ज़बानी, फ़ोन और दीगर ज़राएअ़ से मुल्क व बैरूने मुल्क से हज़ारहा मुसलमान हर माह शरई मसाइल दरयाफ़्त करते हैं, जिन में से एक मुन्तख़ब फ़तावा ज़ैल में दर्ज किया जा रहा है।

शादी में दिये जाने वाले न्योता का हुक्म

क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि हमारे ख़ानदान में वलीमा वग़ैरा दा'वतों के मौक़अ़ पर कुछ न कुछ पैसे दिये जाते हैं और निय्यत येह होती है कि जब हमारे हां शादी वग़ैरा होगी तो येह कुछ ज़ियादती के साथ हमें मिल जाएंगे मसलन 1000 हम ने दिया है तो येह 1500 देंगे और हम अगली बार इस से भी कुछ ज़ियादा देंगे, येह बा क़ाइदा रजिस्टर पर लिखा भी जाता है, अगर बिल्कुल ही वोह न दे तो नाराज़ी का इज़हार और बुरा भला भी कहा जाता है। दरयाफ़्त त़लब अम्र (पूछने की बात) येह है कि मज़कूरा सूरते ह़ाल में पहले कम पैसे देना फिर ज़ियादा पैसे लेना और बिल्कुल ही न दें तो नाराज़ी का इज़हार करना शरअ़न जाइज़ है या ना जाइज़ ?

साइल मुह़म्मद सईद अ़त्तारी (मुदर्रिस कोर्स, सदर बाबुल मदीना कराची)

بسم اللہ الرحمن الرحیم الجواب بعون الملک الوھاب

اللھم ھدایۃ الحق والصواب

शादी और दीगर मवाक़ेअ़ पर जो रक़म दी जाती है इस की दो सूरतें हैं : (1) जहां बिरादरी निज़ाम है और वोह इस रक़म को बा क़ाइदा लिखते हैं कि किस ने कितना दिया है फिर जब देने वाले के घर कोई दा'वत होती है तो येह उस से कुछ ज़ियादा रक़म देता है, येह भी इस रक़म को लिखता है। इस रक़म का हुक्म येह है कि येह लेना जाइज़ है मगर इस पर सवाब नहीं मिलता और न ही इस में बरकत होती है अलबत्ता इस रक़म का वापस करना फ़र्ज़ है और इस सूरत में जिस ने बिग़ैर किसी उ़ज़्रे शरई के वोह रक़म वापस नहीं की, उस से नाराज़ी का इज़हार करना और उसे बुरा भला कहना जाइज़ व दुरुस्त है। (2) जहां बिरादरी निज़ाम नहीं है या ग़ैर बिरादरी के लोग अ़क़ीदत या दोस्ती या ख़ैर ख़्वाही की निय्यत से देते हैं तो बिला इजाज़ते शरई उस का मुत़ालबा करना या न देने पर नाराज़ होना, इस पर त़ा'नो तशनीअ़ करना (बुरा भला कहना) ग़लत़ व बात़िल है। मज़कूरा हुक्म की वज्ह येह है कि जहां बिरादरी निज़ाम में इसे लिख कर रखते हैं वहां येह रक़म दूसरे शख़्स पर क़र्ज़ होती है, फिर जब वोह इस रक़म को लौटाता है तो इस पर मज़ीद कुछ क़र्ज़ चढ़ा देता है मसलन येह 1000 रूपे दे कर आया था तो वोह उसे 1500 देता है जिस में 1000 के ज़रीए़ क़र्ज़ से सुबुक दोश होता है और बाक़ी 500 उस पर मज़ीद क़र्ज़ हो जाते हैं और येह सिलसिला इसी त़रह़ चलता रहता है। चूंकि येह रक़म लेने वाले पर क़र्ज़ है इस लिये इस की अदाएगी करना फ़र्ज़ है और अगर येह बिला इजाज़ते शरई अदाएगी में कोताही करेगा तो इस पर इज़हारे नाराज़ी व मुत़ालबे में सख़्ती फ़ी नफ़्सिही (बज़ाते ख़ुद) जाइज़ लेकिन उ़र्फ़न मा'यूब (बुरा) और उ़मूमन दूसरे कसीर गुनाहों मसलन क़त़ए़ रेह़्मी (रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ तोड़ देना) वग़ैरा का ज़रीआ़ बनती है।

और जहां बिरादरी सिस्टम नहीं या ग़ैर बिरादरी के लोग अ़क़ीदत या दोस्ती में देते हैं वहां येह रक़म हदिया व तोह़्फ़ा होती है और इस के तमाम अह़काम यहां भी जारी होंगे लिहाज़ा मसलन किसी ने 1000 रूपे दिये और उस ने ले कर ख़र्च कर लिये तो अब देने वाला इस रक़म का

मुत़ालबा नहीं कर सकता और जब लेने वाले पर वापस करना ही ज़रूरी नहीं तो न देने की वज्ह से उस पर इज़हारे नाराज़ी और त़ा'नो तशनीअ़ करना बहुत क़बीह़ (बुरा) और बुरी ह़रकत है जिस से बचना ज़रूरी है। बहर सूरत (हर ह़ाल में) होना येह चाहिये कि इस रस्म को ख़त्म किया जाए और सिर्फ़ रिज़ाए इलाही पाने के लिये जिस के हां दा'वत हो उसे रक़म वग़ैरा दी जाए ताकि हमें इस पर सवाब भी मिले और बरकत भी। और जो येह चाहते हों कि हम इस क़र्ज़ से बच जाएं उन्हें चाहिये कि इब्तिदा में ही लोगों से कह दे कि मैं क़र्ज़ लेना नहीं चाहता, अगर मुझ से मुमकिन हुवा तो मैं भी देने वाले की तक़रीब में कुछ ख़र्च कर दूंगा। इस त़रह़ जो रक़म मिलेगी वोह क़र्ज़ नहीं, तोह़फ़ा होगी और बा'द में वापस न भी की तो उस पर कोई मुवाख़ज़ा (पकड़) नहीं। **अल्लाह** तआ़ला कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَمَاۤ اٰتَیْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّیَرْبُوَا۟ فِیْۤ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا یَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम जो चीज़ ज़ियादा लेने को दो कि देने वाले के माल बढ़ें तो वोह **अल्लाह** के यहां न बढ़ेगी। (پارہ 21، سورۃ الروم، آیت 39) इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "लोगों का दस्तूर था कि वोह दोस्त अह़बाब और आश्नाओं (जानने वालों) को या और किसी शख़्स को इस निय्यत से हदिया देते थे कि वोह उन्हें इस से ज़ियादा देगा, येह जाइज़ तो है लेकिन इस पर सवाब न मिलेगा और इस में बरकत न होगी क्यूंकि येह अ़मल ख़ालिसन लिल्लाहि तआ़ला (**अल्लाह** की रिज़ा के लिये) नहीं हुवा।" (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, सफ़ह़ा. 754, मक्तबतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची)

अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : फ़तावा ख़ैरिया में है : शादियों वग़ैरा में एक शख़्स जो चीज़ें दूसरे को भेजता है, उस के बारे में सुवाल हुवा कि क्या इन का हुक्म क़र्ज़ की त़रह़ है और इसे अदा करना लाज़िम है या नहीं ? जवाब इरशाद फ़रमाया : अगर उ़र्फ़ येह हो कि लोग बदल के त़ौर पर देते हैं तो अदाएगी लाज़िम है, अगर दी जाने वाली चीज़ मिस्ली है तो इस की मिस्ल लौटाए और क़ीमती है तो क़ीमत वापस करे। और अगर उ़र्फ़ इस के ख़िलाफ़ हो और देने वाले येह चीज़ें बत़ौरे तोह़फ़ा देते हों नीज़ इस के बदले में मिलने वाली चीज़ की त़रफ़ इन की नज़र न होती हो तो येह तमाम अह़काम में हिबा (तोह़फ़े के त़ौर पर दी गई चीज़) की त़रह़ है लिहाज़ा इस चीज़ के हलाक होने या इस को हलाक करने के बा'द रुजूअ़ नहीं हो सकेगा (या'नी इसे वापस नहीं लौटाया जा सकेगा)। और इस मुआ़मले में अस्ल येह है कि जो मा'हूद (ज़ेह्न में त़ै) होता है वोह मशरूत़ की त़रह़ ही होता है। मैं कहता हूं कि येह उ़र्फ़ हमारे शहरों में भी पाया जाता है, हां बा'ज़ अ़लाक़ों में लोग इसे क़र्ज़ शुमार करते हैं यहां तक कि हर दा'वत में वोह एक लिखने वाले को बुलाते हैं जो उन्हें मिलने वाली चीज़ें लिखता है और जब देने वाला कोई दा'वत करता है तो वोह उसी लिखे हुवे की त़रफ़ मराजेअ़त करता (देखता) है और पहला दूसरे को इसी त़रह़ की चीज़ देता है जैसी उस ने दी थी। (ردالمحتار، کتاب الہبۃ، جلد8، صفحہ 583، کوئٹہ) सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "न्योता वुसूल करना शरअ़न जाइज़ है और देना ज़रूरी है कि वोह क़र्ज़ है।" (फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 23, सफ़ह़ा 268, रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कज़ुल औलिया लाहौर) एक और मक़ाम पर आप इस की वज़ाह़त यूं फ़रमाते हैं : "अब जो न्योता जाता है वोह क़र्ज़ है, इस का अदा करना लाज़िम है, अगर रह गया तो मुत़ालबा रहेगा और बे इस के मुआ़फ़ किये मुआ़फ़ न होगा والمسئلۃ فی الفتاوی الخیریۃ (और येह मस्अला फ़तावा ख़ैरिया में है।) चारए कार (बचने की सूरत) येह है कि लाने वालों से पहले साफ़ कह दे कि जो साह़िब बत़ौरे इमदाद इनायत फ़रमाएं, मुज़ाइक़ा नहीं मुझ से मुमकिन हुवा तो उन की तक़रीब में इमदाद करूंगा लेकिन मैं क़र्ज़ लेना नहीं चाहता, इस के बा'द जो शख़्स देगा वोह उस के ज़िम्मे क़र्ज़ न होगा हदिया है जिस का बदला हो गया फ़बिहा, न हुवा तो मुत़ालबा नहीं।" (फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 23,

सफ़्हा 586, रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कजुल औलिया लाहौर) सय्यिदी आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن क़र्ज़ की वुसूली के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : "क़र्ज़े हसना दे कर मांगने की मुमानअ़त नहीं, हां मांगने में बेजा सख़्ती न हो : ﴿وَاِنْ كَانَ ذُوْعُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर क़र्ज़दार तंगी वाला है तो उसे मोहलत दो आसानी तक।) और अगर मदयून मक़रूज़) नादार (मुफ़्लिस) है जब तो उसे मोहलत देना फ़र्ज़ है यहां तक कि उस का हाथ पहुंचे और जो दे सकता है और बिला वज्ह लैत व ला'ल (टाल मटोल) करे वोह ज़ालिम है और इस पर तशनीअ़ व मलामत (बुरा भला कहना) जाइज़।

قَالَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَطْلُ الْغَنِيِّ ظُلْمٌ وَلَيُّ الْوَاجِدِ يَحِلُّ مَالُهُ وَعِرْضُهُ

(**तर्जमा :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ग़नी का (अदाए क़र्ज़ में) टालम टोल करना ज़ुल्म है और माल होते हुवे टालम टोल करना उस के माल और उस की इ़ज़्ज़त को ह़लाल कर देता है।) (फ़तावा रज़विय्या, जिल्द, 23, सफ़्हा 585-586, रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कजुल औलिया लाहौर)

सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "शादी वग़ैरा तमाम तक़रीबात में त़रह़ त़रह़ की चीज़ें भेजी जाती हैं इस के मुतअ़ल्लिक़ हिन्दुस्तान में मुख़्तलिफ़ क़िस्म की रस्में हैं, हर शहर में हर क़ौम में जुदा जुदा रुसूम हैं, इन के मुतअ़ल्लिक़ हदिया और हिबा का हुक्म है या क़र्ज़ का। उ़मूमन रवाज से जो बात साबित होती है वोह येह है कि देने वाले येह चीज़ें बत़ौरे क़र्ज़ देते हैं इसी वज्ह से शादियों में और हर तक़रीब में जब रूपे दिये जाते हैं तो हर एक शख़्स का नाम और रक़म तह़रीर कर लेते हैं जब उस देने वाले के यहां तक़रीब होती है तो येह शख़्स जिस के यहां दिया जा चुका है फ़ेह़रिस्त निकालता है और उतने रूपे ज़रूर देता है जो उस ने दिये थे और इसके ख़िलाफ़ करने में सख़्त बद नामी होती है और मौक़अ़ पा कर कहते भी हैं कि न्योते का रूपिया नहीं दिया अगर येह क़र्ज़ न समझते होते तो ऐसा उ़र्फ़ न होता जो उ़मूमन हिन्दुस्तान में है।" (बहारे शरीअ़त, जिल्द 3, सफ़्हा 79, मक्तबतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "न्योता भी बहुत बुरी रस्म है जो ग़ालिबन दूसरी क़ौमों से हम ने सीखी है इस में ख़राबी येह है कि येह झगड़े और लड़ाई की जड़ है वोह इस त़रह़ कि फ़र्ज़ करो कि हम ने किसी के घर चार मौक़ओं पर दो दो रूपे दिये हैं तो हम भी ह़िसाब लगाते रहते हैं और वोह भी जिस को येह रूपिया पहुंचा। अब हमारे घर कोई ख़ुशी का मौक़अ़ आया हम ने उस को बुलाया तो हमारी पूरी निय्यत येह होती है कि वोह शख़्स कम अज़ कम दस रूपे हमारे घर दे ताकि आठ रूपे अदा हो जाएं और दो रूपे हम पर चढ़ जाएं इधर उस को भी येह ही ख़याल है कि अगर मेरे पास इतनी रक़म हो तो मैं वहां दा'वत खाने जाऊं वरना न जाऊं, अब अगर उस के पास उस वक़्त रूपिया नहीं तो वोह शर्मिन्दगी की वज्ह से आता ही नहीं और अगर आया तो दो चार रूपे दे गया। बहर ह़ाल इधर से शिकायत पैदा हुई, त़ा'ने बाज़ियां हुईं, दिल बिगड़े। बा'ज़ लोग तो क़र्ज़ ले कर न्योता अदा करते हैं।" (इस्लामी ज़िन्दगी, सफ़्हा 25, मक्तबतुल मदीना कराची)

मुफ़्ती मुह़म्मद वक़ारुद्दीन क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जिन लोगों में बिरादरी निज़ाम है उन में न्योता क़र्ज़ ही शुमार किया जाता है, वोह लिख कर रखते हैं, किस ने कितना दिया है, उस के यहां शादी होने की सूरत में उतना ही वापस करते हैं, इन बिरादरियों में न्योता क़र्ज़ ही समझा जाता है और जिन बिरादरियों में ऐसा कोई बिरादरी का क़ानून नहीं है या ग़ैर बिरादरी के लोग दोस्ती, तअ़ल्लुक़ात और अ़क़ीदत की वज्ह से शादी में कुछ देते हैं वोह हदिया है।" (वक़ारुल फ़तावा, जिल्द 3, सफ़्हा 117, बज़्मे वक़ारुद्दीन, बाबुल मदीना कराची) وَاللهُ اَعْلَمُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

कतबा मुह़म्मद क़ासिम अल क़ादिरी

23 जुल क़ा'दतुल ह़राम 1437 हिजरी / 27 अगस्त 2016 ईसवी

इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :

(1) आ'ला ह़ज़रत के "अक़ूल" पर हमारी उ़क़ूल क़ुरबान, इन का अक़ूल हमें क़बूल। (तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 63)

(2) उ़लमा के क़दमों से हटे तो भटक जाओगे। (तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 57)

(3) उ़लमा को हमारी नहीं बल्कि हमें उ़लमा की ज़रूरत है। (तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 57)

साहिबे इल्मो हिक्मत
हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

अबू उ़बैद अ़त्तारी मदनी

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिन ख़ुश नसीबों पर फ़हमो फ़िरासत के दरवाज़े खोले और जिन की ज़बान पर इल्मो हिक्मत के चश्मे जारी किये उन ख़ुश बख़्तों में एक नाम आ़लिमे बे मिसाल, क़ारिये बा कमाल, आ़बिदे बा इख़्लास, मश्हूर सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अस्ल नाम उ़वैमर और कुन्यत अबू दरदा है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़र्दी माइल ख़िज़ाब इस्ति'माल फ़रमाते, सर मुबारक पर टोपी पहनते और इस पर इ़मामा शरीफ़ का ताज सजाते थे जब कि शिम्ला मुबारका दोनों कन्धों के दरमियान पुश्त पर रखते थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पहले तिजारत किया करते थे, लेकिन इ़बादत के ज़ौक़ और ह़िसाब की शिद्दत के ख़ौफ़ से तिजारत तर्क कर के यादे इलाही में मसरूफ़ हो गए।

(معرفۃ الصحابۃ لابی نعیم، 3/475، 476، بیروت)

गर्म लिह़ाफ़ क्यूं नहीं भिजवाया ?

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूरी ज़िन्दगी निहायत सादगी और बे सरोसामानी के आ़लम में गुज़ार दी, एक मरतबा मौसिमे सर्मा में चन्द लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मेहमान बने, रात हुई तो आप ने खाना भिजवा दिया मगर लिह़ाफ़ न भिजवा सके। अगले दिन वोह लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास शिकायत करने पहुंचे तो देखा कि आप और आप की अहलिया मोह़तरमा के पास सर्दी से बचाव के लिये लिह़ाफ़ तो क्या गर्म लिबास भी नहीं है, उन के चेहरे पर ज़ाहिर होने वाली नागवारी को ह़ैरत में बदलते देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : हमारा एक अस्ली घर है जो भी सामान जम्अ़ होता है उसे हम वहां भिजवा देते हैं, आख़िरकार हमें उसी (आख़िरत) की जानिब लौट कर जाना है। (صفۃ الصفوۃ، 1/324 ملخصاً، بیروت)

इल्मे दीन सिखाया करते थे

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इल्मे दीन की नूरानी मजलिस सजाते हुवे इल्म के त़लबगारों को शरई मसाइल बताते और क़ुरआने पाक सह़ीह़ तलफ़्फ़ुज़ और दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ना सिखाते थे, चुनान्चे, रोज़ाना सुब्ह़ आप मस्जिद में तशरीफ़ लाते और इस नूरानी मजलिस को यूं सजाते कि हर दस अफ़राद पर एक ह़ल्क़ा बनाते और इस पर एक निगरान मुक़र्रर कर देते जो उन्हें पढ़ाता रहता, इस दौरान आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े रहते अगर किसी को कोई बात समझ न आती तो वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछ लिया करता और तशफ़्फ़ी भर जवाब पाता, कभी ऐसा होता कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ुरआने पाक की तिलावत फ़रमाते और निगरान इर्द गिर्द बैठ कर कलिमाते मुबारका को बग़ौर सुनते रहते, फिर अपने ह़ल्क़ों की जानिब लौट जाते और

जो कुछ सीखते वोह दूसरों को सिखाना शुरूअ़ कर देते। जब येह नूरानी मजलिस ख़त्म होती तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पूछते कि किसी के हां कोई दा'वत वग़ैरा तो नहीं है ? अगर जवाब "हां" में आता तो वहां तशरीफ़ ले जाते, वरना रोज़े की निय्यत कर लेते और इरशाद फ़रमाते कि "मेरा रोज़ा है" ह़ालांकि तमाम ह़ल्क़ों का इन्तिज़ाम ब ख़ूबी संभाला करते थे। एक मरतबा शुरकाए मजलिस को शुमार किया गया तो वोह सतरह सौ से ज़ाइद थे। (تاریخ ابن عساکر، 1/328، بیروت)

जानवरों पर शफ़्क़त

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जानवरों पर ह़द से ज़ियादा बोझ डालने को नापसन्द फ़रमाते थे चुनान्चे, जब कोई आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ऊंट उधार ले जाना चाहता तो फ़रमाते : इस पर ज़ियादा बोझ न डालना क्यूंकि येह इस की त़ाक़त नहीं रखता, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो ऊंट की जानिब तवज्जोह की और फ़रमाया : कल बरोज़े क़ियामत बारगाहे इलाही में मुझ से पूछगछ न करना क्यूंकि मैं ने तेरी त़ाक़त से ज़ियादा तुझ पर बोझ नहीं डाला।

(تاریخ ابن عساکر، 47/185، بیروت)

ह़कीमुल उम्मत थे

ह़दीसे मुबारका में है कि मेरी उम्मत के ह़कीम उ़वैमर (अबू दरदा) हैं। (مسند شامیین، 2/88، بیروت) येही वज्ह है कि आप का कलाम ह़िक्मत व दानाई से भरपूर है। एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! ख़ुशह़ाली के अय्याम में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को याद करो ताकि वोह तंगी व मुसीबत में तुम्हारी दुआओं को क़बूल फ़रमाए। (الزھد للامام احمد، ص160، رقم:718، مصر)

दुन्या से रुख़्सती

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सिने 32 हिजरी ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में इस जहाने फ़ानी से कूच फ़रमाया : आख़िरी लम्ह़ात में शदीद घबराहट त़ारी होने पर ज़ौजए मोह़तरमा ने वज्ह पूछी तो इरशाद फ़रमाया : मैं तो मौत को महबूब रखता हूं लेकिन मेरा नफ़्स इसे पसन्द नहीं करता, येह कह कर ज़ारो क़ित़ार रोने लगे, फिर ज़बान पर कलिमए त़य्यिबा का विर्द जारी रखा यहां तक कि अपनी जान जाने आफ़रीन के सिपुर्द कर दी। (اسد الغابۃ، 4/341، بیروت) आप से रिवायत कर्दा 179 अह़ादीसे त़य्यिबा आज भी कुतुबे अह़ादीस के रौशन सफ़ह़ात पर क़ीमती मोतियों की त़रह़ जगमगा रही हैं।

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن दुन्या भर में नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इ़ल्मे शरीअ़त को आ़म करने के लिये "दा'वते इस्लामी" की मुतअ़द्दिद मजालिस में से एक ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मजलिस "अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" भी है जो शबो रोज़ बसूरते तह़रीर ख़िदमते दीन के लिये कोशां है। ता दमे तह़रीर 388 कुतुबो रसाइल तर्जमा व तसनीफ़ और तख़रीज व तशरीह़ वग़ैरा से आरास्ता हो कर मन्ज़रे आ़म पर आ चुके हैं और 42 छपने के मुन्तज़िर हैं।

ह़ाल ही में छपने वाली कुतुब

(1) मा'रिफ़तिल क़ुरआन जिल्द सिवुम
(2) तल्ख़ीसुल मुफ़्ताह़
(3) दीवानुल मुतनब्बी

त़बाअ़त के लिये रवाना की गई कुतुबो रसाइल :

(1) दीनो दुन्या की अनोखी बातें
(2) दिलचस्प मा'लूमात
(3) खड़े हो कर पेशाब करने की मज़म्मत (पेम्फ़लेट)।

अह़कामे तिजारत

मुफ़्ती अबू मुह़म्मद अ़ली असग़र अ़त्तारी मदनी

गाहक सूट सीने के लिये दे जाए लेकिन वापस न आए, तो दर्ज़ी क्या करे ?

क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि मेरी दर्ज़ी की दुकान है। बा'ज़ औक़ात हमें गाहक सूट सिलाई करवाने के लिये दे कर चले जाते हैं फिर वापस लेने नहीं आते और इस त़रह़ दो-दो, तीन-तीन साल गुज़र जाते हैं। हमारे लिये शरीअ़त का क्या हुक्म है ? जब कि इस में हमारी मेह़नत भी है और अख़राजात भी !

الجواب بعون الملک الوھاب اللھم ھدایۃ الحق والصواب

पूछी गई सूरत में आप अजीरे मुश्तरिक[1] हैं और अजीरे मुश्तरिक के पास जो लोग काम ले कर आते हैं उस की शरई हैसिय्यत अमानत और वदीअ़त की है जिस का हुक्म येह है कि जब तक उस चीज़ का मालिक नहीं आता उस की ह़िफ़ाज़त करें, उसे बेचने या सदक़ा करने की हरगिज़ इजाज़त नहीं। नीज़ उसे अपनी उजरत में शुमार करना भी आप के लिये जाइज़ नहीं क्यूंकि उजरत के मुस्तह़िक़ होने के लिये उस चीज़ का मालिक को सिपुर्द करना ज़रूरी है, तो जब तक मालिक न आ जाए और वोह चीज़ उसे दे न दें, कुछ वुसूल नहीं कर सकते।

मश्वरा : हर आने वाले गाहक से उस का एड्रेस और फ़ोन नम्बर ज़रूर मा'लूम कर लिया करें ताकि वक़्ते ज़रूरत राबित़ा किया जा सके।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(1) अजीरे मुश्तरिक वोह है : जिस के लिये किसी वक़्ते ख़ास में एक ही शख़्स का काम करना ज़रूरी न हो, उस वक़्त में दूसरे का भी काम कर सकता हो, जैसे धोबी, ख़य्यात (दर्ज़ी)।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 14, जि. 3, स. 155)

मोबाइल कम्पनी से एडवान्स बेलेन्स ह़ासिल करना कैसा ?

क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि मोबाइल कम्पनियां मुख़्तलिफ़ क़िस्म के पेकेजिज़ देती रहती हैं ताकि लोग उन की त़रफ़ माइल हों, उन में से एक पेकेज लोन (Loan) का भी है। इस का त़रीक़ए कार येह होता है कि अगर आप के पास बेलेन्स ख़त्म हो गया है तो कम्पनी येह ओफ़र करती है कि आप लोन ले लें फिर जब आप मोबाइल में बेलेन्स डलवाएंगे, तो हम ने जितने दिये हैं वोह और इतने ऊपर मज़ीद काट लेंगे और येह बात कस्टमर को मा'लूम होती है और कस्टमर राज़ी हो कर लोन लेता है। मा'लूम येह करना है कि क्या इस में ज़ियादा पैसे काटना शरअ़न जाइज़ है ? बा'ज़ लोग कहते हैं येह सूद है क्या येह बात दुरुस्त है ?

الجواب بعون الملک الوھاب اللھم ھدایۃ الحق والصواب

मज़्कूरा मुआ़मला हरगिज़ सूद नहीं बल्कि एक जाइज़ त़रीक़ा है क्यूंकि येह इजारा है क़र्ज़ नहीं कि यहां कम्पनी से पैसे वुसूल नहीं किये जा रहे बल्कि उस की सर्विस इस्ति'माल की जा रही है। उ़मूमी तौ़र पर कम्पनी पहले पैसे ले लेती है और फिर सर्विस फ़राहम करती है जब कि पूछी गई सूरत में कम्पनी पहले सर्विस फ़राहम कर रही है और फिर पैसे वुसूल कर रही है और येह दोनों त़रीक़े जाइज़ हैं या'नी मन्फ़अ़त फ़राहम करने से पहले इ़वज़ ले लेना भी दुरुस्त है और मन्फ़अ़त फ़राहम करने के बा'द इ़वज़ लेना येह भी दुरुस्त है। अगर्चे पहली सूरत में इ़वज़

कम वुसूल किया जा रहा है और दूसरी सूरत में इवज़ ज़ियादा लिया जा रहा है और कम्पनी को इस बात का हक़ हासिल है कि वोह पेशगी सर्विस आम रेट से हट कर कुछ ज़ियादा क़ीमत पर फ़राहम करे जैसे नक़्द व उधार की क़ीमतों में फ़र्क़ करना जाइज़ होता है नीज़ सारिफ़ को भी येह बात मा'लूम है कि बा'द में अदाएगी की सूरत में येह सर्विस मुझे आम क़ीमत से हट कर कुछ ज़ियादा क़ीमत पर फ़राहम की जाएगी और वोह इस बात पर राज़ी है, तो इस में कोई हरज नहीं।

अलबत्ता इस बात का ख़याल रखा जाए कि इस सहूलत को लोन (Loan) का नाम न दिया जाए क्यूंकि इस से येह शुबा लाहिक़ होता है कि कम्पनी क़र्ज़ दे कर इस पर नफ़्अ़ वुसूल कर रही है और बा'ज़ लोगों ने इसे सूद समझ भी लिया हालांकि इस को सूद समझना ग़लत है क्यूंकि कम्पनी यहां पैसे नहीं बल्कि सर्विस दे रही है।

तन्वीरुल अब्सार में है : किसी शै के नफ़्अ़ का इवज़ के बदले मालिक बना देना इजारा है। (الدرالمختار مع ردالمحتار، 9/32 مطبوعہ کوئٹہ) हिदाया में है :

تستحق باحدی معانی ثلاثۃ اما بشرط التعجیل
او بالتعجیل من غیر شرط اوباستیفاء المعقود علیہ

या'नी तीन में से एक सूरत के पाए जाने से मूजिर उजरत का मुस्तहिक़ होगा, पहले देने की शर्त कर ले, या बिग़ैर शर्त के पहले उजरत वुसूल कर ले या मुस्ताजिर, इजारे पर ली गई चीज़ से फ़ाइदा उठा ले। (ہدایہ، 3/297 مطبوعہ کراچی) इमाम कमालुद्दीन इब्ने हुमाम رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : الثمن علی تقدیر النقد الفاوعلی تقدیر النسیئۃ الفین لیس فی معنی الربا

तर्जमा : नक़्द की सूरत में समन एक हज़ार होना और उधार की सूरत में दो हज़ार होना सूद के हुक्म में नहीं।

(فتح القدیر، 6/81 مطبوعہ کوئٹہ)

وَاللہُ اَعْلَمُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

खुश ख़बरी

दा'वते इस्लामी के शो'बे "दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत" की मज़ीद एक शाख़ का इफ़्तिताह जामेअ़ मस्जिद फ़ैज़ाने मदीना करेला स्टॉप नॉर्थ कराची से मुत्तसिल मद्रसतुल मदीना में 8 जुल क़ा'दतिल हराम 1437 हि. / 11 अगस्त 2016 ई. से हो गया है। इफ़्ता मक्तब बाबुल मदीना कराची को शुमार करते हुवे पाकिस्तान में येह दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत की बारहवीं शाख़ है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ

फ़ोन के ज़रीए रहनुमाई : दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से शरई रहनुमाई हासिल करने का एक बड़ा ज़रीआ़ फ़ोन सर्विस भी है। पाकिस्तान के चार नम्बरों के साथ साथ, अफ़्रिक़ा, अमरीका, यूके और ऑस्ट्रेलिया के लिये लोकल नम्बर्ज़ भी मौजूद हैं। इन तमाम नम्बरों पर दुन्या भर के मुसलमान राबिता कर सकते हैं, अलबत्ता जिन मुमालिक के नम्बर्ज़ हैं, उन के लिये येह सहूलत लोकल रेट पर मुयस्सर है।

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के फ़ोन नम्बर्ज़ और मेल एड्रेस

फ़ोन सर्विस के औक़ाते कार			
(10 am to 4 pm) (वक़्फ़ 1 ता 2, जुमुअतुल मुबारक ता'तील)	0220112-0300	0220113-0300	बिल खुसूस पाकिस्तान और दुन्या भर के लिये
पाकिस्तानी औक़ात के मुताबिक़ 2 pm ता 7 pm (इलावा नमाज़ के औक़ात)	0220112-0300	0220113-0300	बिल खुसूस पाकिस्तान और दुन्या भर के लिये
पाकिस्तानी औक़ात के मुताबिक़ 2 pm ता 7 pm (इलावा नमाज़ के औक़ात)	2692 318 121 0044		बिल खुसूस यूके और दुन्या भर के लिये
पाकिस्तानी औक़ात के मुताबिक़ 2 pm ता 7 pm (इलावा नमाज़ के औक़ात)	92 200 8590 0015		बिल खुसूस अमरीका और दुन्या भर के लिये
पाकिस्तानी औक़ात के मुताबिक़ 2 pm ता 7 pm (इलावा नमाज़ के औक़ात)	5691 813 31 0027		बिल खुसूस अफ़्रिक़ा और दुन्या भर के लिये
पाकिस्तानी औक़ात के मुताबिक़ 2 pm ता 7 pm (इलावा नमाज़ के औक़ात)	426 58 00 28 0061		बिल खुसूस ओस्ट्रेलिया और दुन्या भर के लिये

Email:darulifta@dawateislami.net

मिन जानिब : मजलिसे इफ़्ता (दा'वते इस्लामी)

मुआ़शरे के नासूर

धोका

अबू रजब मुहम्मद आसिफ़ अ़त्तारी मदनी

खोई हुई चीज़ वहीं से मिल जाती है जहां वोह गुमी थी सिवाए ए'तिबार (ए'तिमाद) के, क्यूंकि जिस शख़्स का ए'तिबार एक मरतबा ख़त्म हो जाए दोबारा मुश्किल ही से क़ाइम होता है, ए'तिबार ख़त्म होने में अहम किरदार "**धोके**" का भी है। जब हम किसी से जान बूझ कर ग़लत बयानी करेंगे या घटया चीज़ को उ़म्दा बोल कर उसे बे वुक़ूफ़ बनाने की कोशिश करेंगे तो ह़क़ीक़त सामने आने पर वोह दोबारा कभी भी हम पर भरोसा करने के लिये तय्यार नहीं होगा। धोका देने की बुरी आ़दत ने ताजिर और गाहक, मज़दूर और सेठ, डॉक्टर और मरीज़ को एक दूसरे से ख़ौफ़ज़दा कर दिया है, गाहक डरता है कि कहीं दुकानदार पूरी क़ीमत ले कर मुझे ग़ैर मे'यारी चीज़ न थमा दे और दुकानदार को ख़ौफ़ है कि कहीं गाहक मुझे नक़्ली नोट न दे जाए।

फ़ी ज़माना जिन दोस्तों, घरानों, ताजिरों वग़ैरा में ए'तिबार का रिश्ता मज़बूत है, वोह सुखी और जिन्हें किसी ने धोका दिया हो वोह दुखी दिखाई देते हैं, धोका देने वाले से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ना पसन्दीदगी का इज़्हार किया है। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया : مَنْ غَشَّنَا فَلَيْسَ مِنَّا या'नी जिस ने हमारे साथ धोका किया, वोह हम से नहीं। (مسلم، ص65، حدیث: 101) अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : किसी चीज़ की (अस्ली) ह़ालत को पोशीदा रखना धोका है। (فیض القدیر، 6/240، تحت الحدیث: 8879) मसलन किसी ऐबदार चीज़ को उस का ऐब छुपा कर बेचना, जा'ली या मिलावट वाली चीज़ों को अस्ली और ख़ालिस कह कर बेचना वग़ैरा।

मस्नवी शरीफ़ में है : एक शख़्स मेहमानों को खिलाने के लिये आधा सेर गोश्त ख़रीद कर लाया और पकाने के लिये बीवी को दिया, उस की बीवी बहुत चालाक और नख़रे बाज़ थी, वोह जो कुछ घर में लाता बरबाद कर देती, उस का शौहर भी उस से बहुत तंग था। बीवी ने गोश्त भूना और मेहमानों के बजाए खुद खा गई। शौहर ने आ कर पूछा : गोश्त कहां है? मेहमानों को खिलाना है। बीवी ने ढिटाई से झूट बोला : वोह गोश्त तो बिल्ली खा गई, चाहिये तो और ले आओ। वोह आदमी बीवी की येह बात सुन कर गुस्से में नौकर से बोला : तराज़ू लाओ! मैं बिल्ली का वज़्न करूंगा। जब उस ने बिल्ली को तोला तो वोह आधा सेर थी, येह देख कर शौहर बोला : ऐ औ़रत! मैं आधा सेर गोश्त लाया था इस बिल्ली का वज़्न भी आधा सैर है, अगर येह गोश्त है, तो बिल्ली कहां है? और अगर येह बिल्ली है तो गोश्त कहां है? (انوار العلوم مثنوی مولانا روم، دفتر پنجم ص533 ماخوذاً)

फ़ी ज़माना धोके और फ़्रोड की नित नई सूरतें सामने आती रहती हैं, कहीं कोई किसी को एस एम एस कर के कुरआ़ अन्दाज़ी में इन्आ़म निकल आने या कार वग़ैरा मिलने की इत्तिलाअ़ दे कर मुख़्तलिफ़ ह़ीले बहानों से उस से रक़म बटोरना शुरूअ़ कर देता है, तो कहीं कोई किसी की ज़मीन के जा'ली काग़ज़ात दिखा कर ज़मीन की रक़म वुसूल कर के रफ़ू चक्कर हो जाता है और कहीं नौकरी दिलवाने या बैरूने मुल्क भिजवाने का झांसा दे कर जम्अ़ पूंजी पर हाथ साफ़ कर लिया जाता है, अल ग़रज़! त़रह़ त़रह़ से मुसलमानों को दुख व तक्लीफ़ में मुब्तला किया जाता है। धोका देने वालों को याद रखना चाहिये कि एक दिन वोह भी आएगा, जब उन्हें दुन्या से रुख़्सत होने के बा'द अपनी करनी का फल भुगतना होगा,

चुनान्चे, ह़िसाबे आख़िरत से बचने के लिये यहीं दुन्या में सच्ची तौबा कर के ह़िसाब कर लें कि जिस जिस से रक़म हथयाई है उस को वापस करें या मुआ़फ़ करवा लें, अगर वोह ज़िन्दा न हो, तो उस के वारिसों को अदाएगी करें या मुआ़फ़ करवा लें। (इस त़रह़ के मसाइल के ह़ल के लिये दा'वते इस्लामी के दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से राबित़ा करें) इसी त़रह़ मुसलमानों को चाहिये कि किसी से भी कोई माली लेन देन करते वक़्त तह़रीरी मुआ़हदा करें और उस पर गवाह क़ाइम कर लें और मुआ़शरती मुआ़मलात मसलन रिश्ता वग़ैरा त़ै करने में भी ज़रूरी मा'लूमात ह़ासिल करने के बा'द मुत़मइन हों, तो ही बात आगे बढ़ाएं। **अल्लाह** तआ़ला हमें धोका देने और धोका खाने से बचाए। आमीन

अहमद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी

मुहम्मद आसिफ़ इक़्बाल अत्तारी मदनी

आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी तह़रीर व तक़रीर से बर्रे सग़ीर (पाको हिन्द) के मुसलमानों के अ़क़ीदे व अ़मल की इस्लाह़ फ़रमाई। आप के मल्फ़ूज़ात जिस त़रह़ एक सदी पहले राहनुमा थे, आज भी मश्अ़ले राह हैं। दौरे ह़ाज़िर में इन पर अ़मल की ज़रूरत मज़ीद बढ़ चुकी है।

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

1 मां-बाप की मुमानअ़त के साथ ह़ज्जे नफ़्ल जाइज़ नहीं। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 182)

2 वालिदैन के साथ ह़ुस्ने सुलूक आ'ज़म वाजिबात और अहम इबादात में से है ह़त्ता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन की शुक्र गुज़ारी को अपने शुक्रिया के साथ मुत्तसिल फ़रमाते हुवे येह हुक्म दिया : "मेरे शुक्र गुज़ार बनो और अपने वालिदैन के।" (फ़तावा रज़विय्या, 10 / 678)

3 इत़ाअ़ते वालिदैन जाइज़ बातों में फ़र्ज़ है अगर्चे वोह ख़ुद मुर्तकिबे कबीरा हों। (फ़तावा रज़विय्या, 21 / 157)

4 वालिदैन का ह़क़ वोह नहीं कि इन्सान उस से कभी अ़ह्दा बरआ हो वोह इस के ह़यात व वुजूद के सबब हैं तो जो कुछ ने'मतें दीनी व दुन्यवी पाएगा सब उन्हीं के तुफ़ैल (या'नी सदक़े) में हुईं कि हर ने'मत व कमाल, वुजूद पर मौक़ूफ़ है और वुजूद के सबब वोह हुवे तो सिर्फ़ मां-बाप होना ही ऐसे अ़ज़ीम ह़क़ का मूजिब है जिस से बरीउज़्ज़िम्मा कभी नहीं हो सकता, न कि इस के साथ इस की परवरिश में इन की कोशिशें, इन के आराम के लिये इन की तक्लीफ़ें ख़ुसूसन पेट में रखने, पैदा होने, दूध पिलाने में मां की अज़िय्यतें, इन का शुक्र कहां तक अदा हो सकता है !

(फ़तावा रज़विय्या, 24 / 401)

5 बे अ़क़्ल और शरीर और ना समझ जब त़ाक़त व तवानाई ह़ासिल कर लेते हैं तो बूढ़े बाप पर ही ज़ोर आज़माई करते हैं और उस के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी इख़्तियार करते हैं जल्द नज़र आ जाएगा कि जब ख़ुद बूढ़े होंगे तो अपने किये की जज़ा अपने हाथ से चखेंगे। जैसा करोगे, वैसा भरोगे।

(फ़तावा रज़विय्या, 24 / 424)

6 अ़क़्ल मन्द और सआ़दत मन्द अगर उस्ताज़ से बढ़ भी जाएं, तो इसे उस्ताज़ का फ़ैज़ समझते हैं और पहले से भी ज़ियादा उस्ताज़ के पाउं की मिट्टी सर पर मलते हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 24 / 424)

7 किसी मुसलमान बल्कि काफ़िर ज़िम्मी को भी बिला ह़ाजते शरइया ऐसे अल्फ़ाज़ से पुकारना या ता'बीर करना जिस से उस की दिल शिकनी हो, उसे ईज़ा पहुंचे, शरअ़न नाजाइज़ व ह़राम है।

(फ़तावा रज़विय्या, 23 / 204)

8 अ़वामो ख़वास के येह भी ज़बान ज़द है कि बुख़ार की शिकायत है, दर्दे सर की शिकायत है, ज़ुकाम की शिकायत है, वग़ैरा वग़ैरा। येह न (कहना) चाहिये, इस लिये कि जुम्ला अमराज़ का ज़ुहूर मिन जानिबिल्लाह (या'नी अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से) होता है तो शिकायत कैसी !

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, 3 / 94)

फ़ैज़ाने मदीना माहनामा
जनवरी 2017 ई.

बरदाश्त

इस्लाम हमें ज़िन्दगी के हर हर शो'बे के लिये रहनुमाई फ़राहम करता है, इस्लामी ज़िन्दगी के उसूलों पर अमल कर के हम अपनी दुन्या और आख़िरत दोनों को संवार सकते हैं।

अबू रजब मुहम्मद आसिफ़ अत्तारी मदनी

इस्लामी ज़िन्दगी का एक पहलू दूसरे को बरदाश्त करना भी है, कई मरतबा ऐसा होता है कि हमें किसी की कोई बात ना गवार गुज़रती है, तो हमारा जी चाहता है कि हम अपनी ना गवारी का उस पर इज़्हार कर दें। याद रखिये ! इस से मुआमलात सुधरते नहीं बल्कि बिगड़ने का इमकान (Chance) ज़ियादा होता है। सामने वाले ने एक बात की, हम से सब्र और बरदाश्त न हुवा तो हम ने एक की दस[10] सुना दीं, तो बात बढ़ कर झगड़े तक पहुंच जाती है, बा'ज़ तो ऐसे नादान होते हैं कि इन का मिज़ाज माचिस की तीली की तरह होता है कि ज़रा सी रगड़ पर भड़क उठते हैं। अगर सास-बहू, निगरान व मातहूत, शौहर-बीवी वग़ैरा एक दूसरे की बात बरदाश्त करने की आदत बना लें तो ना ख़ुश गवारी से बचा जा सकता है। किसी ने बे ख़याली में आप के पाउं पर पाउं रख दिया तो "अन्धा है, दिखाई नहीं देता ?" जैसे जुम्ले बोल कर गुस्से का इज़्हार करने के बजाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये सब्र व बरदाश्त का मुज़ाहरा कर के सवाबे आख़िरत का हक़दार बना जा सकता है। **अल्लाह** तआला का फ़रमाने आलीशान है।

﴿وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۚ﴾ (پ۴، اٰل عمرٰن:۱۳۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और गुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले और नेक लोग **अल्लाह** के महबूब हैं।

बच्चों की अम्मी ने खाना वक़्त पर तय्यार न किया, कपड़े ठीक से इस्तरी (Press) न हुवे तो भी बरदाश्त कर के घरेलू ज़िन्दगी को तल्ख़ होने से बचाइये क्यूंकि जिन घरों में बरदाश्त कम होती है, वहां से झगड़ों की आवाज़ें बुलन्द हुवा करती है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अफ़्व और दर गुज़र बरदाश्त से काम ले कर दुन्यावी और उख़रवी फ़वाइद हासिल करना ही दानिशमन्दी है, सुल्ताने दो जहां, रहमते आलमियां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) महल बनाया जाए और उस के दरजात बुलन्द किये जाएं, उसे चाहिये कि जो इस पर ज़ुल्म करे येह उसे मुआफ़ करे और जो इसे महरूम करे येह उसे अता करे और जो इस से क़तए तअल्लुक़ करे येह उस से नाता जोड़े। (مستدرک حاکم، 3/12، حدیث:3215)

कहते हैं : एक आदमी की बीवी ने खाने में नमक ज़ियादा डाल दिया। उसे गुस्सा तो बहुत आया मगर येह सोचते हुवे वोह गुस्सा पी गया कि मैं भी तो ख़ताएं करता रहता हूं। अगर आज मैं ने बीवी की ख़ता पर सख़्ती से गिरिफ़्त की तो कहीं ऐसा न हो कि कल बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी मेरी ख़ताओं पर गिरिफ़्त फ़रमा ले। चुनान्चे, उस ने दिल ही दिल में अपनी ज़ौजा की ख़ता मुआफ़ कर दी। इन्तिक़ाल के बा'द उस को किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? उस ने जवाब दिया कि गुनाहों की कसरत के सबब अज़ाब होने ही वाला था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : मेरी बन्दी ने सालन में नमक ज़ियादा डाल दिया था और तुम ने उस की ख़ता मुआफ़ कर दी थी, जाओ ! मैं भी इस के सिले में तुम को आज मुआफ़ करता हूं।

अगर हमारे मुआशरे का हर फ़र्द येह ज़ेहन बना ले कि मैं सब्रो तहम्मुल और बरदाश्त की आदत बनाऊंगा तो हमारा घर, महल्ला, शहर और मुल्क अम्न का गहवारा बन जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

रबीउ़ल आख़िर में की जाने वाली आसान नेकियां

काशिफ़ शहज़ाद अ़त्तारी मदनी

माहे फ़ाख़िर, रबीउ़ल आख़िर के तशरीफ़ लाते ही हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के दीवानों में ख़ुशी की लहर दौड़ जाती है । इस माहे मुबारक को ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से ख़ुसूसी निस्बत ह़ासिल है, इसी लिये आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म इस महीने को रबीउ़ल ग़ौस भी कहते हैं । ज़ैल में चन्द आसान नेकियों का तआ़रुफ़ पेश किया जाता है । माहे रबीउ़ल आख़िर में ख़ुद भी इन नेकियों पर अ़मल पैरा हों और दूसरों को भी इन की तरग़ीब दिला कर सवाबे दारैन के ह़क़दार बनें ।

सालिह़ीन का ज़िक्रे ख़ैर करना

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : اِمْلَاءُ الْخَيْرِ خَيْرٌ مِّنَ السُّكُوْتِ وَالسُّكُوْتُ خَيْرٌ مِّنْ اِمْلَاءِ الشَّرِّ या'नी अच्छी बात कहना ख़ामोशी से बेहतर है और ख़ामोश रहना बुरी बात कहने से बेहतर है ।

(شعب الایمان، ج۴، ص۲۵۶، حدیث: ۴۹۹۳، بیروت)

कितने ख़ुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें जो सिर्फ़ अच्छी बात कहने के लिये ज़बान को ह़रकत में लाते हैं, नेक लोगों का तज़किरा भी अच्छी गुफ़्तगू में शामिल है और बाइ़से रह़मत भी ।

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़रमाान है : या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है । (حلیۃ الاولیاء، ج۷، ص۳۳۵، حدیث: ۱۰۷۵۰، بیروت) जामेअ़ सग़ीर में है : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़िक्र करना इ़बादत है और सालिह़ीन का ज़िक्र (गुनाहों का) कफ़्फ़ारा है । (جامع صغیر، ص۲۶۴، حدیث: ۴۳۳۱، بیروت)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब नेक बन्दों के तज़किरे के वक़्त रह़मते ख़ुदावन्दी का नुज़ूल होता है तो जिस मक़ाम पर नेक बन्दे ख़ुद मौजूद हों, वहां क्यूं न झूम झूम कर रह़मत नाज़िल होगी, लिहाज़ा नेक बन्दों की ज़ाहिरी ज़िन्दगी में इन की सोह़बत और विसाले ज़ाहिरी के बा'द इन के मज़ारात पर ह़ाज़िरी को अपना मा'मूल बना लीजिये । वहां नाज़िल होने वाली बे पायां रह़मतों से हम भी अपना ह़िस्सा पाने में ज़रूर कामयाब होंगे । اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ

जो इश्क़े नबी के जल्वों को सीनों में बसाया करते हैं
अल्लाह की रह़मत के बादल उन लोगों पे साया करते हैं

हमें बुज़ुर्गों की बातें सुनाइये

मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान ह़ज़रते मौलाना सरदार अह़मद चिश्ती क़ादिरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को बचपन ही से अपने बुज़ुर्गों से वालिहाना अ़क़ीदत थी, चुनान्चे, आप स्कूल की ता'लीम के दौरान अपने उस्ताज़ साह़िब से अ़र्ज़ किया करते : मास्टर जी ! हमें बुज़ुर्गों की बातें सुनाइये और हुज़ूर सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा पर ज़रूर रौशनी डाला कीजिये। (ह़याते मुह़द्दिसे आ'ज़म, स. 32, लाहौर)

माहे रबीउ़ल आख़िर में बिल ख़ुसूस हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का ज़िक्रे ख़ैर करना-सुनना ऐन सआ़दत की बात है। इस मक़्सद के लिये बानिये दा'वते इस्लामी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के रसाइल "जिन्नात का बादशाह, मुन्ने की लाश और सांप नुमा जिन्न" नीज़ मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब ग़ौसे पाक के ह़ालात का पढ़ना, सुनना निहायत मुफ़ीद है।

ग्यारहवीं शरीफ़

माहे रबीउ़ल आख़िर में की जाने वाली एक आसान नेकी ग्यारहवीं शरीफ़ है। हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ईसाले सवाब की फ़ातिह़ा को अदबन ग्यारवीं शरीफ़ कहा जाता है। ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "इस महीने में हर मुसलमान अपने घर में हुज़ूर ग़ौसे पाक, सरकारे बग़्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ातिह़ा करे, साल भर तक बहुत बरकत रहेगी। अगर हर चांद की ग्यारहवीं शब को या'नी दसवीं और ग्यारहवीं तारीख़ की दरमियानी रात को मुक़र्रर पैसों की शीरीनी मुसलमान की दुकान से ख़रीद कर पाबन्दी से ग्यारहवीं की फ़ातिह़ा दिया करे तो रिज़्क़ में बहुत ही बरकत होगी और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कभी परेशान ह़ाल न होगा, मगर शर्त़ येह है कि कोई तारीख़ नाग़ा न करे और जितने पैसे मुक़र्रर कर दे, इस में कमी न हो, इतने ही पैसे मुक़र्रर करे, जितने की पाबन्दी कर सके। ख़ुद मैं इस का सख़्ती से पाबन्द हूं और बि फ़ज़्लेही तआ़ला इस की ख़ूबियां बेशुमार पाता हूं। وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی ذٰلِكَ (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 132, मक्तबतुल मदीना कराची)

फ़ातिह़ा का त़रीक़ा जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का रिसाला फ़ातिह़ा का त़रीक़ा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। बरादरे आ'ला ह़ज़रत मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن अपने ना'तिया दीवान "ज़ौक़े ना'त" में अ़र्ज़ करते हैं :

किया ग़ौर जब ग्यारहवीं बारहवीं में
मुअ़म्मा येह हम पर खुला ग़ौसे आ'ज़म
तुम्हें वस्ले बे फ़स्ल है शाहे दीं से
दिया ह़क़ ने येह मर्तबा ग़ौसे आ'ज़म

(ज़ौक़े ना'त, स. 125, गुजरात, हिन्द)

फ़ैज़ाने मदीना माहनामा
जनवरी 2017 ई.

अश्आ़र की तशरीह़

मुह़म्मद इ़मरान अ़त्तारी मदनी

(इस उ़न्वान के तह़्त बुज़ुर्गाने दीन के अश्आ़र के मत़ालिब व मआ़नी बयान करने की कोशिश होगी)

ज़र्रे झड़ कर तेरी पैज़ारों के
ताजे सर बनते हैं सय्यारों के

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 359)

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : ज़र्रे : इन्तिहाई बारीक और निहायत छोटे टुकड़े। पैज़ारों : (ना'लैन) मुबारक जूते। सय्यारों : गर्दिश करने वाले सितारे।

मा'ना व मफ़्हूम : हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ना'लैन या'नी जूतों से झड़ कर गिरने वाली ख़ाक के ज़र्रों की अ़ज़मत व बुलन्दी का आ़लम ऐसा है कि येह आस्मान के सय्यारों जैसे सूरज चांद वग़ैरा के सरों के ताज बनते हैं तो फिर आप की ज़ाते आ़ली की शाने रिफ़्अ़त का आ़लम क्या होगा।

गुज़रे जिस राह से वोह सय्यिदे वाला हो कर
रह गई सारी ज़मीं अम्बरे सारा हो कर

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 70)

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : सय्यिदे वाला : आ़ली मर्तबत सरदार। अम्बर : एक क़िस्म की ख़ुश्बू। सारा : ख़ालिस।

मा'ना व मफ़्हूम : आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस शे'र में हुज़ूर नबिय्ये पाक साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एक मो'जिज़े की त़रफ़ इशारा फ़रमा रहे हैं कि आप का जिस्मे अत़्हर इस क़दर ख़ुश्बू दार था कि जिस रास्ते से एक बार गुज़र जाते वोह ख़ालिस अम्बर से भी ज़ियादा ख़ुश्बूदार हो जाता। अह़ादीसे करीमा इस पर गवाह हैं कि सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तलाश करना होता तो जिस रास्ते से ख़ुश्बू आ रही होती उस त़रफ़ चल पड़ते तो सामने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा होते। (المواہب اللدنیہ، 2/73)

आस्मां ख़्वान, ज़मीं ख़्वान, ज़माना मेहमान
साह़िबे ख़ाना लक़ब किस का है तेरा तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 16)

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : ख़्वान : दस्तर ख़्वान। ज़माना : आ़लम, मुराद सारी काइनात। लक़ब : वस्फ़ी नाम। साह़िबे ख़ाना : मेज़बान।

मा'ना व मफ़्हूम : आस्मान और ज़मीन हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्तर ख़्वान हैं और आप की मुक़द्दस ज़ात मेज़बान है तो गोया तमाम मख़्लूक़ को जो रिज़्क़ मिल रहा है वोह आप ही के सदक़ा व तुफ़ैल मिल रहा है। जैसा कि ह़दीसे पाक में है : اِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَاللهُ يُعْطِي या'नी मैं बांटने वाला हूं अल्लाह देता है। (بخاری، 4/511، حدیث:7312)

फ़ैज़ाने मदीना माहनामा
जनवरी 2017 ई.

शौहर को कैसा होना चाहिये ?

मुहम्मद आसिफ़ इक्बाल अ़त्तारी मदनी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! निकाह़ का एक मक़्सद अच्छे ख़ानदान की बुन्याद रखना भी होता है, जिस के लिये शौहर का किरदार बड़ा अहम है और "**शौहर को कैसा होना चाहिये?**" तो इस ह़वाले से हमारे लिये कुरआनो सुन्नत में वाज़ेह़ रहनुमाई मौजूद है : इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ﴾ (پ۴، النساء: ۱۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन (बीवियों) से अच्छा बरताव करो।

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से बेहतर वोह है जो अपने अहल के लिये बेहतर है।" (ترمذی، 5/475، حدیث:3921) नीज़ इरशाद फ़रमाया : जब तुम खुद खाओ तो बीवी को भी खिलाओ और जब खुद पहनो तो उसे भी पहनाओ और चेहरे पर मत मारो और उसे बुरे अल्फ़ाज़ न कहो और उस से (वक़्ती) क़त़ए़ तअ़ल्लुक़ करना हो तो घर में करो। (ابوداود، 2/356، حدیث:2142) और येह भी फ़रमाया : सब से बद तरीन इन्सान वोह है जो अपने घरवालों पर तंगी करे। अ़र्ज़ की गई : वोह कैसे तंगी करता है? इरशाद फ़रमाया : जब वोह घर में दाख़िल होता है तो बीवी डर जाती है, बच्चे भाग जाते और गुलाम सहम जाते हैं और जब वोह घर से निकल जाए तो बीवी हंसने लगे और दीगर घरवाले सुख का सांस लें। (معجم اوسط، 6/287، حدیث:7898). रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात के साथ होते सब से ज़ियादा नर्म त़बीअ़त, खुश त़बई और मुस्कुराने वाले होते। (کنز العمال، 7/48، حدیث: 18323) उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने कपड़े खुद सी लेते और अपने ना'लैने मुबारकैन गांठते और वोह सारे काम करते जो मर्द अपने घरों में करते हैं। (کنز العمال، 4/60، جز7، حدیث:18514) और एक बार ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने प्याले से पानी पिया तो हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने प्याला ले कर उसी जगह मुंह लगा कर पानी नोश फ़रमाया जहां से उम्मुल मोमिनीन ने पिया था और एक मरतबा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने एक हड्डी से गोश्त नोच कर खाया तो हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से ले कर वहीं से गोश्त तनावुल फ़रमाया जहां से उन्हों ने खाया था। (شرح سفر السعادۃ، ص445)

चुनान्चे, शौहर को ऐसा होना चाहिये कि वोह बीवी को दीन की बुन्यादी बातें सिखाए या इस का एहतिमाम करे, उस के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आए, नर्मी के साथ गुफ़्तगू करे, मुमकिन हो तो घर के काम काज में उस का हाथ बटाए, जैसा खुद खाए वैसा उसे खिलाए, उसे बुरे अल्फ़ाज़ न कहे, उस के ऐ़ब छुपाए। किसी की अपनी बीवी से जंग रहती थी उस के एक दोस्त ने पूछा कि तेरी बीवी में ख़राबी क्या है? वोह बोला कि तुम मेरे अन्दरूनी मुआ़मलात पूछने वाले कौन हो? आख़िर उसे त़लाक़ दे दी, उस साइल ने कहा कि अब तो वोह तुम्हारी बीवी न रही अब बताओ उस में क्या ख़राबी थी? येह बोला : वोह औ़रत ग़ैर हो चुकी मुझे किसी ग़ैर के उ़यूब बताने का क्या ह़क़ है? (मिरआतुल मनाजीह़, 5/61)

मज़ीद येह कि शोहर को चाहिये कि बीवी की लग़्ज़िशों (ग़लतियों) से दर गुज़र करे और लड़ाई झगड़ा न करे। **छोटी छोटी बातों पर बीवी को हुक्म देते रहना मसलन येह उठा दो, वोह रख दो, फुलां चीज़ ढूंड कर ला दो वग़ैरा से बचना और अपना काम अपने हाथ से कर लेना घर को अम्न का गहवारा बनाने में मदद देता है। नीज़ अपने छोटे छोटे कामों के लिये बीवी को नींद से जगा देना, काम काज और झाड़ू पोचे के दौरान, आटा गूंधते हुवे, नीज़ दर्दे सर, नज़्ला या दीगर बीमारियों के होते हुवे उन को काम के ऑर्डर दिये जाना घर के माह़ोल को ख़राब कर सकता है।** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें बा किरदार मुसलमान बनने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आतिफ़ हुसैन अत्तारी

नाख़ुन काटने की सुन्नतें और आदाब

इस्लाम ने इन्सान को ज़ाहिरी व बातिनी नफ़ासत और पाकीज़गी का तसव्वुर दिया है और इस पर कारबन्द रहने की तल्क़ीन की है। ख़लीफ़ए मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द, अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : सफ़ाई सुथराई की मुबारक आ़दत भी मर्दों और औ़रतों के लिये निहायत ही बेहतरीन ख़स्लत है जो इन्सानिय्यत के सर का एक बहुत ही क़ीमती ताज है। अमीरी हो या फ़क़ीरी हर ह़ाल में सफ़ाई व सुथराई इन्सान के वक़ार व शरफ़ का आईना दार और मह़बूबे परवर दगार है। (जन्नती ज़ेवर, स. 139)

ज़ाहिरी सफ़ाई में एक चीज़ इन्सान के नाख़ुन भी हैं। इस्लाम में 40 दिन के अन्दर अन्दर नाख़ुन तराशने का हुक्म है और बिला उ़ज़्रे शरई़ 40 दिन से ज़ाइद कर देना नाजाइज़ व गुनाह है। रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो मूए ज़ेरे नाफ़ और नाख़ुन न तराशे और मूंछ न काटे, वोह हम में से नहीं। (مسند احمد، 9/125، حدیث:23539) जुमुए़ के दिन नाख़ुन तराशने वाला दस (10) दिन तक उस की बरकतें पाता है। ह़दीसे पाक में है : जो जुमुआ़ के दिन नाख़ुन तरशवाए **अल्लाह** तआ़ला उस को दूसरे जुमुए़ तक बलाओं से मह़फ़ूज़ रखेगा और 3 दिन ज़ाइद या'नी 10 दिन तक। (مرقاۃ المفاتیح، 8/212)

तिब्बी लिह़ाज़ से भी बड़े नाख़ुन मुज़िरे सिह़्ह़त (या'नी सिह़्ह़त के लिये नुक़्सान देह) हैं। ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : नाख़ुन में एक ज़हरीला माद्दा होता है अगर नाख़ुन खाने या पानी में डुबोए जाएं तो वोह खाना बीमारी पैदा करता है इसी लिये अंग्रेज़ वग़ैरा छुरी कांटे से खाना खाते हैं क्यूंकि ईसाइयों के यहां नाख़ुन बहुत कम कटवाते हैं। (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 91) नाख़ुन जरासीम की पनाह गाह हैं और कई फैलने वाली बीमारियों मसलन टाईफ़ॉईड, इस्हाल, आंतों में कीड़े और वरम का सबब बनते हैं। (सुन्नते मुस्त़फ़ा और जदीद साइन्स, स. 53) बा'ज़ लोग दांतों से नाख़ुन काटने के आ़दी होते हैं, इस ना पसन्दीदा आ़दत को ख़त्म करना चाहिये इस से बर्स पैदा होने का अन्देशा है। (فتاوی ہندیہ، 5/358)

फिर येह कि नाख़ुन तराशना जहां एक त़रफ़ सिह़्ह़त का बाइ़स है तो दूसरी जानिब सुन्नत व मुस्तह़ब अ़मल है और बन्दा सुन्नत के मुत़ाबिक़ उन्हें तराश कर सवाब का मुस्तह़िक़ ठहरता है। जुमुआ़ के दिन नाख़ुन तरशवाना मुस्तह़ब है, हां अगर ज़ियादा बढ़ गए हों तो जुमुआ़ का इन्तिज़ार न करें क्यूंकि नाख़ुनों का बड़ा होना तंगिये रिज़्क़ का सबब है। (बहारे शरीअ़त, 3/582)

हाथों के नाख़ुन तराशने के 2 सुन्नत त़रीक़ों में से एक आसान त़रीक़ा येह है कि सीधे हाथ की शहादत की उंगली से शुरूअ़ कर के तरतीब वार छुंगलिया समेत नाख़ुन तराशें मगर अंगूठा छोड़ दें। अब उलटे हाथ की छुंगलिया से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन तराश लें। अब आख़िर में सीधे हाथ का अंगूठा जो बाक़ी था उस का नाख़ुन भी काट लें और पाउं के नाख़ुन तराशने की कोई तरतीब मन्क़ूल नहीं। बेहतर येह है कि वुज़ू में पाउं की उंगलियों में ख़िलाल करने की जो तरतीब है उसी तरतीब के मुत़ाबिक़ पाउं के नाख़ुन काट लें। या'नी सीधे पाउं की छुंगलिया से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन तराश लें फिर उलटे पाउं के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंगलिया समेत नाख़ुन काट लें।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, 3/583)

फ़ैज़ाने मदीना माहनामा जनवरी 2017 ई.

नाकामी

अबू रजब मुहम्मद आसिफ़ अत्तारी मदनी

नाकामी (Failure) ऐसा लफ़्ज़ है जिस का बोलना या सुनना भी अच्छा नहीं लगता, अगर हमारे सामने कोई शख़्स अपने किसी मन्सूबे या हदफ़ का ज़िक्र करे और हम उस से कह दें कि तुम इस में नाकाम हो जाओगे तो उस का मुंह उतर जाएगा। फ़ी ज़माना हर दूसरा शख़्स बिल ख़ुसूस नौजवान अपनी नाकामियों का रोना रोता दिखाई देता है कि जनाब मैं ने इतनी कोशिश की फुल्लां इम्तिहान पास करने की मगर नाकाम रहा, मेरे पास फुल्लां फुल्लां डिग्री है मगर नोकरी नहीं मिलती, दिन रात मेहनत करता हूं मगर अख़राजात पूरे नहीं होते, अच्छा ओ़हदा (High Post) पाने में नाकाम रहा अब घरवाले बातें सुनाते हैं मैं क्या करूं? वग़ैरा वग़ैरा। इस तरह़ के लोगों की ह़ालत देख कर एक सुवाल क़ाइम होता है कि हम नाकाम क्यूं होते हैं? ह़क़ीक़त तो येही है कि कामयाबी या नाकामी देने वाली ज़ात रब तआ़ला की है, हां ! कुछ ज़ाहिरी अस्बाब (Reasons) भी होते हैं कि अगर इन पर तवज्जोह रखी जाए तो नाकामी से काफ़ी ह़द तक बचा जा सकता है। नाकामी के चन्द अस्बाब येह हैं :

1 मक़्सद (Aim) के तअ़य्युन में ग़लती, मसलन एक शख़्स की दिलचस्पी कम्प्यूटर साइन्स में है लेकिन वोह डॉक्टर बनने की ठान लेता है तो नाकामी का ज़िम्मेदार वोह ख़ुद है, फिर इन मक़्सिद को भी शरअ़न देख लेना चाहिये कि अगर वोह ऐसा शो'बा अपनाना चाहता है जहां शरीअ़त की नाफ़रमानी करनी पड़ेगी मसलन झूट, धोका और रिश्वत का चलन होगा तो ऐसे शो'बे को अपना हदफ़ बनाने वाला नादान है।

2 मक़्सद (Aim) के ह़ुसूल के त़रीक़ए कार में ख़ामी होना मसलन अगर कोई शख़्स गाड़ियों का मिकेनिक बनना चाहता है तो उसे सीखने के लिये किसी माहिर के पास जाए अगर वोह शुरूअ़ में ही अपनी वर्कशोप खोल कर लोगों की गाड़ियों पर तजरिबात शुरूअ़ कर देगा तो शायद लेने के देने पड़ जाएं।

ना तजरिबा कार होने के बा वुजूद तजरिबाकार लोगों से मश्वरा न करना, ह़ाफ़िज़े मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिसे मुबारकपुरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की नसीह़त का लुब्बे लुबाब है कि ख़ुद तजरिबे कर के ठोकर खाने के बजाए तजरिबाकारों से मश्वरा कर लेना चाहिये इस से वक़्त बचेगा।

4 इस्तिक़ामत (Steadfastness) का न होना भी नाकाम करवा देता है, रास्ता कितना ही कठिन हो इस्तिक़ामत का वस्फ़ अपना कर पार किया जा सकता है, पानी के क़त़रे को देख लीजिये कि अगर मुसलसल किसी पथ्थर पर टपकता रहे तो उस में भी कुछ न कुछ सूराख़ कर देता है।

5 वक़्त ज़ाएअ़ करने वाला अगर नाकामी का सामना करे तो उसे ह़ैरान नहीं होना चाहिये, चीता बहुत तेज़ रफ़्तार जानवर है जो सिर्फ़ तीन छलांगों (Jumps) में तक़रीबन 150 किलो मीटर फ़ी घन्टे की स्पीड ह़ासिल कर लेता है लेकिन माहिरीन के मुत़ाबिक़ वोह इस स्पीड को सिर्फ़ 70 सेकन्ड बर क़रार रख सकता है वरना उस का पेट फट जाए, वोह अपने इन 70 सेकन्ड को ज़ाएअ़ नहीं होने देता और इसी दौरान ही शिकार पर क़ाबू पाने की पहले ही से मन्सूबा बन्दी कर लेता है, चुनान्चे, किसी जानवर का उस के ह़म्ले से बच निकलना बहुत मुश्किल होता है।

6 मिज़ाज (Mood) मूड के तह़्त चलना भी नाकामी की एक वज्ह हो सकता है, जब जी चाहा काम कर लिया, जब चाहा आराम कर लिया येह कामयाब लोगों का त़रीक़ए कार नहीं चुनान्चे, मूड नहीं बल्कि उसूल के तह़्त काम करना चाहिये।

7 बहुत ज़ियादा तवक़्क़ोआ़त (Expectations) वाबस्ता कर लेने वाले जब अपनी ख़्वाहिशात को पूरा होते नहीं देखते तो ए'लान कर देते हैं कि जनाब हम नाकाम रहे, बकरे से घोड़े का काम ख़्वाब में तो लिया जा सकता है बेदारी में नहीं।

8 कभी कभार कामयाबी के रास्ते में वक़्ती नाकामी का सामना भी

होता है इस मक़ाम पर कई लोग हौसला हार बैठते हैं कि हम कामयाब नहीं हो सकते, ग़ौर करना चाहिये कि हमारे इर्द गिर्द वोह लोग जिन्हें हम कामयाब समझते हैं क्या उन्हें कभी नाकामी का सामना नहीं हुवा !

9 काम करने से होता है सिर्फ़ सोचने से नहीं, कई लोग बड़े बड़े अहदाफ़ मुक़र्रर करने के बा'द सोचते ही रह जाते हैं करते कुछ नहीं, ऐसों को कामयाबी मिल जाए तो हैरान कुन बात है।

10 तवील मशक़्क़त से घबरा जाना, बा'ज़ औक़ात कामयाबी और नाकामी के दरमियान एक क़दम का फ़ासिला होता है लेकिन बा'ज़ नादान क़दम बढ़ाने के बजाए वापस चलना शुरूअ़ कर देते हैं और कामयाबी को खुद अपने हाथों से दफ़ना देते हैं।

11 दूसरों के साथ मिल कर काम करने में उन के मिज़ाज का समझना और इस के मुताबिक़ इन से काम लेना देना बहुत ज़रूरी है। इज़्ज़त, हौसला अफ़ज़ाई किसे अच्छी नहीं लगती अगर दूसरों से काम लेते वक़्त हुक्म नहीं दरख़्वास्त का तरीक़ा अपनाया जाए तो वोह शख़्स आप का काम ज़ौक़ो शौक़ से करेगा और अगर आप बात बात पर उसे ज़लील करेंगे फिर हुक्मन कोई काम कहेंगे तो सिर्फ़ अपने आप को बचाने के लिये काम करेगा जो शायद मे'यारी न हो, येह बहुत अहम बात है लेकिन मिज़ाज शनासी के फ़ुक़्दान की वज्ह से कई लोग दूसरों के साथ मिल कर काम करने में नाकाम हो जाते हैं।

12 मुख़्लिस लोगों की क़दर न करना भी नाकामी की एक वज्ह है।

13 ग़लती की निशानदेही करने वाले से नाराज़ हो जाने वाला अपने ऊपर इस्लाह का दरवाज़ा गोया बन्द कर लेता है, अब वोह खाई में भी छलांग लगाएगा तो शायद ही कोई उस को रोकने वाला हो।

14 जिसे कोई काम करना हो उसे उस काम की फ़िक्र होती है लेकिन हद से बढ़ी हुई फ़िक्रमन्दी (Tension) से बा'ज़ औक़ात काम बिगड़ भी जाता है जैसे किसी का दूध पीता बच्चा पलंग से नीचे जा गिरे, उसे उठाने के लिये पलंग हटाना पड़ेगा तो अगर येह शख़्स बद हवास हो कर पलंग को इस तरह खींचे कि बच्चा ज़ख़्मी हो जाए तो येह नुक़्सान देह है, कैसी ही एमरजेन्सी (Emergency) क्यूं न हो हवास पर क़ाबू रखना बेहद ज़रूरी है।

ज़रूरत से ज़ियादा काम अपने ज़िम्मे ले लेना भी नाकाम करवा देता है, गधा जिसे बे वुक़ूफ़ जानवर समझा जाता है उस पर भी अगर ज़ियादा वज़्न रख दिया जाए तो बा'ज़ औक़ात चलने के बजाए बैठ जाता है तो इन्सान के बारे में क्या ख़याल है !

15 अपनी ग़लतियों (Mistakes) को तस्लीम करने वाला आइन्दा इन से बच सकता है लेकिन जो अपनी ग़लतियों का ज़िम्मेदार दूसरों को क़रार देना शुरूअ़ कर दे उस का ग़लतियों से बचना बहुत दुश्वार हो जाता है।

16 बा'ज़ नौजवान, अच्छे ओहदे (High Post) के इन्तिज़ार में ख़ाली हाथ बैठे रहते हैं, मुतबादिल नौकरी या कारोबार नहीं करते जब उन की उ़म्र ढलने लगती है तो मायूसियों के साए भी दराज़ होना शुरूअ़ हो जाते हैं, फिर वोह अपनी नाकामियों का रोना रोते दिखाई देते हैं।

17 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को जो सलाहिय्यतें अ़ता फ़रमाई हैं, उन पर ए'तिमाद होना बहुत ज़रूरी है, लेकिन बा'ज़ों को हर काम करते वक़्त धड़का लगा रहता है कि न जाने येह काम मैं कर भी पाऊंगा या नहीं ! यूं वोह घबराहट में नाकाम हो जाते हैं, नज़र अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत पर हो, उसी की अ़ताकर्दा सलाहिय्यतों पर ए'तिमाद हो तो कामयाबी खुद आगे बढ़ कर क़दम चूम लिया करती है।

18 बा'ज़ लोग वसाइल (Resources) की कमी का रोना रोते रहते हैं, अगर दस्तयाब वसाइल को दानाई से इस्ति'माल करें तो वसाइल में इज़ाफ़ा भी हो जाता है और कामयाबी का सफ़र भी शुरूअ़ हो जाता है, अगर कोई येही ख़्वाब देखता रहे कि कहीं से मेरे पास करोड़ों रूपे आ जाएं तो मैं एक फ़ैक्ट्री बनाऊंगा तो उसे चाहिये कि अपने पास मौजूद रक़म से छोटा सा कारोबार शुरूअ़ कर दे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो तरक़्क़ी करते करते एक दिन फ़ैक्ट्री का मालिक भी बन सकता है, एक नौजवान एक सेठ के पास पहुंचा कि मैं आप जैसा बड़ा कारोबारी बनना चाहता हूं तो उस ने कहा कि फ़ुटपाथ पर बिस्किट और बच्चों की टॉफ़ियों की ट्रे ले कर बैठ जाओ और उन्हें बेचो, क्यूंकि मैं ने भी अपना सफ़र फ़ुटपाथ से शुरूअ़ किया था।

19 नौजवान इस्लामी भाइयो ! नाकामियों के येह 19 अस्बाब मुख़्तसर तौर पर ज़िक्र किये हैं, आप खुद को सामने रख कर ग़ौर करें तो कई अस्बाब सामने आ सकते हैं, इन अस्बाब को दूर कर के कामयाबी मुमकिन है लेकिन याद रहे कोशिश करना हमारा काम है और कामयाबी देने वाली ज़ात रब عَزَّوَجَلَّ की है।

फ़ैज़ाने मदीना माहनामा
जनवरी 2017 ई.

आग से जलने पर इब्तिदाई तिब्बी इमदाद

डॉक्टर कामरान इस्हाक़ अत्तारी

आग **अल्लाह** तआ़ला की ने'मत है कि हम खाना पकाने, पानी गर्म करने, दूध उबालने और दीगर ज़रूरियाते ज़िन्दगी पूरी करने में इस से मदद लेते हैं लेकिन येही आग हमारी बे एह़तियाती की वज्ह से ज़ह़मत भी बन सकती है। लिहाज़ा हमें चाहिये कि बिला ज़रूरत आग के क़रीब न जाएं, जिस जगह आग लग चुकी हो वहां से दूर रहना चाहिये। अगर खुदा न ख़्वास्ता हमारे सामने कोई आग की लपेट में आ जाए या झुलस कर ज़ख़्मी हो जाए बिल खुसूस अगर येह ह़ादिसा किसी बच्चे के साथ पेश आ जाए तो उस वक़्त हम इब्तिदाई तिब्बी इमदाद फ़राहम कर सकते हैं, मसलन अगर किसी के कपड़ों में आग लग जाए तो उस को फ़ौरी तौर पर एक कम्बल या चादर में लपेट लें या आग बुझाने के लिये ज़मीन पर उस के जिस्म को रोल करें (करवटें दिलाए)।

आग से जल जाने पर छोटे ज़ख़्मों के लिये जो इक़्दामात किये जा सकते हैं वोह येह हैं

★ जले हुवे ह़िस्से को फ़ौरी तौर पर ठन्डा करें। बहुत सारा ठन्डा और साफ़ पानी इस्ति'माल करें जो दर्द और सूजन को कम करने में मदद देता है। ज़ख़्मों पर बर्फ़ मत रखें, ऐसा करने से जिल्द मज़ीद ख़राब हो जाएगी।

★ ढीली स्टेरीलाइज़्ड की गई गाज़ पट्टी या साफ़ कपड़े के साथ ज़ख़्म को साफ़ और ख़ुश्क रखें। येह अमल आबलों वाली जिल्द को तहफ़्फ़ुज़ फ़राहम करेगा।

★ आबलों को मत फोड़ें क्यूंकि येह ज़ख़्मी ह़िस्से को तहफ़्फ़ुज़ फ़राहम करते हैं। अगर आबले को फोड़ दिया जाए तो उस ह़िस्से में इन्फ़ेक्शन (Infection) का ख़त़रा मज़ीद बढ़ जाता है। ज़ख़्म पर मख्खन या कोई मरहम न लगाएं, इन के लगाने से ज़ख़्म ठीक होने में रुकावट पैदा होगी।

★ एक मा'मूली ज़ख़्म आम तौर पर बिग़ैर किसी इलाज के ठीक हो जाता है। अलबत्ता बड़े ज़ख़्मों के लिये जो जिल्द की तमाम तहों को जला देते हैं फ़ौरी हंगामी देख भाल की ज़रूरत है। जब तक येह देख भाल दस्तयाब न हो येह इक़्दामात किये जा सकते हैं।

★ जिस्म से जले हुवे कपड़े मत हटाएं। इस बात को यक़ीनी बनाएं कि मुतअस्सिरा फ़र्द आग के क़रीब या किसी ऐसी जगह पर न हो जहां कुछ सुलग रहा हो या उस को गर्मी या धुवें का सामना हो।

★ बड़े और शदीद जले हुवे ज़ख़्मों को ठन्डे पानी में न डुबोएं।

★ जले हुवे ह़िस्से को किसी ठन्डे, गीले तोलिये या कपड़े या स्टेरीलाइज़्ड (Sterilized) पट्टियों से ढीला ढांप दें।

★ अगर बच्चा बेहोश हो तो उस बच्चे का जिस्म गर्म रखें। बच्चे के जिस्म को उस के दोनों अत़राफ़ में रोल करें ताकि उस की ज़बान उस के सांस लेने के अमल में रुकावट न डाले।

★ सांस लेने के अमल, ह़रकत और खांसी की अलामत को चेक करें। अगर ऐसी कोई अलामत मौजूद नहीं है तो सांस लेने में मुश्किलात या डूबने के बारे में इब्तिदाई तिब्बी इमदाद के तह़्त इक़्दामात पर अमल करें (जिन का बयान اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आइन्दा किसी महीने "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" में आएगा।)

आसान इलाज

अगर जिस्म मा'मूली सा जल जाए तो जली हुई जगह पर सुब्ह शाम 2-3 बार 100 ग्राम नारियेल के तेल में 6 ग्राम काफ़ूर शामिल कर के लगाना मुफ़ीद है।

ह़कीम ख़लील अह़मद अत्तारी

मुहम्मद ए'जाज़ नवाज़ अत्तारी मदनी

सेब (Apple) के फ़वाइद

फलों में सेब को सब से ज़ियादा तवानाई बख़्श समझा जाता है। येह एक खुश ज़ाइक़ा और गिज़ाइय्यत से भरपूर फल है, सेब के बारे में कहा जाता है : "नाश्ते में एक सेब खाइये, कभी डॉक्टर के पास न जाइये।"

सेब के बे शुमार फ़वाइद में से चन्द पेशे ख़िदमत हैं :

(1) सेब दिलो दिमाग़ को फ़रहत पहुंचाता है।

(2) दिल को ताक़त देता और घबराहट दूर करता है।

(3) सेब ख़ून पैदा करता और चेहरे का रंग निखारता है।

(4) सेब जिगर की इस्लाह करता, मे'दे को ताक़त देता है।

(5) निहार मुंह (ख़ाली पेट) सेब, दूध के साथ सिह्हत बख़्श है।

(6) सेब का ज्यूस पेट और आंतों के जरासीम मारता है।

(7) सेब दांतों और मसूड़ों को मज़बूत करता है।

(8) पेचिश, टाईफ़ोईड, तपेदिक़ और खांसी में मुफ़ीद है।

(9) सेब का मुरब्बा दिलो दिमाग़ को मज़बूत करता है।

(10) सेब नज़र और हाफ़िज़ा तेज़ करता है।

(11) सेब पथरी की रोक थाम में अहम किरदार अदा करता है।

(12) कच्चा सेब गर्म कर के वरम पर लगाना मुफ़ीद है।

(13) सेब कोलेस्ट्रोल को बढ़ने से रोकता और कम करता है।

(14) एक तह्क़ीक़ के मुताबिक़ सेब हर केन्सर को रोकता है।

(15) सेब का सिर्का हिचकियों की रोक थाम, गले की तक्लीफ़ में राहत, नज़ला ज़ुकाम से आराम देता और वज़्न में कमी करता है। (मुख़्तलिफ़ वेब साइट्स से माख़ूज़)

कद्दू शरीफ़ के फ़वाइद

कद्दू शरीफ़ (Gourd) जिसे लौकी भी कहा जाता है, एक मा'रूफ़ सब्ज़ी है, येह हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बहुत पसन्द था। (ابن ماجہ، 4/27، حدیث:3302) और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे शौक़ से तनावुल फ़रमाया। (بخاری، 3/537، حدیث:5435) और इसे हांडियों में डालने की तरग़ीब देते हुवे इरशाद फ़रमाया : जब हांडी पकाओ तो उस में कद्दू ज़ियादा डाल लिया करो कि येह ग़मगीन दिल को मज़बूत करता है। गिज़ाइय्यत के ए'तिबार से येह तवानाई बख़्श सब्ज़ी है। चन्द फ़वाइद पेशे ख़िदमत हैं :

हल्की आंच पर पकाए हुवे कद्दू के सालन में फ़ौलाद, केल्शियम, पोटेशियम, विटामिन ए, विटामिन बी और मा'दनी व रोग़नी नमकियात वाफ़िर मिक़्दार में पाए जाते हैं। कद्दू मे'दे की तेज़ाबिय्यत और जलन में बहुत मुफ़ीद है। दाइमी क़ब्ज़, गर्म तबीअत और मेहनत व मशक़्क़त करने वाले अफ़राद के लिये कद्दू और चने की दाल का पक्वान क़ुव्वत बख़्श गिज़ा है।

कद्दू हाफ़िज़ा तेज़ करता और हर क़िस्म के दिमाग़ी वरम (सूजन) को दूर करता है। कद्दू का गूदा बिच्छू के डंग पर लेप करने और इस का रस मरीज़ को पिलाने से ज़हर का असर ज़ाइल हो जाता है।

कद्दू का गूदा बारीक पीस कर पेशानी पर लेपने से सर का दर्द जाता रहता है। कद्दू को गला कर उस के टुकड़े पाबन्दी के साथ खाना जिगर के मरज़ में मुफ़ीद है।

कद्दू का पानी पीना पेशाब की बन्दिश और जलन में मुफ़ीद है। (फ़ैज़ाने तिब्बे नबवी, स. 260, फूलों, फलों और सब्ज़ियों से इलाज, स. 383)

नोट : हर दवा और नुस्ख़े को अपने तबीब के मश्वरे से इस्ति'माल कीजिये

कुतुब का तआ़रुफ़

सिरातुल जिनान

मुहम्मद आसिफ़ इक़बाल अ़त्तारी मदनी

कुरआने करीम अहले इस्लाम और पूरी इन्सानिय्यत के लिये दुन्या व आख़िरत के तमाम तर उमूर में हिदायत व रहनुमाई का सर चश्मा है। मगर इस की बरकात से इस्तिफ़ादा उसी वक़्त मुमकिन है जब मा'लूम हो कि कुरआने मजीद में क्या बयान हुवा है? जब इस्लाम की नूरानी किरनें सरज़मीने अ़जम में पहुंचीं तो अहले अ़जम को अह़कामे कुरआने करीम समझाने के लिये उ़लमाए दीन ने दीगर ज़बानों में तफ़्सीरें लिखीं बिल ख़ुसूस उर्दू ज़बान की तरक़्क़ी के पेशे नज़र उ़लमाए पाको हिन्द ने भी कई उर्दू तफ़ासीर पेश कीं।

तफ़्सीरे ''सिरातुल जिनान फ़ी तफ़्सीरुल कुरआन'' इन्हीं में से एक है। येह तफ़्सीर शैखुल ह़दीस वत्तफ़्सीर ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अबू सालेह़ मुह़म्मद क़ासिम अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के बरसहा बरस के मुत़ालए़ और अन्थक मेह़नत व कोशिश का समरा है। इब्तिदाए किताब में ''कुछ सिरातुल जिनान के बारे में'' के उ़न्वान के तह़्त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के गिरां क़दर तअस्सुरात हैं फिर तीन अब्वाब पर मुश्तमिल मुक़द्दमे में कुरआने मजीद और इस की तफ़्सीर से मुतअ़ल्लिक़ अहम बातें मज़कूर हैं, जिस के आख़िर में ''सिरातुल जिनान'' पर किये गए काम और इस की 11 ख़ुसूसिय्यात दर्ज की गई हैं।

इस तफ़्सीर की ख़ुसूसिय्यात का ख़ुलासा येह है कि हर आयते मुबारका के तह़्त दो तर्जमे दिये गए हैं, एक आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का शोहरए आफ़ाक़ बे मिस्ल तर्जमा ''कन्जुल ईमान'' और दूसरा इसी तर्जमे से मुस्तफ़ाद क़दरे आसान तर्जमा ''कन्जुल इ़रफ़ान'' है। इस तफ़्सीर में क़दीम व जदीद तफ़ासीर और दीगर उ़लूमे इस्लामिया पर मुश्तमिल कुतुब से अख़्ज़शुदा कलाम शामिल किया गया है। तफ़्सीर ज़ियादा त़वील है न बहुत मुख़्तसर बल्कि मुतवस्सित़ (दरमियानी) और जामेअ़ है। जहां अह़काम व मसाइल का बयान है उस मक़ाम पर ज़रूरी शरई मसाइल आसान अन्दाज़ में तह़रीर किये गए हैं। ह़स्बे मौक़अ़ आ'माल की इस्लाह़ और मुआ़शरती बुराइयों से मुतअ़ल्लिक़ मुफ़ीद मज़ामीन शामिल किये गए हैं। इस्लामी हुस्ने मुआ़शरत पर कसीर इस्लाही मवाद शामिल किया गया है। मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर अ़क़ाइदे अहले सुन्नत और मा'मूलाते अहले सुन्नत की दलाइल के साथ वज़ाह़त की गई है और सब से ख़ास बात सीरते नबवी को ख़ुसूसिय्यत के साथ बयान किया गया है। अल ग़रज़ येह तफ़्सीर कई ख़ूबियों से आरास्ता है।

''सिरातुल जिनान'' की दस (10) जिल्दों में से नौ (9) जिल्दें ज़ेवरे त़ब्अ़ से आरास्ता हो चुकी हैं। हर जिल्द तीन (3) पारों की तफ़्सीर पर मुश्तमिल है। हर जिल्द के सफ़ह़ात की ता'दाद बित्तरतीब यूं है : जिल्द अव्वल (1), 524। जिल्द दुवुम (2) 495, जिल्द सिवुम (3), 573। जिल्द चहारुम (4), 592। जिल्द पन्जुम (5), 617। जिल्द शशुम (6), 717। जिल्द हफ़्तुम (7), 619। जिल्द हश्तुम (8), 673। जिल्द नहुम (9), 785 जबकि जिल्द दहुम (10) ज़ेरे त़ब्अ़ है।

इ़ज़्ज़त दीजिये इ़ज़्ज़त लीजिये

मुहम्मद बिलाल रज़ा अ़त्तारी मदनी

''महब्बत भरा घराना'' येह सुनते ही एक ऐसे घर का मन्ज़र ज़ेहन के पर्दे पर उभरता है जिस के मकीन (रहने वाले) एक दूसरे की इ़ज़्ज़त का पास और अदबो एह़तिराम की फ़ज़ा क़ाइम रखने वाले हों। दर ह़क़ीक़त एक दूसरे की इ़ज़्ज़तो एह़तिराम करना ऐसा वस्फ़ है जिस की मौजूदगी में किसी घर की बुन्यादें अ़र्सए दराज़ तक मज़बूत रहती हैं। जब कि इ़ज़्ज़त की पामाली इन बुन्यादों को हिला कर रख देती है और बाहमी रन्जिशों का सबब बनती है लिहाज़ा ''इ़ज़्ज़त दीजिये इ़ज़्ज़त लीजिये'' के ज़रीं उसूल पर कारबन्द रहना चाहिये।

हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने अक़्वाल व अफ़्आ़ल के ज़रीए इ़ज़्ज़त जैसी अ़ज़ीम ख़ूबी को अपनाने पर उभारा है। जैसा कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ऐ अनस ! बड़ों का अदबो एह़तिराम और ता'ज़ीमो तौक़ीर करो और छोटों पर शफ़्क़त करो, तुम जन्नत में मेरी रफ़ाक़त पा लोगे। (شعب الایمان، 7/458) और अ़मली तौ'र पर यूं कि ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होतीं तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खड़े हो कर इस्तिक़्बाल फ़रमाते और जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन के हां तशरीफ़ ले जाते तो वोह खड़ी हो जातीं। (ابوداود، 4/454)

इन अह़ादीसे करीमा की रौशनी में घर के अफ़राद की इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई के अन्दाज़ कुछ यूं हो सकते हैं : ★ वालिदैन को आता देख कर ता'ज़ीमन खड़े हो जाइये ★ दिन में कम अज़ कम एक बार वालिद के हाथ और वालिदा के पाउं चूमिये। ★ उन से आंखें हरगिज़ न मिलाइये। ★ धीमी आवाज़ में बात कीजिये। ★ उन की तीखी बातों पर सब्र कीजिये। ★ बह़स करने और उलझने से बचिये। ★ डांट बल्कि मार भी पड़े तो सब्र कीजिये। ★ उन का हर वोह ह़ुक्म जो मुवाफ़िक़े शरअ़ (शरीअ़त के मुत़ाबिक़) हो फ़ौरन बजा लाइये। ★ मानेए़ शरई न होने की सूरत में सास सुसर को भी इसी त़रह़ इ़ज़्ज़त व एह़तिराम दीजिये।

इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के तअ़ल्लुक़ से मियां-बीवी के दरमियान सुलूक कुछ इस त़रह़ हो : ★ एक दूसरे को जली कटी न सुनाइये ★ कडवा तीखा जवाब देने के बजाए सब्रो शुक्र से काम लीजिये। ★ ग़लत़ी अपनी हो तो मुआ़फ़ी मांगने में देर न कीजिये। ★ एक दूसरे के वालिदैन और ख़ानदान पर नुक्ता चीनी और उन्हें बुरा भला न कहिये। ★ किसी के सामने और तन्हाई में भी एक दूसरे की इ़ज़्ज़ते नफ़्स को मजरूह़ न कीजिये। ★ एक दूसरे की हौसला अफ़्ज़ाई कीजिये। ★ जाइज़ ता'रीफ़ में कन्जूसी न करें बल्कि कुशादा दिली के साथ ता'रीफ़ कीजिये।

बहन भाइयों में इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई का उसूल इस त़रह़ जारी रहे कि ★ बड़े बहन भाई से मां बाप जैसा बरताव रखिये। ★ छोटों पर शफ़्क़त व प्यार का हाथ रखिये। ★ छोटे बड़े सब आपस में आप जनाब से बात करें। ★ अल ग़रज़ घर के किसी भी फ़र्द के साथ हर उस मुआ़मले से बचें जिस में हतके इ़ज़्ज़त (या'नी किसी को रुस्वा व बदनाम करने) का मा'मूली सा भी पहलू निकलता हो। वसाइले बख़्शिश, सफ़ह़ा 331 पर येह शे'र भी है :

बड़े जितने भी हैं घर में अदब करता रहूं सब का
करूं छोटे बहन भाई पे शफ़्क़त या रसूलल्लाह

(अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

सुल्तानुल औलिया हुज़ूर ग़ौसुल आ'ज़म

अबू उ़बैद अ़त्तारी मदनी

एक क़ाफ़िला जीलान से बग़दाद की त़रफ़ रवां दवां था। जब येह क़ाफ़िला हमदान शहर से आगे बढ़ा और कोहिस्तानी सिल्सिले में दाख़िल हुवा तो डाकूओं के एक गुरौह ने इस क़ाफ़िले पर ह़म्ला कर के अहले क़ाफ़िला के मालो अस्बाब को लूटना शुरूअ़ कर दिया। क़ाफ़िले के हर फ़र्द पर ख़ौफ़े हिरास छाया हुवा था, किसी में हिम्मत न थी कि आगे बढ़ कर उन ख़ूंख़्वार लुटेरों का मुक़ाबला कर सके, उस क़ाफ़िले में लगभग 18 सालह एक ख़ूबरू नौ जवान भी था, जिस के चेहरे पर न ख़ौफ़ था न परेशानी की कोई अ़लामत, इत्मीनान व सुकून का नूर उस के चेहरे से छलक रहा था। एक राहज़न उस नौ जवान के पास आया और पूछने लगा : तुम्हारे पास भी कुछ है? नौ जवान बोला : मेरे पास चालीस दीनार हैं। राहज़न ने तेज़ लहजे में कहा : मज़ाक़ न करो, सच सच बताओ? नौ जवान ने कहा : मेरे पास वाक़ेई चालीस दीनार हैं येह देखो! मेरी बग़ल के नीचे दीनारों वाली थैली कपड़ों में सिली हुई है। राहज़न ने देखा तो ह़ैरान रह गया, फिर उस नौ जवान को अपने सरदार के पास ले गया और सारा वाक़िआ़ बयान किया। सरदार ने कहा : नौ जवान! क्या बात है लोग तो डाकूओं से अपनी दौलत छुपाते हैं, मगर तुम ने किसी दबाव के बिग़ैर ही अपनी दौलत ज़ाहिर कर दी? नौ जवान ने कहा : मेरी मां ने घर से चलते वक़्त मुझे नसीह़त फ़रमाई थी कि बेटा! हर ह़ाल में सच बोलना। बस! मैं अपनी वालिदा के साथ किया हुवा वा'दा निभा रहा हूं। नौ जवान का येह जुम्ला तासीर का तीर बन कर लुटेरों के सरदार के दिल में पैवस्त हो गया और उस की आंखों से आंसू छलकने लगे, उस का सोया हुवा मुक़द्दर जाग उठा, लिहाज़ा कहने लगा : साह़िब ज़ादे! तुम किस क़दर ख़ुश नसीब हो कि दौलत लुटने की परवा किये बिग़ैर अपनी वालिदा के साथ किये हुए वा'दे को निभा रहे हो और मैं किस क़दर ज़ालिम हूं कि अपने ख़ालिक़ व मालिक के साथ किये हुए वा'दे को पामाल कर रहा हूं और मख़्लूक़े ख़ुदा का दिल दुखा रहा हूं। येह कहने के बा'द वोह साथियों समेत सच्चे दिल से ताइब हो गया और लूटा हुवा सारा माल वापस कर दिया। (قلائد الجواہر، ص:ص9)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! 18 सालह येह ख़ूबरू नौ जवान कोई और नहीं हुज़ूर ग़ौसुल आ'ज़म ह़ज़रत शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه थे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه त़ब्क़ए औलिया के सरदार हैं, चमनिस्ताने सूफ़िया के महक्ते फूल हैं, उस नूरानी क़ाफ़िले के सिपह सालार हैं जिस का हर मुसाफ़िर वफ़ादार और क़ुदरत के राज़ों का पासदार है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की कुन्यत अबू मुह़म्मद, नाम अ़ब्दुल क़ादिर जब कि मुह़य्युद्दीन, मह़बूबे सुब्ह़ानी, ग़ौसे आ'ज़म, ग़ौसुस्सक़लैन वग़ैरा मश्हूर अल्क़ाबात हैं। ग़ौसिय्यत बुज़ुर्गी का एक ख़ास दरजा है, लफ़्ज़े ग़ौस के लुग़वी मा'ना हैं "फ़रियाद रस" या'नी फ़रियाद को पहुंचने वाला। चूंकि ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ग़रीबों, बे कसों और ह़ाजत मन्दों के मददगार हैं, इसी लिये आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ग़ौसे आ'ज़म के ख़िताब से सरफ़राज़ किया गया। अ़क़ीदत मन्द आप को **"पीराने पीर दस्तगीर"** के लक़ब से भी याद करते हैं। (ग़ौसे पाक के ह़ालात, स. 15, मुलतक़त़न)

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़द दरमियाना, बदन नह़ीफ़, सीना चौड़ा, दाढ़ी घनी, रंग गन्दुमी, गर्दन ऊंची, आंखें सियाह थीं जब कि अब्रू मिली हुई थीं। (نزہۃ الخاطر الفاتر، ص۱۹) हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म की विलादते बा सआ़दत यकुम रमज़ान 470 हिजरी को जीलान में हुई। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पहले दिन ही से रोज़ा रखा, चुनान्चे आप सह़री से ले कर इफ़्त़ारी तक अपनी वालिदए मोह़तरमा का दूध न पीते थे। (بہجۃ الاسرار، ص:171،172) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इब्तिदाई ता'लीम क़स्बा जीलान में ह़ासिल की, फिर मज़ीद ता'लीम के लिये सिने 488 हिजरी में बग़दाद तशरीफ़ लाए और अपने ज़माने के मा'रूफ़ असातिज़ा और अइम्मए फ़न से इक्तिसाबे फ़ैज़ किया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उ़लूमे कुरआन को रिवायत व दिरायत और तज्वीदो क़िराअत के असरारे रुमूज़ के साथ ह़ासिल किया और ज़माने के बड़े मुह़द्दिसीन और अहले फ़ज़्लो कमाल व मुस्तनद उ़लमाए किराम से ह़दीस को समाअ़त फ़रमा कर उ़लूम की इस शानदार त़रीक़े से तह़सील व तक्मील फ़रमाई कि अपने हमअ़स्र उ़लमा में नुमायां मक़ाम पा लिया बल्कि उन के भी मर्जअ़ बन गए। (نزہۃ الخاطر الفاتر، ۲۰ بتغیر) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तेरह (13) उ़लूम में तक़रीर फ़रमाया करते थे। एक जगह अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मद्रसए आ़लिय्या में लोग इन से मुख़्तलिफ़ उ़लूमो फ़ुनून पढ़ा करते थे।

दोपहर से पहले और बा'द दोनों वक़्त आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ लोगों को तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह, कलाम, उसूल और नह़्व पढ़ाते थे और ज़ोहर के बा'द मुख़्तलिफ़ क़िराअतों के साथ क़ुरआने मजीद पढ़ाते थे। (الطبقات الکبریٰ للشعرانی،۱/۱۷۹) बिलादे अ़जम से एक सुवाल आया कि एक शख़्स ने तीन त़लाक़ों की क़सम इस त़ौर पर खाई है कि वोह **अल्लाह** तआला की ऐसी इबादत करेगा कि जिस वक़्त वोह इबादत में मश्ग़ूल हो तो लोगों में से कोई शख़्स भी वोह इबादत न कर रहा हो, अगर वोह ऐसा न कर सका तो उस की बीवी को तीन त़लाक़ें हो जाएं, तो इस सूरत में कौन सी इबादत करनी चाहिये ? इस सुवाल से उ़लमाए इराक़ हैरानो शश्दर रह गए। और इस मस्अले को उन्हों ने हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की ख़िदमते अक़्दस में पेश किया तो आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने फ़ौरन इस का जवाब इर्शाद फ़रमाया कि वोह शख़्स मक्कए मुकर्रमा चला जाए और त़वाफ़ की जगह सिर्फ़ अपने लिये ख़ाली कराए और तन्हा सात मर्तबा त़वाफ़ कर के अपनी क़सम को पूरा करे। इस शाफ़ी जवाब से उ़लमाए इराक़ को निहायत ही तअ़ज्जुब हुवा क्यूंकि वोह इस सुवाल के जवाब से आ़जिज़ हो गए थे। (بہجۃ الاسرار،ص:226) आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का चालीस साल तक येह मा'मूल रहा कि इ़शा के लिये वुज़ू करते और पूरी रात इबादत में गुज़ार देते यहां तक कि उसी वुज़ू से सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ते। (بہجۃ الاسرار،ص:164) पन्दरह साल तक रात भर में एक क़ुरआने पाक ख़त्म करते रहे। (بہجۃ الاسرار،ص:118) आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का येह फ़रमान आज भी आप के करोड़ों अ़क़ीदत मन्दों और मुरीदों की तवज्जोह का मर्कज़ और मह़्वर है कि जो कोई मुसीबत में मुझ से फ़रियाद करे या मुझ को पुकारे तो मैं उस की मुसीबत को दूर कर दूंगा और जो कोई मेरे वसीले से **अल्लाह** तआला से अपनी ह़ाजत त़लब करेगा तो **अल्लाह** तआला उस की ह़ाजत को पूरा फ़रमा देगा। (بہجۃ الاسرار،ص:197) एक मर्तबा आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ से किसी ने पूछा कि शुक्र क्या होता है ? तो आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया कि शुक्र की ह़क़ीक़त येह है कि आ़जिज़ी करते हुए ने'मत देने वाले की ने'मत का इक़रार हो और इसी त़रह़ आ़जिज़ी करते हुए **अल्लाह** तआला के एह़सान को माने और अपना येह ज़ेहन बनाए कि शुक्र करने का ह़क़ अदा नहीं कर पाया। (بہجۃ الاسرار،ص:234) आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने 11 रबीउ़स्सानी 561 हिजरी में 91 बरस की उ़म्र में बग़दाद शरीफ़ में इन्तिक़ाल फ़रमाया। आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का मज़ारे पुर अन्वार आज भी बग़दादे मुअ़ल्ला में मर्जए ख़लाइक़ है। (الطبقات الکبریٰ للشعرانی،۱/۱۷۸)

इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

मिस्वाक शरीफ़ के फ़ज़ाइल पर 10 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ **मिस्वाक** कर के **दो**[2] रक्अ़तें पढ़ना बिग़ैर **मिस्वाक** की 70 रक्अ़तों से अफ़्ज़ल है[1] ﴾2﴿ **मिस्वाक** के साथ नमाज़ पढ़ना बिग़ैर **मिस्वाक** के नमाज़ पढ़ने से 70 गुना अफ़्ज़ल है[2] ﴾3﴿ चार चीज़ें रसूलों की सुन्नत हैं : (1) इ़त्र लगाना (2) निकाह़ करना (3) **मिस्वाक** करना और (4) ह़या करना[3] ﴾4﴿ **मिस्वाक** करो ! **मिस्वाक** करो ! मेरे पास **पीले दांत** ले कर न आया करो[4] ﴾5﴿ **मिस्वाक** में मौत के सिवा हर मरज़ से शिफ़ा है[5] ﴾6﴿ अगर मुझे अपनी उम्मत की मशक़्क़त व दुश्वारी का ख़याल न होता तो मैं इन को हर वुज़ू के साथ **मिस्वाक** करने का हुक्म देता[6] ﴾7﴿ **मिस्वाक** का इस्ति'माल अपने लिये लाज़िम कर लो क्यूंकि इस में मुंह की सफ़ाई है और येह रब तआला की रिज़ा का सबब है[7] ﴾8﴿ वुज़ू निस्फ़ (या'नी आधा) ईमान है, और **मिस्वाक** करना निस्फ़ (या'नी आधा) वुज़ू है[8] ﴾9﴿ बन्दा जब **मिस्वाक** कर लेता है फिर नमाज़ को खड़ा होता है तो फ़िरिश्ता उस के पीछे खड़ा हो कर क़िराअत सुनता है, फिर उस से क़रीब होता है यहां तक कि अपना मुंह उस के मुंह पर रख देता है[9] ﴾10﴿ ''जिस शख़्स ने जुमुए के दिन ग़ुस्ल किया और **मिस्वाक** की, ख़ुश्बू लगाई, उ़म्दा कपड़े पहने, फिर मस्जिद में आया और लोगों की गर्दनों को नहीं फलांगा, बल्कि नमाज़ पढ़ी और इमाम के आने के बा'द (या'नी ख़ुत्बे में और) नमाज़ से फ़ारिग़ होने तक ख़ामोश रहा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के तमाम गुनाहों को जो उस पूरे हफ़्ते में हुए थे, मुआ़फ़ फ़रमा देता है।''

(مُسندِ احمد بن حنبل ج٤ ص١٦٢ حدیث١١٧٦٨) (मिस्वाक शरीफ़ के फ़ज़ाइल, स. 2, अज़ अमीरे अहले सुन्नत)

١: اَلتَّرغِیب وَالتَّرهِیب ج١ ص١٠٢ حدیث١٨ ٢: شعب الایمان ج٣ ص٢٦ حدیث٢٧٧٤ ٣: مُسندِ احمد بن حنبل ج٩ ص١٤٧ حدیث٢٣٦٤١
٤: جَمعُ الجَوامِع ج١ ص٣٨٩ حدیث٢٨٧٥ ٥: جامعِ صغیر ص٢٩٧ حدیث٤٨٤٠ ٦: بُخاری ج١ ص٦٣٧ ٧: مُسندِ احمد بن حنبل ج٢ ص٤٣٨ حدیث٥٨٦٩
٨: مُصَنَّف ابنِ اَبی شیبہ ج١ ص١٩٧ حدیث٢٢ ٩: البحر الزخار ج٢ ص٢١٤ حدیث:٦٠٣

इस्लाम की रोशन ता'लीमात

बड़ों का एह़तिराम कीजिये

मुह़म्मद अ़दनान चिश्ती अ़त्तारी मदनी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारा प्यारा दीन ''इस्लाम'' ता'लीम देता है कि जो उ़म्र और मक़ामो मर्तबे में छोटा हो, उस के साथ शफ़्क़तो महब्बत का बरताव करें और जो इ़ल्म, उ़म्र, ओ़हदे और मन्सब में हम से बड़े हैं, उन का अदबो एह़तिराम बजा लाएं। हमारे बड़ों में मां बाप, चचा ताया, ख़ालू, मामूं, बड़े बहन भाई दीगर रिश्तेदारों, असातिज़ा, पीरो मुर्शिद, उ़लमा व मशाइख़ और तमाम ज़ी मर्तबा लोग शामिल हैं। ज़िन्दगी भर किसी न किसी त़रह़ हमारा अपने बड़ों से राबित़ा ज़रूर रहता है, इस लिये ज़रूरी है कि हम उन का अदबो एह़तिराम करें। इन के अदबो एह़तिराम का ह़ुक्म ख़ुद हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यूं इर्शाद फ़रमाया : وَقِّرِ الْكَبِيْرَ وَارْحَمِ الصَّغِيْرَ تُرَافِقْنِيْ فِي الْجَنَّة या'नी बड़ों की ता'ज़ीमो तौक़ीर करो और छोटों पर शफ़्क़त करो, तुम जन्नत में मेरी रफ़ाक़त पा लोगे। (شعب الایمان، ۷/۴۵۸، حدیث:۱۰۹۸۱، بیروت) दूसरी रिवायत में है : तुम अपनी मजालिस को बूढ़े की उ़म्र, आ़लिम के इ़ल्म और सुल्त़ान के ओ़हदे की वज्ह से कुशादा कर दिया करो। (کنزالعمال، ۹/۶۶، حدیث:۲۵۴۹۵، بیروت) मा'लूम हुवा बड़ों की इ़ज़्ज़तो ता'ज़ीम और अदबो एह़तिराम बाइ़से नजात और जन्नत में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त पाने का एक ज़रीआ़ है। वालिदैन के अदबो एह़तिराम के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** वालों का कितना प्यारा अन्दाज़ हुवा करता था जैसा कि ह़ज़रते इमाम इब्ने शहाब ज़ोहरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه अपनी वालिदा के बहुत फ़रमां बरदार थे, मगर इस के बा वुजूद अपनी वालिदा ह़ज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के साथ खाना तनावुल नहीं फ़रमाते थे। किसी ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से इस का सबब दरयाफ़्त किया तो इर्शाद फ़रमाया : मैं अम्मीजान के साथ इस ख़ौफ़ की वज्ह से खाना नहीं खाता कि कहीं ऐसा न हो किसी चीज़ पर उन की नज़र पहले पड़ जाए और मैं अन्जाने में वोह चीज़ उन से पहले खा कर उन का ना फ़रमान हो जाऊं। (بر الوالدین لابن جوزی، ص۵۳، رقم:۶۶، بیروت) मां बाप का अदबो एह़तिराम और उन की ख़िदमत करना यक़ीनन बड़ी सआ़दत मन्दी है। हमारे ह़क़ में उन के दिल से निकली हुई दुआ़ हमारी दुन्या व आख़िरत संवार सकती है।

इसी त़रह़ क़रीबी रिश्तेदारों से सिलए रेह़मी और उन का एह़तिराम यक़ीनन बाइ़से सआ़दत है कि ह़दीसे पाक में उन से सिलए रेह़मी करने पर उ़म्र में इज़ाफ़ा और रिज़्क़ में वुस्अ़त (या'नी ज़ियादती) की बिशारत है। (الترغیب والترہیب، ج۳، ص۲۱۷، حدیث:۱۶، بیروت) हर मुसलमान को चाहिये कि अपने रिश्तेदारों के साथ साथ हर मुसलमान का अदबो एह़तिराम करे, इन्हें तक्लीफ़ पहुंचाने से बचे

कि हमारे प्यारे मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "आपस में एक दूसरे से क़त्अ़ तअ़ल्लुक़ी न करो, पीठ न फेरो, बुग़्ज़ न रखो, ह़सद न करो और ऐ बन्दगाने ख़ुदा ! आपस में भाई भाई बन जाओ, किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि वोह अपने भाई से तीन[3] दिन से ज़ियादा क़त्अ़ तअ़ल्लुक़ रखे।" (ترمذی، ۳/۳۷۶، حدیث:۱۹۴۲)

दीने इस्लाम उस्ताद के अदबो एह़तिराम का भी हुक्म देता है। ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : مَنْ لَّا اَدَبَ لَهٗ لَا عِلْمَ لَهٗ या'नी जो बे अदब हो, वोह इल्म से बहरा मन्द नहीं हो सकता। (المنبہات، ص۱۳ پشاور) इसी लिये बुज़ुर्गाने दीन अपने उस्तादों का बेह़द अदबो एह़तिराम करते थे। उन की मौजूदगी में निगाहें झुकाए, हमातन गोश हो कर इल्म ह़ासिल करते। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की इल्मी मजलिस की ता'रीफ़ करते हुए एक क़ुरैशी से फ़रमाया : मस्जिदे नबवी में चले जाओ, वहां एक ह़ल्क़े में लोग हमातन गोश हो कर यूं बा अदब बैठे होंगे गोया उन के सरों पर परन्दे बैठे हैं, जान लेना येही ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह** ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की मजलिस है। नीज़ उस ह़ल्क़े में मज़ाक़ मस्ख़री नाम की कोई शै न होगी।

(تاریخ ابن عساکر، ۱۴/۱۷۹ المختصا بیروت)

याद रखिये ! पीरो मुर्शिद की ता'ज़ीमो तौक़ीर और इन का अदबो एह़तिराम भी हर मुरीद पर लाज़िम है। वालिदैन, असातिज़ा और बड़े भाई का मक़ाम और इन की अहम्मिय्यत भी अपनी जगह मगर पीरो मुर्शिद वोह हस्ती है कि जिस की सोह़बत दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा उजागर करती नीज़ बात़िन की सफ़ाई, गुनाहों से बेज़ारी, आ'माले सालिह़ा में इज़ाफ़ा और सलामतिये ईमान के लिये फ़िक्रमन्द रहने की सोच फ़राहम करती है। लिहाज़ा मुरीद को चाहिये कि अपने मुर्शिद से फ़ैज़ पाने के लिये पैकरे अदब बना रहे कि ह़ज़रते ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब कोई मुरीद अदब का ख़याल नहीं रखता, तो वोह लौट कर वहीं पहुंच जाता है जहां से चला था। (رسالہ قشیریہ، ص۳۱۹ بیروت) याद रहे ! बुज़ुर्गों का अदब करने वाला न सिर्फ़ मुआ़शरे में मुअ़ज़्ज़ज़ समझा जाता है बल्कि बा'ज़ अवक़ात बड़ों के अदबो एह़तिराम के सबब उस की बख़्शिश व मग़्फ़िरत भी हो जाती है, चुनान्चे एक मर्तबा एक शख़्स दरिया के किनारे पर बैठा वुज़ू कर रहा था, इसी दौरान लाखों ह़म्बलियों के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रत इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه वहां तशरीफ़ लाए और उस से कुछ फ़ासिले पर बैठ कर वुज़ू करने लगे, जब उस शख़्स ने देखा कि जिस त़रफ़ मेरे वुज़ू का ग़साला (धोवन) बह रहा है, उस त़रफ़ तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के एक मुक़र्रब वली बैठ कर वुज़ू फ़रमा रहे हैं, तो उस के दिल ने येह बात गवारा न की और वोह उठ कर ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दूसरी त़रफ़ जा कर बैठ गया, जहां से उन के वुज़ू का मुस्ता'मल पानी उस की त़रफ़ आ रहा था, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली के अदबो एह़तिराम का सिला उस शख़्स को यूं मिला कि जब उस का इन्तिक़ाल हुवा और किसी ने उसे ख़्वाब में देख कर ह़ाल दरयाफ़्त किया तो उस ने बताया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने वली ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के अदब की बरकत से मुझे बख़्श दिया। (تذکرۃ الاولیاء، ۱/۱۹۶) यक़ीनन जो लोग बड़ों की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत को तस्लीम करते हुए दिल से उन का अदबो एह़तिराम करते हैं तो लोगों के दिलों में उन की मह़ब्बत पैदा हो जाती है और ऐसे बा अदब लोग मुआ़शरे में इ़ज़्ज़तो वक़ार की निगाह से देखे जाते हैं।

मक्तूबाते अमीरे अहले सुन्नत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मक्तूबात से इन्तिख़ाब

सब्र की अहमिय्यत और उस के फ़ज़ाइल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सगे मदीना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** عُفِیَ عَنْهُ की जानिब से ह़ाजियानी.... अ़त्तारिय्या की ख़िदमत में मक्कए मुकर्रमा की महकी महकी फ़ज़ाओं को चूमता हुवा, का'बए मुशर्रफ़ा के गिर्द घूमता हुवा, तल्क़ीने सब्र से लबरेज़ मग़मूम सलाम :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ عَلٰى كُلِّ حَال

ग़मे रोज़गार में तो मेरे अश्क बह रहे हैं
तेरा ग़म अगर रुलाता तो कुछ और बात होती

अह़ादीसे मुबारका में येह मज़ामीन मौजूद हैं : (1) साबिरीन बे ह़िसाब दाख़िले जन्नत होंगे । (2) सब्र अव्वल सदमे पर होता है बा'द में तो सब्र आ ही जाता है । (या'नी सदमा आते ही फ़ौरन सब्र करने में कामयाब हो जाए जभी ह़क़ीक़ी सब्र है वरना रफ़्ता रफ़्ता ग़म दूर हो ही जाता है और जब ग़म ही दूर हो गया तो सब्र कैसा !) (3) जब जब बीता हुवा सदमा याद आने पर اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम **अल्लाह** के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना) पढ़ें तो अव्वल सदमे पर सब्र करने का सवाब मिलता है ।

सब्र की ता'रीफ़ : ज़बान गुंग और आंखें फटी की फटी रह जाएं । (येह सब्र की कैफ़िय्यत की मिसाल है, वाक़ेई जब कोई बड़ी ग़म की ख़बर सुने और बन्दा दांत पीस कर ज़ब्त कर ले तो इसी त़रह़ की कैफ़िय्यत होती है, लोगों की हम दर्दियां ह़ासिल करने, उन से तसल्लियां चाहने वग़ैरा के लिये अपनी मुसीबत का तज़्किरा "सब्र" की ता'रीफ़ से ख़ारिज है ।)

बहरह़ाल बन्दा बे बसो लाचार हो जाता है, मुसीबत आने पर शैत़ान उस को अक्सर सब्र के अज्र से मह़रूम करने में कामयाब रहता है । मुसीबत की आमद पर जहां बे सब्री के बाइ़स अज्रो सवाब का नुक़्सान होता है वहीं "कुफ़्ले मदीना"[1] भी खुल जाता है । हर एक को अपनी परेशानी की तफ़्सील बताता फिरता है और यूं न जाने आख़िरत का कितना बड़ा नुक़्सान कर बैठता है । न आफ़त कोई नई चीज़ न ही किसी की मौत की ख़बर तअ़ज्जुब अंगेज़ । येह तो दुन्या की ज़िन्दगी के रोज़मर्रा के मा'मूलात हैं, दूसरे की मौत की ख़बर सुनने वाले की मौत की ख़बर भी बिल आख़िर मुश्तहर हो ही जाती है । दूसरों को "मर्ह़ूम" कहने वाला भी बिल आख़िर "मर्ह़ूम" का लक़ब पा ही लेता है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपना फ़ज़्लो करम फ़रमाए । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّم

येह सारी तम्हीद इस लिये बांधनी पड़ी कि बाबुल मदीना (कराची) से फ़ोन पर येह इत्तिलाअ़ मौसूल हुई है कि "आप के वालिदे गिरामी मुह़म्मद यूनुस अ़त्तारी आज सुब्ह़ ग्यारह बजे वफ़ात पा गए हैं ।" जी हां ! जिस्मानी वालिद चल बसे मगर ता दमे तह़रीर रूह़ानी बाप ज़िन्दा है । सब्र सब्र और सब्र से काम लें, दुआए मग़्फ़िरत व ईसाले सवाब करें । मैं बशर्ते क़बूले ह़ज (1422 सि.हि.) और गुज़श्ता ज़िन्दगी की तमाम नेकियां वालिदे मर्ह़ूम को ईसाल कर चुका हूं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मर्ह़ूम को ग़रीक़े रह़मत करे, मग़्फ़िरत फ़रमाए और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब करे । आप को और तमाम अहले ख़ानदान को सब्र अ़त़ा करे ।

मदनी मश्वरा : अगर जज़्बात क़ाबू में रह सकें तो ज़बान से कहने के बजाए "क़ाफ़िलए चल मदीना" की इस्लामी बहनों को मेरा येही "ता'ज़ियत नामा" पढ़ा दें या पढ़ कर कोई सुना दे, वत़न जा कर भी येही करें तो मदीना मदीना ।

मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी
14 जुल ह़िज्जतिल ह़राम 1422 सि.हि.

1 : "कुफ़्ले मदीना" दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में बोली जाने वाली एक इस्तिलाह़ है । किसी भी उ़ज़्व को गुनाह और फ़ुज़ूलिय्यात से बचाने को "कुफ़्ले मदीना" लगाना कहते हैं ।

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا

मुहम्मद खुर्रम शहज़ाद अत्तारी मदनी

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का शुमार तारीख़ की उन नामवर हस्तियों में होता है जो ग़रीब परवरी, मिस्कीन नवाज़ी, रहम दिली, सख़ावत और फ़य्याज़ी जैसे औसाफ़ में निहायत बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ हैं। सख़ी और फ़य्याज़ तबीअ़त नीज़ यतीमों और मिस्कीनों के साथ मेहरबानी और शफ़क़त के साथ पेश आने और उन्हें कसरत से खाना खिलाने के बाइस आप का लक़ब ही उम्मुल मसाकीन (मिस्कीनों की मां) मश्हूर हो गया था। हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अहमद बिन मुहम्मद क़स्तलानी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ''وَكَانَتْ تُدْعٰى فِي الْجَاهِلِيَّةِ اُمَّ الْمَسَاكِيْنَ لِاِطْعَامِهَا اِيَّاهُمْ'' या'नी मसाकीन को खाना खिलाने के बाइस ज़मानए जाहिलिय्यत में ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को उम्मुल मसाकीन के लक़ब से पुकारा जाने लगा था।'' (المواہب اللدنیہ، ۱/۴۱۱)

नाम व नसब : आप का नाम ज़ैनब है। कहते हैं कि ज़ैनब एक ख़ूब सूरत और ख़ुश्बूदार दरख़्त का नाम है, इसी निस्बत से औ़रतों का येह नाम रखा जाता है। (تہذیب اللغہ، ۱۳/۲۳۰)

आप के वालिद खुज़ैमा बिन हारिस हैं। हज़रते मुज़र رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ में जा कर आप का नसब सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब शरीफ़ से मिल जाता है। इस लिये आप कुरैशी हैं।

निकाह़ : सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हिबालए अ़क़्द में आने से पहले असह़्ह़ क़ौल के मुताबिक़ आप हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ के साथ रिश्तए इज़्दिवाज में मुन्सलिक थीं। (المواہب اللدنیہ، ۱/۴۱۱) येह रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फूफीज़ाद भाई हैं और क़दीमुल इस्लाम सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان में शामिल हैं जो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दारे अरक़म (मक्कए मुकर्रमा) में तशरीफ़ ले जाने से पहले इस्लाम ले आए थे। ग़ज़्वए बद्र व उह़ुद में शिर्कत की और उह़ुद में ही जामे शहादत नोश फ़रमाया। (اسد الغابہ، ۳/۱۹۵)

ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की शहादत के बा'द आप ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत का शरफ़ पाया और उम्मुल मोमिनीन के आ'ला मक़ाम पर फ़ाइज़ हुईं। उस वक़्त ह़रमे नबवी में तीन[3] अज़्वाजे मुत़ह्हरात ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा, ह़ज़रते सौदा और ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ पहले से मौजूद थीं जब कि ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का कमोबेश छे[6] बरस पहले इन्तिक़ाल हो चुका था। रिवायत में है कि जब सरकारे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें निकाह़ का पैग़ाम दिया तो इन्हों ने अपना मुआ़मला आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के

सिपुर्द कर दिया, फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन से निकाह़ फ़रमा लिया और साढ़े बारह ऊक़िया महरे निकाह़ मुक़र्रर फ़रमाया। (طبقات ابن سعد، ۹۱/۸)

आप उन सह़ाबियात में से हैं, जिन्हों ने अपनी जानें **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये हिबा कर दी थीं और उन के बारे में **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई :

﴿تُرْجِیْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَ تُـْٔوِیْۤ اِلَیْكَ مَنْ تَشَآءُ ؕ وَ مَنِ ابْتَغَیْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْكَ﴾ (پ۲۲، الاحزاب: ۵۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : पीछे हटाओ इन में से जिसे चाहो और अपने पास जगह दो जिसे चाहो और जिसे तुम ने किनारे कर दिया था उसे तुम्हारा जी चाहे तो उस में भी तुम पर कुछ गुनाह नहीं।

चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ में उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से रिवायत है, फ़रमाती हैं कि मैं उन औ़रतों पर ग़ैरत करती थी जो अपनी जानें **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बख़्श देती थीं। मैं कहती थी : क्या औ़रत अपनी जान बख़्शती है ? फिर जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह (या'नी मज़्कूरा बाला) आयत उतारी तो मैं ने अ़र्ज़ किया कि मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रब को नहीं देखती मगर वोह आप की ख़्वाहिश पूरी करने में जल्दी फ़रमाता है। (بخاری، ۳۰۳/۳، حدیث: ۴۷۸۸)

सफ़रे आख़िरत : प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत में आने के फ़क़त आठ[8] माह बा'द ही रबीउ़ल आख़िर चार[4] हिजरी में आप ने दाइये अजल को लब्बैक कहा और अपने आख़िरत के सफ़र का आग़ाज़ फ़रमाया। उस वक़्त आप की उ़म्र मुबारक 30 बरस थी। (زرقانی علی المواهب، ۴۱۸/۴) सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और तदफ़ीन की। (طبقات ابن سعد، ۹۲/۸)

वाज़ेह़ रहे कि अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ में से सिर्फ़ दो[2] अज़्वाज ऐसी हैं, जिन्हों ने प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में इन्तिक़ाल फ़रमाया :

(1)... **उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا : इन्हों ने ए'लाने नुबुव्वत के दसवें साल माहे रमज़ानुल मुबारक में इन्तिक़ाल फ़रमाया। (مدارج النبوت، ۴۶۵/۲) इन की तदफ़ीन मक्कए मुकर्रमा में वाक़ेअ़ ह़जून के मक़ाम पर हुई जो अहले मक्का का क़ब्रिस्तान है। अब इसे **जन्नतुल मा'ला** कहा जाता है।

(2)... **उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا : इन का इन्तिक़ाल मदीनए मुनव्वरा में हुवा और **जन्नतुल बक़ीअ़** शरीफ़ में तदफ़ीन हुई। (طبقات ابن سعد، ۹۲/۸) इन से पहले जब ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का इन्तिक़ाल हुवा था, उस वक़्त नमाज़े जनाज़ा का हुक्म नहीं आया था, इस लिये उन पर जनाज़े की नमाज़ नहीं पढ़ी गई। (فتاوا رضویہ، 9/369) लिहाज़ा अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ में से सिर्फ़ आप को येह ए'ज़ाज़ ह़ासिल है कि ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर्चे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने बहुत कम अ़र्सा सरकारे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोह़बते बा बरकत में गुज़ारा, जिस की वज्ह से आप के ह़ालाते ज़िन्दगी भी बहुत कम मन्क़ूल हैं, लेकिन आप का लक़ब ही आप की पाकीज़ा ह़यात की अ़क्कासी करता है। जिस से मा'लूम होता है कि आप का दिल ग़रीबों और मिस्कीनों की मह़ब्बत से लबरेज़ था और इन की मदद व इआ़नत आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का मह़बूब अ़मल था। आप की सीरत को मश्अ़ले राह बनाते हुए हमें भी फ़ुक़रा और मसाकीन के साथ मेह़रबानी व एह़सान के साथ पेश आना चाहिये और सदक़ा व ख़ैरात में ख़ूब कोशिश करनी चाहिये। **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त हमें इस की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मदनी क्लीनिक

सफ़ाई सुथराई की अहम्मिय्यत व ज़रूरत

काशिफ़ शहज़ाद अ़त्तारी मदनी

हमारे प्यारे दीन "**इस्लाम**" में सफ़ाई सुथराई को भी बहुत अहम्मिय्यत हासिल है। हमारे आक़ा हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सरापा त़हारत व नज़ाफ़त का नुमूना थे। बदन तो बदन, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कपड़ों पर भी कभी मख्खी नहीं बैठी, न कपड़ों में कभी जूएं पड़ीं। मख्खियों की आमद, जूओं का पैदा होना चूंकि गन्दगी बदबू वग़ैरा की वज्ह से हुवा करता है और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चूंकि हर क़िस्म की गन्दगियों से पाक और जिस्मे अत़्हर खुश्बूदार था इस लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन चीज़ों से महफ़ूज़ रहे। (सीरते मुस्त़फ़ा, स. 566 मुलख़्ख़सन) (जो शख़्स) आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिबासे मुबारक को गन्दा और मैला बताए, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाख़ुन बड़े बड़े कहे येह सब कुफ़्र है।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 207)

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

मैल से किस दरजे सुथरा है वोह पुतला नूर का
है गले में आज तक कोरा ही कुरता नूर का

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 244)

मुतअ़द्दद अह़ादीसे मुबारका में सफ़ाई की अहम्मिय्यत को बयान किया गया है। हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह तआ़ला** पाक है, पाकी पसन्द फ़रमाता है, सुथरा है, सुथरा पन पसन्द फ़रमाता है लिहाज़ा तुम अपने सेहन साफ़ रखो और यहूद से मुशाबहत न करो। (ترمذی، 4/325، حدیث:2808) **अल्लाह तआ़ला** बन्दे की ज़ाहिरी बात़िनी पाकी पसन्द फ़रमाता है, बन्दे को चाहिये कि हर त़रह़ पाक रहे, जिस्म, नफ़्स, रूह, लिबास, बदन, अख़्लाक़ ग़रज़ कि हर चीज़ को पाक साफ़ रखे, अक़्वाल, अफ़्आ़ल, अह़वाल अ़क़ाइद सब दुरुस्त रखे। (**अपने सेहन साफ़ रखो**) या'नी अपने घर तक साफ़ रखो, लिबास बदन वग़ैरा की सफ़ाई तो बहुत ही ज़रूरी है घर भी साफ़ रखो वहां कूड़ा जाला वग़ैरा न होने दो। हर त़रह़ की सफ़ाई इस्लाम ने ही सिखाई है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 192 मुलख़्ख़सन)

इस्लाम में जुमुअ़तुल मुबारक का दिन खुसूसी अहम्मिय्यत का ह़ामिल है, इस लिये नमाज़े जुमुआ़ के लिये गुस्ल करने और तेल ख़ुश्बू वग़ैरा के इस्ति'माल की अह़ादीस में खुसूसी तरग़ीब दिलाई गई है। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैल दूर करने के लिये येह (गुस्ल करना) बि ऐनिही मत़्लूबे शरअ़ (बज़ाते ख़ुद शरीअ़त को दरकार) है। दीन की बुन्याद ही नज़ाफ़त पर है और जुमुआ़ के दिन गुस्ल के हुक्म की ह़िक्मत येही है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 2, स. 61)

एक ह़दीस में बिल ख़ुसूस मुंह की सफ़ाई की ताकीद करते हुए फ़रमाया गया : طَيِّبُوْا اَفْوَاهَكُمْ بِالسِّوَاكِ فَاِنَّهَا طُرُقُ الْقُرْاٰن **तर्जमा :** अपने मुंह को मिस्वाक के ज़रीए साफ़ रखो क्यूंकि येह कुरआन का रास्ता हैं। (شعب الایمان، 2/382، حدیث:2119) जब कि एक रिवायत में फ़रमाया : उम्मत के मशक़्क़त में पड़ने का ख़याल न होता तो मैं हर नमाज़ के वक़्त उन को मिस्वाक का हुक्म देता। (بخاری، 1/307، حدیث:887)

मुजद्दिदे आ'ज़म इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ह़दीसे सिवाक (मिस्वाक वाली ह़दीसे पाक) का सबब येह है कि लोग मैले कुचैले दांतों के साथ **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आए तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मिस्वाक किया करो और मेरे पास मैले कुचैले दांतों के साथ मत आया करो, अगर मुझे उम्मत की मशक़्क़त का लिहाज़ न होता तो मैं इन पर हर नमाज़ के वक़्त फ़र्ज़ कर देता। (फ़तावा रज़विय्या, 30/557)

त़िब्बी ए'तिबार से सफ़ाई की अहम्मिय्यत

अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सफ़ाई सुथराई की आ़दत डालना न सिर्फ़ अज्रो सवाब के ह़ुसूल का बाइस है बल्कि इस के मुतअ़द्दद दुन्यवी फ़वाइद भी हैं। इस के बर अ़क्स गन्दगी और आलूदगी न सिर्फ़ इस्लामी नुक़्त़ए नज़र से ना पसन्दीदा चीज़ है बल्कि दुन्यवी ए'तिबार से भी इस के कसीर नुक़्सानात हैं। सफ़ाई का ख़याल न रखने के बाइस कसीर बीमारियां लाह़िक़ हो सकती हैं मसलन डाएरिया, टाइफ़ोइड, टीबी और जिल्दी बीमारियां ख़ारिश वग़ैरा।

सफ़ाई की दो अक़्साम की जा सकती हैं :

ज़ाती सफ़ाई : अपने जिस्म और लिबास वग़ैरा को साफ़ सुथरा रखना मुतअ़द्दद बीमारियों से बचाने के साथ साथ इन्सान की शख़्सिय्यत को पुर कशिश बनाता और ए'तिमादो वक़ार में इज़ाफ़ा करता है। इस के बर अ़क्स गन्दे लिबास और मैले जिस्म के ह़ामिल अफ़्राद को न सिर्फ़ ह़क़ारत की निगाह से देखा जाता और लोग उन से घिन खाते हैं बल्कि ऐसे लोगों में खुद ए'तिमादी की कमी भी पाई जाती है। जिस्म व लिबास के इलावा अपनी सुवारी, मोबाइल फ़ोन, लेपटॉप (Laptop), टेबलेट पीसी (Tablet PC), चप्पल, जुराबें, इ़मामा, चादर, टोपी, रुमाल, घड़ी, क़लम, बेग वग़ैरा इस्ति'माली अश्या को भी साफ़ सुथरा रखा जाए और जिन चीज़ों को धोना मुम्किन हो वक़्ते मुनासिब पर धोया जाए।

हाथ पाउं के नाखुन हफ़्ते में एक मर्तबा ज़रूर काटें वरना इन में मैल जम्अ़ होता और जरासीम परवरिश पाते हैं जो खाने के ज़रीए पेट में जा कर मुख़्तलिफ़ बीमारियों मसलन डाएरिया, हैज़ा वग़ैरा का बाइ़स बन सकते हैं। दांतों की सफ़ाई का भी ख़ास एहतिमाम रखें। सुन्नत के मुत़ाबिक़ मिस्वाक करें। खाने के बा'द दांतों में ख़िलाल करने का मा'मूल बनाएं। खाने से पहले और बा'द अच्छी त़रह़ हाथ धोएं। कानों की सफ़ाई का भी मुनासिब एहतिमाम करें लेकिन इस के लिये माचिस की तीली का इस्ति'माल ख़त़रनाक साबित हो सकता है। इस मक़्सद के लिये अपने कान किसी अ़त़ाई डॉक्टर को पेश करना भी ख़त़रे से ख़ाली नहीं कि इस त़रह़ लेने के देने पड़ सकते हैं।

जिस से बन पड़े वोह रोज़ाना नहाए कि काफ़ी ह़द तक बदन की बाहरी बदबू ज़ाइल होगी और येह सिह़्ह़त के लिये भी मुफ़ीद है। दाढ़ी में अक्सर ग़िज़ाई अज्ज़ा अटक जाते हैं, सोने में बा'ज़ अवक़ात मुंह की बदबूदार राल भी दाख़िल हो जाती है और इस त़रह़ बदबू आती है लिहाज़ा दिन में एक मर्तबा साबुन से दाढ़ी धो लेना मुनासिब है। यूं ही सर के बाल भी वक़्तन फ़ वक़्तन धोते रहिये।

माह़ोल की सफ़ाई : बिल ख़ुसूस अपने घर के मत़्बख़ (Kitchen) और बैतुल ख़ला की सफ़ाई का भी एहतिमाम रखें। बेहतर येह है कि सफ़ाई का शिड्यूल बना लें कि किन चीज़ों की रोज़ाना, किन की हफ़्तावार और किन की माहाना सफ़ाई करनी है मसलन फ़्रीज, पंखों और एनर्जी सेवरों की सफ़ाई महीने में एक दफ़्आ़, दरवाज़ों अलमारियों वग़ैरा की हफ़्तावार वग़ैरा। वक़्तन फ़ वक़्तन घर के ज़ेरे ज़मीन और ऊपरी वॉटर टेंक की सफ़ाई भी निहायत ज़रूरी है। सिह़्ह़त मन्द रहने के लिये साफ़ पानी का इस्ति'माल निहायत अहम्मिय्यत रखता है, पानी उबाल कर पीना इस सिल्सिले में मुफ़ीद हो सकता है। माह़ोल की सफ़ाई सिर्फ़ अपने घर तक ही महदूद नहीं बल्कि अपनी गली, मह़ल्ले, दफ़्तर, मस्जिद, अ़वामी सुवारी मसलन बस ट्रेन वग़ैरा की सफ़ाई भी इस में शामिल है। अपने घर को साफ़ कर के तमाम कचरा गली मह़ल्ले में डाल देना नीज़ अपने सेहन को धो कर गली में पानी खड़ा कर देना कि पड़ोसियों और राहगीरों को तक्लीफ़ पहुंचे, यक़ीनन एक ना पसन्दीदा अ़मल है जो दूसरों के लिये तक्लीफ़ का बाइ़स भी बनता है।

बच्चों की तरबियत : अपने बच्चों को भी इब्तिदा ही से सफ़ाई की तरबियत दी जाए, खाने से पहले और बा'द हाथ धोने की मश्क़ कराई जाए और कम अज़् कम रात सोने से पहले और बेदार होने पर दांत साफ़ करने की आ़दत डाली जाए। खुलासा येह है कि अपने जिस्म बिल ख़ुसूस हाथों, सर और दाढ़ी के बालों, दांतों, लिबास, सुवारी, चप्पल वग़ैरा की और अपने अत़राफ़ बिल ख़ुसूस घर, दफ़्तर, सुवारी, सीढ़ियों, गली मह़ल्ला, मुलाज़मत के मक़ाम, बाग़ीचा, सेहन, दालान वग़ैरा की सफ़ाई पर भरपूर तवज्जोह देनी चाहिये।

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें अच्छी निय्यत के साथ ज़ाहिरी सफ़ाई का एहतिमाम करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और इस की बरकत से हमारे बात़िन को भी साफ़ सुथरा फ़रमा।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَسَلَّم

ता'ज़ियत व इयादत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने सूरी (Video) और सौती (Audio) पैग़ामात के ज़रीए दुख्यारों और ग़मज़दों से ता'ज़ियत और बीमारों से इ़यादत फ़रमाते रहते हैं, उन में से मुन्तख़ब पैग़ामात पेश किये जा रहे हैं।

अमीरे अहले सुन्नत का पैग़ामे ता'ज़ियत

ख़लीफ़ए मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द, शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मरातिब अ़ली शाह चिश्ती रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (आस्तानए आ़लिय्या सलहूके शरीफ़ तह़सील वज़ीरआबाद ज़िल्अ़ गुजरांवाला पंजाब) के विसाले पुर मलाल पर लवाह़िक़ीन व मुरीदीन से अपने सूरी पैग़ाम (Video Message) के ज़रीए ता'ज़ियत करते हुए इर्शाद फ़रमाया :

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ وَنُسَلِّمُ عَلٰى رَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْكَرِيْم!

हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रत मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان और शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रत ख़्वाजा क़मरुद्दीन सियालवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي के ख़लीफ़ए मजाज़ और मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान ह़ज़रत मौलाना सरदार अह़मद साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के शागिर्दे रशीद उस्ताज़ुल उ़लमा ह़ज़रते अ़ल्लामा पीर सय्यिद मरातिब अ़ली शाह साह़िब कुछ वक़्त अ़लील रहने के बा'द 16 अगस्त 2016 ई. को बरोज़ मंगल 89 साल की उ़म्र पा कर विसाल फ़रमा गए। اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْن

मैं ह़ज़रते मर्ह़ूम के जुम्ला लवाह़िक़ीन और पसमान्दगान, मो'तक़िदीन, मुतवस्सिलीन, मुरीदीन और तलामिज़ा से ता'ज़ियत करता हूं। **या अल्लाह !** प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासित़ा ! ह़ज़रते क़िब्ला मर्ह़ूम को ग़रीक़े रह़मत फ़रमा। **या अल्लाह !** मर्ह़ूम की क़ब्र को ख़्वाब गाहे बिहिश्त बना। **या अल्लाह !** मर्ह़ूम की क़ब्र पर रह़मतो रिज़वान के फूलों की बारीश फ़रमा। **या अल्लाह !** मर्ह़ूम की क़ब्र को इन के नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर से रोशन फ़रमा। परवरदगार ! ह़ज़रते मर्ह़ूम को बे ह़िसाब बख़्श कर जन्नतुल फ़िरदौस में इन के नानाजान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। **या अल्लाह !** इन के लवाह़िक़ीन, पसमान्दगान, तलामिज़ा, मुरीदीन, मुतवस्सिलीन, अहले ख़ानदान सभी को सब्रे जमील और सब्रे जमील पर अज्रे जज़ील मर्ह़मत फ़रमा। मर्ह़ूम के दरजात बुलन्द फ़रमा। **या अल्लाह !** उम्मते मह़बूब की मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह !** मर्ह़ूम की दीनी ख़िदमात क़बूल फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत का पैग़ामे ता'ज़ियत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने एक सूरी पैग़ाम (Video Message) के ज़रीए साह़िबे फ़तावा नूरिया, फ़क़ीहे आ'ज़म ह़ज़रत मौलाना अबुल ख़ैर मुह़म्मद **नूरुल्लाह** नईमी क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की शहज़ादी के रोड एक्सीडेन्ट में इन्तिक़ाल कर जाने पर लवाह़िक़ीन से अपने सूरी पैग़ाम (Video Message) के ज़रीए ता'ज़ियत करते हुए इर्शाद फ़रमाया :

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْم!

सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी عُفِيَ عَنْهُ की जानिब से ह़ज़रत मौलाना साह़िब ज़ादा पीर फ़ैज़ुल मुस्त़फ़ा अशरफ़ी नूरी आस्तानए आ़लिय्या उन्ताली शरीफ़ ज़िल्अ़ पाक पतन शरीफ़ (पंजाब), ह़ज़रत मौलाना साह़िब ज़ादा फ़ैज़ुल करीम नूरी साह़िब, ह़ज़रत मौलाना साह़िब ज़ादा फ़ैज़ुल ह़सीब नूरी, ह़ज़रत मौलाना साह़िब ज़ादा फ़ैज़ुन्नईम नूरी।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه!

दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न ह़ाजी रफ़ीक़ रफ़ीउ़ल अ़त्तारी ने किसी के ज़रीए मुझ तक येह पैग़ाम भेजा कि साह़िबे फ़तावा नूरिया फ़क़ीहे आ'ज़म ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अबुल ख़ैर मुह़म्मद **नूरुल्लाह** नईमी क़ादिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي की शहज़ादी और जा नशीने फ़क़ीहे आ'ज़म साह़िब ज़ादा मुफ़्ती मुह़म्मद **मुह़िब्बुल्लाह** नूरी, मोह़तमिम दारुल उ़लूम ह़नफ़िय्या फ़रीदिया बसीर पूर शरीफ़ ज़िल्अ़ ओकाड़ा की बहन साह़िबा यकुम अगस्त बरोज़ पीर शरीफ़ को कार ह़ादिसे में इन्तिक़ाल फ़रमा गईं। اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْن। बताया गया कि मर्ह़ूमा उस वक़्त बा वुज़ू थीं और दुरूदे पाक का विर्द ज़बान पर जारी था।

या अल्लाह ! प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासिता ! मर्ह़ूमा को ग़रीक़े रह़मत फ़रमा, परवरदगार ! मर्ह़ूमा के जुम्ला सग़ीरा कबीरा गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा, **या अल्लाह !** मर्ह़ूमा की क़ब्र पर रह़मतो रिज़वान के फूलों की बारिश फ़रमा। परवरदगार ! मर्ह़ूमा की क़ब्र को ख़्वाब गाहे बिहिश्त बना। रब्बे रह़ीमो करीम ! मर्ह़ूमा की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा कर इन्हें जन्नतुल फ़िरदौस में ख़ातूने जन्नत बीबी फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا का पड़ोस नसीब फ़रमा। इलाहल आ़लमीन ! मर्ह़ूमा के जुम्ला लवाह़िक़ीन और पसमान्दगान को सब्रे जमील और सब्रे जमील पर अज्रे जज़ील मर्ह़मत फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(बरोज़ पीर शरीफ़ 08.08.2016)

अमीरे अहले सुन्नत का पैग़ामे ता'ज़ियत

ह़ज़रत मौलाना अ़ब्दुल मजीद नूरी साह़िब क़िब्ला دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के साह़िब ज़ादे मुह़म्मद सालेह़ साउथ अफ़्रीक़ा में इन्तिक़ाल फ़रमा गए। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक सूरी पैग़ाम के ज़रीए इन से ता'ज़ियत करते हुए मर्ह़ूम के लिये दुआए मग़्फ़िरत फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया :

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْم!

सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी عُفِیَ عَنْهُ की जानिब से मोह़सिने दा'वते इस्लामी ह़ज़रत मौलाना अ़ब्दुल मजीद नूरी साह़िब اَطَالَ اللهُ عُمرَه सूफ़ी नगर (डर्बन) साउथ अफ़्रीक़ा

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُه!

ह़ाजी इ़मरान निगराने शूरा ने ख़बरे ग़म असर मुझे दी कि आप के जवां साल शहज़ादे या'नी तबरेज़ के भाई मुह़म्मद सालेह़ इन्तिक़ाल फ़रमा गए। اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْن

या अल्लाह ! प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासिता ! मर्ह़ूम मुह़म्मद सालेह़ को ग़रीक़े रह़मत फ़रमा। **ऐ अल्लाह !** इन के जुम्ला सग़ीरा कबीरा गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा। परवरदगार ! इन की क़ब्र को ख़्वाब गाहे बिहिश्त बना, इन की क़ब्र पर रह़मतो रिज़वान के फूलों की बारिशें फ़रमा। **ऐ अल्लाह !** इन की क़ब्र को जन्नत का बाग़ बना दे, **या अल्लाह !** इन की क़ब्र जल्वए मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आबाद हो जाए, **या अल्लाह !** इन की क़ब्र नूरे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रौशन हो। **या अल्लाह !** मर्ह़ूम मुह़म्मद सालेह़ बे ह़िसाब बख़्शे जाएं, तेरे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस पाएं। **या अल्लाह !** इन के वालिदे मोह़तरम जिन को बुढ़ापे में येह जवान बेटे की वफ़ात का ज़ख़्म मिला इन को, तबरेज़ भाई को और सब घर वालों को सब्रे जमील और सब्रे जमील पर अज्रे जज़ील मर्ह़मत फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तबरेज़ ! आप ने कोशिश कर के सूफ़ी नगर डर्बन में एक माह का मदनी क़ाफ़िला तय्यार करना है, आप ने भी उस में सफ़र करना है, اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل, मुह़म्मद सालेह़ के ईसाले सवाब के लिये सफ़र करें, कोशिश करें। आप مَاشَآءَاللّٰه काफ़ी मुतह़र्रिक (Active) हैं, اَلْحَمْدُ لِلّٰه, हिम्मत करें। मेरा हुस्ने ज़न है कि एक माह के मदनी क़ाफ़िले के लिये वालिद साह़िब से इजाज़त मिल ही जाएगी बल्कि हो सकता है कि वोह बोलें कि एक माह क्यूं ? बारह माह सफ़र करो। आप के वालिद साह़िब का तो मैं ने ऐसा अन्दाज़ देखा है, दा'वते इस्लामी की मह़ब्बत इन की नस नस में उतरी हुई है, اَلْحَمْدُ لِلّٰه यूं कहिये कि दा'वते इस्लामी पर जानो दिल से फ़िदा हैं, **अल्लाह तआ़ला** आप के वालिद साह़िब को इस्तिक़ामत दे, मह़ब्बत का सिला दे बल्कि सब को सिला दे। आप का घराना मरह़बा, **अल्लाह तआ़ला** आप के घर वालों को शादो आबाद रखे, सब को बे ह़िसाब बख़्शे, दोनों जहान की भलाइयां हम सब का मुक़द्दर हों, मुझ गुनहगारों के सरदार के ह़क़ में भी येह दुआएं मुस्तजाब हों, हमारे जो इस्लामी भाई यहां जम्अ़ हैं इन के ह़क़ में भी क़बूल हों।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मज़ीद तबरेज़ ! बारह हज़ार पाकिस्तानी रुपै के रसाइल इंग्लिश या वहां की मक़ामी ज़बान में ख़रीद कर सालेह़ के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम करें। कुछ रक़म वालिद साह़िब से ले लें, घर के किसी और फ़र्द से ले लें, अपने पल्ले से डाल दें। आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और बरकत दे।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(बरोज़ जुमा'रात 21.07.2016)

अमीरे अहले सुन्नत की बा'ज़ मसरूफ़ियात

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

मर्कज़ी मजलिसे शूरा का
म-दनी मश्वरा

बिस्मिल्लाह ख़्वानी

रुख़्सती नीज़ दा'वते वलीमा
का इन्इक़ाद

1 मर्कज़ी मजलिसे शूरा का म-दनी मश्वरा

गुज़श्ता दिनों दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा और पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना का मदनी मश्वरा आलमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में हुवा। इस दौरान शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी मदनी मश्वरे में तशरीफ़ लाए और शुरकाए मदनी मश्वरा को मदनी फूलों से नवाज़ा। इन में से चन्द मदनी फूल येह हैं :

★ जब किसी का तह़रीरी (Text), सौती (Voice) या सूरी (Video) पैग़ाम (Message) आए तो जल्द जवाब की कोशिश किया करें क्यूंकि जितनी जल्दी जवाब जाएगा उतनी दिलजोई ज़ियादा होगी। ★ सूरी पैग़ाम सुनते ही जवाब दे देंगे तो वक़्त भी कम लगेगा क्यूंकि बा'द में जवाब देने के लिये दोबारा सुनना पड़ेगा। सलाम करने और मुबारक बाद देने में पहल की आदत बनाएं। ★ मेरे त़रफ़ से जो तह़रीरी या सौती पैग़ाम जाए तो उस में जो तरग़ीब दिलाई जाए उस की पूछगछ (Follow-up) किया करें जिस को पैग़ाम किया हो उस का जवाब (Reply) मुझ तक पहुंचाया करें। ★ तमाम इस्लामी भाई अगर्चे वोह दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से मुन्सलिक हों या न हों उन की ख़ुशी ग़मी में ह़िस्सा लिया करें बिल ख़ुसूस ग़मी में इ़यादत व ता'ज़ियत करने में कोताही न किया करें। सुख में ह़िस्सा नहीं लेंगे तो इतना बुरा नहीं लगे लेकिन दुख में ह़िस्सा नहीं लेंगे तो बहुत बुरा लगेगा। ★ अल्लाह तआ़ला ने आप को दा'वते इस्लामी की बरकत से इ़ज़्ज़त दी है, लोगों का आप की जानिब रुजूअ़ और तवक़्क़ुआ़त भी वाबस्ता हैं, इस लिये आप को इन की तवक़्क़ुआ़त पर पूरा उतरना होगा। ★ मदनी काम क़ज़ा न किया करें क्यूंकि जो काम एक दफ़्आ़ छूट जाएगा दोबारा करने में मुश्किल होती है ★ सौती पैग़ाम (Voice Message) रेकॉर्ड करने का त़रीक़ा : पंखा / ऐ सी बन्द कर दें, गाड़ी में सफ़र है तो शोर न हो, अल्फ़ाज़ की रफ़्तार कम हो, माह़ोल पुर सुकून हो। जिस सूराख़ से पैग़ाम रेकॉर्ड होता है उस के क़रीब मुंह कर के ह़म्दो सलात पढ़ें और अपना नाम लें और फिर अपना मक़्सद मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में (To the point) रेकॉर्ड करें। जिस के नाम पैग़ाम हो, उस का नाम अल्क़ाबात (म-सलन ह़ाजी, ह़ाफ़िज़ वग़ैरा) के साथ लिया जाए ★ किसी के बारे में कोई बात बतानी हो तो उस का नाम आहिस्ता रफ़्तार में लें और ज़रूरतन तीन मर्तबा लें तो बेहतर है। मुझे किसी के बारे में ता'ज़ियत या इ़यादत के लिये कहा जाता है मगर उस का नाम समझ में नहीं आता बा'ज़ अवक़ात बार बार सुनना पड़ता है ★ कुतुब और बयानात के अपने अपने फ़वाइद हैं अलबत्ता किताबों के फ़वाइद बयानात से ज़ियादा हैं ★ सोश्यल मीडिया (Social Media) इस्ति'माल करने की वज्ह से मुत़ालअ़ए कुतुब कम हो गया है बल्कि घरेलू कामों में भी असर बड़ा है। सोश्यल मीडिया के फ़वाइद भी हैं मगर नुक़्सानात ज़ियादा हैं। ★ हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में नमाज़े मग़रिब से इ़शराक़ व चाश्त व सलातो सलाम तक शिर्कत फ़रमाया करें। रात ए'तिकाफ़ को मज़्बूत करें।

2 पोती की बिस्मिल्लाह ख़्वानी

जा नशीने अमीरे अहले सुन्नत, शहज़ादए अ़त्तार, ह़ज़रत मौलाना अबू उसैद, उ़बैद रज़ा अ़त्तारी अल मदनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के घर तक़रीबे **बिस्मिल्लाह** का एहतिमाम किया गया जिस में शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه और शहज़ादए अ़त्तार, ह़ज़रत मौलाना ह़ाजी अबू हिलाल, मुह़म्मद बिलाल रज़ा अ़त्तारी अल मदनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی ने भी शिर्कत की। इस मौक़अ़ पर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया :

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْم ! आज मेरी पोती ह़ज्जन अस्मा बाई की तक़रीबे **बिस्मिल्लाह** मुन्अ़क़िद की है। वैसे तो इस के लिये उ़म्र की कोई क़ैद नहीं है लेकिन सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया कि मशाइख़ से येह है कि चार साल चार माह चार दिन की उ़म्र में तक़रीबे **बिस्मिल्लाह** ख़्वानी की जाए। ह़ज्जन अस्मा बाई की उ़म्र आज चार साल चार माह और चार दिन की हो रही है। सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना बख़्तियार काकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه चार साल चार माह चार दिन के जब हुए तो इन की **बिस्मिल्लाह** ख़्वानी की तक़रीब मुन्अ़क़िद की गई। ह़ज़रते ख़्वाजा ह़मीदुद्दीन नागोरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जब उन से फ़रमाया कि بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ें तो उन्हों ने اَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ कर पन्दरह पारे क़ुरआने करीम के सुना दिये। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه भी वहां तशरीफ़ फ़रमा थे उन्हों ने भी और आप के ख़लीफ़ए मजाज़ ह़ज़रत क़ाज़ी ह़मीदुद्दीन नागोरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया कि और पढ़िये, तो उन्हों ने फ़रमाया कि मैं जब अपनी मां के पेट में था तो मेरी मां पन्दरह पारे की ह़ाफ़िज़ा थीं तो उन से सुन सुन कर मुझे येह पारे ह़िफ़्ज़ हो गए थे।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस के बा'द अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपनी पोती अस्मा बाई बिन्ते ह़ाजी बिलाल को येह अल्फ़ाज़ पढ़ाए : بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم, مَاشَآءَ اللّٰه, سُبْحٰنَ اللّٰه । फिर येह दुआ भी की : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْن **या अल्लाह !** प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासिता ! तेरे इस इस्मे पाक का वासिता ! इस्मे ज़ात का वासिता ! हम सब की मग़्फ़िरत फ़रमा। मेरी मदनी मुन्नी क़ुरआने करीम से मह़ब्बत करने वाली, इल्मे दीन से मह़ब्बत करने वाली बने, दा'वते इस्लामी की बा अ़मल मुबल्लिग़ा बने, आ़लिमा बने, मुफ़्तिय्या बने। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(बरोज़ जुमुअ़तुल मुबारक 22-07-2016)

3 नवासी की रुख़्सती नीज़ दा'वते वलीमा का इन्इ़क़ाद

16 जुल क़ा'दतिल ह़राम 1437 हि. मुत़ाबिक़ 20 अगस्त 2016 ई बरोज़ हफ़्ता शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की नवासी की तक़रीबे रुख़्सती मुन्अ़क़िद हुई और इस सिल्सिले में मदनी मुज़ाकरा भी हुवा। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه रुख़्सती के बा'द दूल्हा के घर तशरीफ़ ले गए और दूल्हा दुल्हन को म-दनी फूलों से नवाज़ने के साथ साथ दुआ भी फ़रमाई। मज़ीद करम नवाज़ी फ़रमाते हुए अगले दिन दूल्हा का वलीमा भी आप ने ख़ुद अपनी त़रफ़ से मुन्अ़क़िद फ़रमाया।

आप के सुवालात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आयिन्दा शुमार में एक नया सिल्सिला "आप के सुवालात" शामिल करने की निय्यत है, जिस में आप की त़रफ़ से भेजे गए शरई सुवालात के जवाबात मह़दूद ता'दाद में शामिल किये जाएंगे, मदनी इल्तिजा है कि अपने सुवालात तह़रीरी सूरत में हर इस्लामी महीने की दस तारीख़ तक नीचे दिये गए पते पर इरसाल फ़रमा दें।

आप के तअस्सुरात, तजावीज़ और मश्वरे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस माहनामे में आप को क्या अच्छा लगा ! क्या मज़ीद अच्छा चाहते हैं ! अपने तअस्सुरात, तजावीज़ और मश्वरे भी इस पते पर इरसाल फ़रमा दीजिये, मुन्तख़ब तअस्सुरात को आयिन्दा शुमारे में शामिले इशाअ़त भी किया जाएगा।

डाक का पता माहनामा फ़ैज़ाने मदीना आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना पुरानी सब्ज़ी मन्डी बाबुल मदीना करांची

तेरे दर से है मंगतों का गुज़ारा या शहे बग़दाद

तेरे दर से है मंगतों का गुज़ारा या शहे बग़दाद
येह सुन कर मैं ने भी दामन पसारा या शहे बग़दाद

मेरी क़िस्मत का चमका दो सितारा या शहे बग़दाद
दिखा दो अपना चेहरा प्यारा प्यारा या शहे बग़दाद

इजाज़त दो कि मैं बग़दाद ह़ाज़िर हो के फिर कर लूं
तुम्हारे नीले गुम्बद का नज़ारा या शहे बग़दाद

ग़मे शाहे मदीना मुझ को तुम ऐसा अ़ता कर दो
जिगर टुकड़े हो दिल भी पारा पारा या शहे बग़दाद

मदीने का बना दो तुम मुझे कुछ ऐसा दीवाना
फिरूं दीवानगी में मारा मारा या शहे बग़दाद

ख़ुदा के ख़ौफ़ से रोए नबी के इ़श्क़ में रोए
अ़ता कर दो वोह चश्मे तर ख़ुदारा या शहे बग़दाद

गुनाहों के मरज़ ने कर दिया है नीम जां मुझ को
तुम्हीं आ के करो अब कोई चारा या शहे बग़दाद

मुझे अच्छा बना दो मुर्शिदी बेशक यक़ीनन हैं
मेरे ह़ालात तुम पर आश्कार या शहे बग़दाद

हुई जाती है ऊजड़ अब मेरी उम्मीद की खेती
भरन बरसा दो रह़मत की ख़ुदारा या शहे बग़दाद

करम मीरां ! मेरे उजड़े गुलिस्तां में बहार आए
ख़ज़ां का रुख़ फिरा दो अब ख़ुदारा या शहे बग़दाद

शहा ! ख़ैरात लेने को सलातीने ज़माना ने
तेरे दरबार में दामन पसारा या शहे बग़दाद

अगर्चे लाख पापी है मगर अ़त्तार किस का है ?
तुम्हारा है तुम्हारा है तुम्हारा या शहे बग़दाद

वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ

मदनी चेनल की बराहे रास्त नश्रियात के अवक़ात

बरोज़ हफ़्ता रात 8 बज कर 15 मिनट
सिल्सिला "मदनी मुज़ाकरा"
बराहे रास्त
शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ
के इल्मो हिक्मत के मदनी फूल पर मुश्तमिल

बरोज़ इतवार दोपहर 2 बज कर 30 मिनट
सिल्सिला "लब्बैक" (मैं ह़ाज़िर हूं)
(निगराने शूरा)
बराहे रास्त
मुबल्लिग़ीन के दिलचस्प सुवालात और निगराने शूरा के जवाबात

बरोज़ इतवार रात 8 बज कर 15 मिनट
सिल्सिला "अह़कामे तिजारत"
बराहे रास्त
शो'बए तिजारत से शरई मसाइल से आगाही पर मुश्तमिल

बरोज़ जुमुआ़ रात 8 बज कर 15 मिनट
सिल्सिला "मदनी मुकालमा"
बराहे रास्त
मुख़्तलिफ़ मुआ़शरती, समाजी और मज़्हबी
मसाइल पर इल्मी व फ़िक्री सिल्सिला

रोज़ाना सुब्ह 8 बजे इलावा बुध, जुमा'रात (सिर्फ़ इतवार 9 बजे)
सिल्सिला "खुले आंख صلی علیٰ कहते कहते"
बराहे रास्त
तिलावत, ना'त, मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर मुश्तमिल सिल्सिला

अमीरे अहले सुन्नत के ऑपरेशन की झलकियां

काशिफ़ शहज़ाद अत्तारी मदनी

रमज़ानुल मुबारक 1437 हि. के इब्तिदाई अय्याम में शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने पेट में तक्लीफ़ महसूस फ़रमाई। चेकअप करवाने पर डॉक्टर ने ऑपरेशन करवाने का मश्वरा दिया। दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची समेत पाकिस्तान और बैरूने पाकिस्तान मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर पूरे माहे रमज़ान के ए'तिकाफ़ का सिल्सिला जारी था। रोज़ाना नमाज़े अ़स्र और तरावीह़ के बा'द मदनी मुज़ाकरों का सिल्सिला था नीज़ सह़री और रात के खाने में भी आ़शिक़ाने रसूल अमीरे अहले सुन्नत की सोह़बत से फ़ैज़याब होते थे, चुनान्चे अमीरे अहले सुन्नत ने डॉक्टरों से मुशावरत के बा'द ऑपरेशन रमज़ान के बा'द तक मौक़ूफ़ करने का फ़ैसला फ़रमाया।

2 शव्वालुल मुकर्रम 1437 हि./ 7 जूलाई 2016 ई. बरोज़ जुमा'रात अमीरे अहले सुन्नत का ऑपरेश किया गया जो بِحَمْدِاللّٰہِ تَعَالٰی बख़ैरो आ़फ़िय्यत कामयाबी के साथ मुकम्मल हुवा। उ़मूमन इस त़रह़ के ऑपरेशन के बा'द मरीज़ कई घन्टे तक दवाओं के ज़ेरे असर गुनूदगी के आ़लम में रहते हैं, कई मरीज़ त़रह़ त़रह़ की बातें करते हैं, مَعَاذَاللّٰه कोई गाने गाता है, कोई गालियां बकता है तो कोई ऊट पटांग बातें करता रहता है, अल ग़रज़ इन्सान के ला शुऊ़र में मौजूद ख़यालात इस मौक़अ़ पर ज़ाहिर होते हैं। इस कैफ़िय्यत में शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़बाने मुबारक से जारी होने वाले कलिमात दर्जे ज़ैल हैं :

ऐ **अल्लाह** ! मैं ईमान सलामत ले कर दुन्या से जाऊं। **या अल्लाह** ! मैं बख़्शा जाऊं, मह़बूब की उम्मत बख़्शी जाए। प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इ़श्क़ है, **या अल्लाह** ! ग़ौसे पाक से इ़श्क़ है, सह़ाबए किराम से इ़श्क़ है। **या अल्लाह** ! मैं इमाम अह़मद रज़ा ख़ान से मह़ब्बत करता हूं, मेरे मौला ! मैं औलियाए किराम से मह़ब्बत करता हूं, **या अल्लाह** ! मैं तुझ से मह़ब्बत करता हूं। उ़लमाए अहले सुन्नत से मह़ब्बत है, तमाम सुन्नियों से मह़ब्बत है। मेरे मुरीदों की मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** ! जो मेरे हाथ पर तौबा करता है ग़ौसे पाक का मुरीद होता है सब को बख़्श दे। सब को अच्छा कर दे, मुझे भी सब के सदक़े अच्छा कर दे। **या अल्लाह** ! ह़ाजी मुश्ताक़ की मग़्फ़िरत फ़रमा, **या अल्लाह** ! ह़ाजी फ़ारूक़ की मग़्फ़िरत फ़रमा, **या अल्लाह** ! ह़ाजी ज़मज़म को बख़्श दे, **या अल्लाह** ! ह़ाजी इ़मरान की मग़्फ़िरत फ़रमा, **या अल्लाह** ! दा'वते इस्लामी के हर मुबल्लिग़ की मग़्फ़िरत फ़रमा, **या अल्लाह** ! हर दा'वते इस्लामी वाले की मग़्फ़िरत फ़रमा। ऐ **अल्लाह** ! दा'वते इस्लामी वाले और वालियों को बे ह़िसाब बख़्श दे, **या अल्लाह** ! दा'वते इस्लामी का बोलबाला फ़रमा, **या अल्लाह** ! दा'वते इस्लामी के तमाम अराकीने शूरा बख़्शे जाएं, निगराने शूरा बख़्शे जाएं। **या अल्लाह** ! डॉक्टर और ऑपरेशन करने वाले बख़्शे जाएं, **या अल्लाह** ! मुल्के पाकिस्तान को इस्तिह़्काम और सुन्नतों भरा निज़ाम अ़त़ा कर दे।

इ़यादत करने वालों की जूक़ दर जूक़ आमद

जैसे ही अमीरे अहले सुन्नत के ऑपरेशन की ख़बर आ़म हुई, इ़यादत के लिये कसीर ता'दाद में

आ़शिक़ाने रसूल और उ़लमा व मशाइख़े अहले सुन्नत की आमद का सिल्सिला शुरूअ़ हो गया । इ़यादत के लिये तशरीफ़ लाने वाले कसीर उ़लमा व जुअ़माए अहले सुन्नत में से चन्द के अस्माए गिरामी दर्जे ज़ैल हैं :

सद्र तन्ज़ीमुल मदारिसे अहले सुन्नत पाकिस्तान प्रोफ़ेसर मुफ़्ती मुनीबुर्रहमान, जिगर गोशए ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस ह़ज़रत अ़ल्लामा सय्यिद इरफ़ान शाह मश्हदी, ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद इब्राहीम क़ादिरी (जामिआ़ ग़ौसिय्या सख्खर), ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद रफ़ीक़ अल ह़सनी, ह़ज़रत मौलाना सय्यिद मुज़फ़्फ़र ह़ुसैन शाह, ह़ज़रत मौलाना सय्यिद ह़म्ज़ा अ़ली क़ादिरी, उस्ताज़ुल उ़लमा ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद रफ़ीक़ अ़ब्बासी, ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अक्मल अ़त़ा क़ादिरी, ह़ज़रत अ़ल्लामा डॉक्टर मुह़म्मद कोकब नूरानी ओकाड़वी, ह़ज़रत मौलाना ह़ाफ़िज़ रज़ाए मुस्त़फ़ा नक़्शबन्दी मुजद्दिदी, नबीरए सदरुश्शरीअ़ह, साह़िब ज़ादा इन्तिसारुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी अज़्हरी, साह़िब ज़ादा इक्रामुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी, ह़ज़रत मौलाना लियाक़त ह़ुसैन अज़्हरी, ह़ज़रत मौलाना साह़िब ज़ादा मुख़्तार अह़मद ह़बीबी बलूचिस्तान, ह़ज़रत साह़िब ज़ादा मुह़म्मद ख़ालिद सुल्त़ान क़ादिरी बलूचिस्तान, ह़ज़रत मौलाना सय्यिद मुह़म्मद अ़ज़मत अ़ली शाह (दारुल उ़लूम अह़सनुल बरकात, ज़मज़म नगर ह़ैदरआबाद) ह़ज़रत मौलाना सुहैल रज़ा अमजदी, ह़ज़रत मौलाना निसार अ़ली उजागर, मश्हूर सना ख़्वान अलह़ाज उवैस रज़ा क़ादिरी, सना ख़्वान अलह़ाज सिद्दीक़ इस्माईल, सना ख़्वान ह़ाफ़िज़ त़ाहिर क़ादिरी, ह़ज़रत मौलाना बशीर फ़ारूक़ क़ादिरी, साह़िब ज़ादा मुह़म्मद उवैस नूरानी, ह़ाजी मुह़म्मद ह़नीफ़ त़य्यिब वग़ैरा ।

अमीरे अहले सुन्नत का इ़ज़्हारे तशक्कुर

बा'द में शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इ़यादत के लिये तशरीफ़ लाने वाली मुतअ़द्दद शख़्सिय्यात के नाम इ़ज़्हारे तशक्कुर पर मुश्तमिल सूरी पैग़ामात (Video Messages) इरसाल फ़रमाए। उन में से चन्द पैग़ामात तह़रीरी सूरत में पेशे ख़िदमत हैं :

1 मुफ़्ती मुनीबुर्रहमान साह़िब के नाम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ وَنُسَلِّمُ عَلٰى رَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْكَرِيْم

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुनीबुर्रह़मान साह़िब चेरमेन रूयते हिलाल कमेटी पाकिस्तान मोह्तमिम दारुल उ़लूम नईमिय्या बाबुल मदीना कराची । اَطَالَ اللّٰهُ عُمْرَهٗ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه

मरह़बा ! आप जैसी अ़दीमुल फ़ुरसत शख़्सिय्यत मुझ गुनहगारों के सरदार की इ़यादत के लिये तशरीफ़ लाई, मरह़बा । **अल्लाह तआ़ला** आप का इ़यादत करना क़बूल फ़रमाए, जज़ाए जज़ील अ़त़ा फ़रमाए, **अल्लाह तआ़ला** आप की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत करे, आप की ख़िदमाते इस्लामी को शरफ़े क़बूलिय्यत बख़्शे, दोनों जहानों की भलाइयां आप का मुक़द्दर फ़रमाए, आप की परेशानियां, आप की मुश्किलात दूर हों, मसाइल ह़ल हों, **अल्लाह तआ़ला** आप का सायए आ़त़िफ़त हम ग़रीब सुन्नियों पर तादेर क़ाइम रखे । हुज़ूरे वाला ! बे ह़िसाब मग़्फ़िरत की दुआ़ का मुल्तजी हूं, दारुल उ़लूम नईमिय्या के असातिज़ए किराम और त़लबाए किराम की ख़िदमत में मेरा सलाम अ़र्ज़ कीजिये ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

2 मुफ़्ती मुह़म्मद रफ़ीक़ अल ह़सनी साह़िब के नाम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ وَنُسَلِّمُ عَلٰى رَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْكَرِيْم

सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी عُفِيَ عَنْهُ की जानिब से मोह़सिन व करम फ़रमा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती रफ़ीक़ अल ह़सनी साह़िब اَطَالَ اللّٰهُ عُمْرَهٗ ।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه

अल्लाह तआ़ला आप को ख़ुश रखे, सिह्ह़तो आ़फ़िय्यत से मालामाल फ़रमाए, मुझ गुनाहगारों के सरदार की इ़यादत की ख़ात़िर वक़्त निकाल कर तशरीफ़ ले आए, **अल्लाह तआ़ला** आप का आना जाना क़बूल फ़रमाए । جَزَاكَ اللّٰهُ خَيْرًا । **अल्लाह तआ़ला** आप को बे ह़िसाब मग़्फ़िरत से मुशर्रफ़ फ़रमाए, आप के इल्मो अ़मल में मदीने के बारह चांद लगाए, आप की इस्लामी ख़िदमात क़बूल फ़रमाए, मज़ीद आप को ख़िदमते दीन के लिये त़वील ह़यात बा

आफ़िय्यते अ़ता फ़रमाए । बे हिसाब मग़्फ़िरत से आप मुशर्रफ़ हों, आप की आल भी इल्मे दीन के डंके बजाती रहे और आप के तलामिज़ा भी ख़ूब ख़ूब ख़ूब इस्लाम की ख़िदमत करें, दुन्या में फैल जाएं और सहीह़ ख़ुतूत़ पर इस्लाम की ख़िदमत करने की सआ़दत पाएं । बे हिसाब मग़्फ़िरत की दुआ़ के लिये मुल्तजी हूं। हुज़ूरे वाला अपने शहज़ादगान उवैस रफ़ीक़, जुनैद रफ़ीक़, सुहैल रफ़ीक़, उ़मैर रफ़ीक़ और दामाद डॉक्टर आ़मिर को ख़ुसूसी सलाम नीज़ अपने यहां के असातिज़ए किराम और आप के इदारे के त़लबाए किराम की ख़िदमात में भी मेरा सलाम । मेरे लिये बे हिसाब मग़्फ़िरत की दुआ़ ज़रूर फ़रमाते रहिये । **अल्लाह** आप को ख़ुश रखे ।

3 मौलाना रज़ाए मुस्त़फ़ा नक़्शबन्दी साहिब के नाम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ وَنُسَلِّمُ عَلٰی رَسُوْلِهِ النَّبِیِّ الْكَرِیْم

सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी عُفِیَ عَنْهُ की जानिब से ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़ाफ़िज़ रज़ाए मुस्त़फ़ा नक़्शबन्दी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मोह्तमिम जामिआ़ रसूलिया शीराज़िया रज़विय्या बिलाल गन्ज मर्कज़ुल औलिया लाहोर

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه

हुज़ूरे वाला ! बड़ा करम फ़रमाया, मअ़ रुफ़क़ा मुझ गुनाहगारों के सरदार की इ़यादत के लिये क़दम रन्जा हुए । **अल्लाह तबारक व तआ़ला** आप का आना जाना क़बूल फ़रमाए, जज़ाए जज़ील अ़त़ा फ़रमाए, **अल्लाह तबारक व तआ़ला** आप की बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमाए, सिह़्ह़तों राह़तों हिम्मतों आ़फ़िय्यतों मदनी कामों इ़बादतों रियाज़तों सुन्नतों दीनी ख़िदमतों भरी त़वील ज़िन्दगी अ़त़ा करे । बे हिसाब मग़्फ़िरत की दुआ़ का मुल्तजी हूं। जो रुफ़क़ा आप के साथ थे उन को भी, अपने यहां के आप के जामिआ़ के असातिज़ए किराम, त़लबाए किराम की ख़िदमत में भी मेरा बहुत बहुत सलाम । बहुत बहुत शुक्रिय्या, बहुत बहुत शुक्रिय्या, बहुत बहुत शुक्रिय्या, جَزَاكَ اللّٰهُ خَيْرًا ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

4 ह़ज़रत मौलाना सय्यिद ह़म्ज़ा अ़ली क़ादिरी साह़िब के नाम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ وَنُسَلِّمُ عَلٰی رَسُوْلِهِ النَّبِیِّ الْكَرِیْم

शहज़ादए आ़ली वक़ार, बापूए आबरूदार, पीरे त़रीक़त सय्यिद ह़म्ज़ा अ़ली क़ादिरी !

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه

अल्लाह तआ़ला आप पर रह़मतें नाज़िल फ़रमाए, आप दरजे में तो यक़ीनन मुझ से बड़े ही हैं लेकिन उ़म्र में भी बड़े हैं। बा वुजूद अ़लालत नक़ाहत के आप व्हील चेर पर सुवार हो कर मेरी इ़यादत के लिये तशरीफ़ ले आए, क्यूंकि मैं तो आप की दुआ़ और करम से खड़ा हूं। आप तशरीफ़ लाए, दिलजूई हुई, अपनी दुआ़ओं से नवाज़ा, تَقَبَّلَ اللّٰهُ تَعَالٰى, **अल्लाह तआ़ला** आप को जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए, मैं आप का बहुत शुक्र गुज़ार हूं । **अल्लाह तआ़ला** आप को ख़ूब सिह़्ह़त दे और ख़ूब ख़ूब ख़ूब शाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बयान करते रहें, अ़ज़मते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के डंके बजाते रहें, **अल्लाह तआ़ला** आप के नानाजान के सदक़े में आप को शिफ़ाए कामिला, आ़जिला, नाफ़िआ़ अ़त़ा फ़रमाए, सिह़्ह़त, राह़त, आ़फ़िय्यत, हिम्मतों, मदनी कामों, सुन्नतों, इ़बादतों, रियाज़तों भरी त़वील ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाए । तमाम मुरीदीन, मुह़िब्बीन, अहले ख़ाना सब को सलाम सलाम और शुक्रिय्या,

جَزَاكَ اللّٰهُ خَيْرًا ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गुमशुदा चीज़, रिश्ते में रुकावट और बच्चों का इग़्वा

रूहानी इलाज (या'नी अवरादो वज़ाइफ़ और ता'वीज़ात) का सुबूत मुख़्तलिफ़ अहादीसे करीमा में मौजूद है, मसलन **मुस्नदे अह़मद** में है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुऐ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिदे मोह़तरम से रिवायत करते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमें ऐसे कलिमात सिखाया करते थे जिन्हें हम घबराहट व परेशानी में सोते वक़्त पढ़ते थे। (वोह कलिमात येह हैं :)

بِسْمِ اللهِ اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ

مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَشَرِّ عِبَادِهٖ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَّحْضُرُوْنِ

(**तर्जमा : अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ कर के मैं **अल्लाह** के कामिल कलिमात के ज़रीए उस की नाराज़ी, उस की सज़ा, उस के बन्दों के शर और शयात़ीन के वस्वसों नीज़ शयात़ीन के क़रीब आने से पनाह त़लब करता हूं।)

चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने बच्चों को येह दुआ़ सिखाया करते थे कि वोह इसे सोते वक़्त पढ़ा करें, जो बच्चे ज़ियादा छोटे होने की वज्ह से येह कलिमात याद नहीं कर सकते थे तो वोह येह कलिमात लिख कर उन के गले में लटका दिया करते थे।

(مسند امام احمد بن حنبل، مسند عبداللہ بن عمرو بن العاص، 2/600، حدیث:6708)

गुमशुदा चीज़ मिलने के लिये वज़ीफ़ा

(1) कोई चीज़ अगर इधर उधर रह गई हो तो اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ पढ़ कर तलाश की जाए اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلّ मिल जाएगी वरना ग़ैब से कोई उ़म्दा चीज़ अ़त़ा होगी।

(2) **सूरए वद्दुहा** सात बार पढ़े اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلّ गुमा हुवा आदमी या चीज़ मिल जाएगी। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 127)

शादी की रुकावट के 2 रूहानी इलाज

(1) जिन लड़कियों की शादी न होती हो या मंगनी हो कर टूट जाती हो वोह नमाज़े फ़ज्र के बा'द "یَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام" 312 बार पढ़ कर अपने लिये नेक रिश्ता मिलने की दुआ़ करें, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلّ जल्द शादी हो और शोहर भी नेक मिले।

(2) یَاحَیُّ یَاقَیُّوْمُ 143 बार लिख कर ता'वीज़ बना कर कुंवारा अपने बाज़ू में बांधे या गले में पहन ले اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلّ उस की जल्द शादी हो जाएगी और घर भी अच्छा चलेगा। (मेंडक सुवार बिच्छू, स. 24)

बच्चों को इग़्वा से बचाने का वज़ीफ़ा

अव्वल व आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर तीन तीन बार पढ़िये :

بِسْمِ اللهِ عَلٰی دِیْنِیْ بِسْمِ اللهِ عَلٰی نَفْسِیْ وَوُلْدِیْ وَاَهْلِیْ وَمَالِیْ **तर्जमा : अल्लाह तआ़ला** के नाम की बरकत से मेरे दीन, जान, औलाद और अह्ल व माल की ह़िफ़ाज़त हो। (शजरए अ़त्त़ारिय्या, स. 15) یَاقَادِرُ जो (छोटा हो या बड़ा) वुज़ू के दौरान हर उ़ज़्व को धोते वक़्त पढ़ने का मा'मूल बना ले, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلّ दुश्मन उस को इग़्वा नहीं कर सकेगा। (रूहानी इलाज, स. 9)

अपने क़रीबी ता'वीज़ाते अ़त्त़ारिय्या के बस्ते से अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का बच्चों के इग़्वा से ह़िफ़ाज़त का ख़ुसूसी ता'वीज़ भी लिया जा सकता है।

मदनी फूलों का गुलदस्ता

बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم के अनमोल फ़रामीन जिन में इल्मो हिक्मत के ख़ज़ाने छुपे होते हैं, सवाब की निय्यत से इन्हें ज़ियादा से ज़ियादा आम कीजिये।

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

कोई जानवर उसी वक़्त शिकार होता और दरख़्त उसी वक़्त काटा जाता है जब वोह **ज़िक्रुल्लाह** से ग़ाफ़िल हो जाए। (مصنف ابن ابی شیبہ، 146/8)

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

अ़मल से बढ़ कर उस की क़बूलिय्यत का एहतिमाम करो इस लिये कि तक़्वा के साथ किया गया थोड़ा अ़मल भी बहुत होता है और जो अ़मल मक़्बूल हो जाए वोह क्यूंकर थोड़ा होगा ! (تاریخ ابن عساکر، 511/42)

हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

तौबा करने वालों की सोहबत में बैठो कि वोह सब से ज़ियादा नर्म दिल होते हैं। (مصنف ابن ابی شیبہ، 150/8)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

ता'रीफ़ या बुराई करने में जल्दी न करो, क्यूंकि आज तुझे अच्छे लगने वाले कल बुरे और आज बुरे लगने वाले कल अच्छे लगेंगे। (حلیۃ الاولیاء، 279/4)

हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

अगर तुम्हारे दिल पाक हों तो कलामे इलाही (क़ुरआने करीम) से कभी भी सैर न हों। (فضائل الصحابہ لاحمد بن حنبل، 585/1)

हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

सब से बड़ी अ़क़्ल मन्दी परहेज़ गारी और सब से बड़ी हमाक़त फ़िस्क़ो फ़ुजूर (गुनाह व ना फ़रमानी) है। (مصنف ابن ابی شیبہ، 277/7)

सर्दी से बचने के 11 मदनी फूल

1. अपने **कानों की हिफ़ाज़त** और इन को गर्म रखने के लिये मुनासिब बन्दो बस्त कीजिये।
2. **नंगे पाउं चलने से बचिये** और मोटी जुराबें, मोज़े और बन्द जूतों का इस्ति'माल कीजिये। (चमड़े के मोज़े इस्ति'माल करने के शरई अह़कामात सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ़ किताब "बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल, हिस्सए दुवुम, स. 362 ता 367 का मुत़ालआ़ कर लीजिये)
3. सर्दी से बचने के लिये हफ़्ते में कम अज़् कम दो बार **उबला हुवा अन्डा** इस्ति'माल कीजिये।
4. मौसिमी फलों (मोसम्बी, सेब, केला) और **ताज़ा सब्ज़ियों का इस्ति'माल** कीजिये।
5. सर्दी के मौसिम में **पानी और फलों के ज्यूस** का ज़ियादा इस्ति'माल फ़ाएदा मन्द है।
6. सर्दी के मौसिम में ठन्डे और ख़ुश्क मौसिम की वज्ह से पाउं की एड़ियां और होंट ख़ुश्क हो कर फट जाते हैं, इस सूरत में **लिक्विड ग्लीसरीन** (Liquid Glycerine) और **वेज़लीन** (Vaseline) का इस्ति'माल कीजिये।
7. ह़त्तल इमकान वक़्त मिलने पर कुछ देर के लिये **धूप** में बैठिये। (धूप की अहम्मिय्यत व इफ़ादियत का मुत़ालआ़ करने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "घरेलू इलाज" स. 19 ता 22 का मुत़ालआ़ कीजिये)
8. सर्दी के मौसिम में अक्सर नज़्ला, ज़ुकाम हो जाता है, इस सूरत में गर्म पानी में Vicks डाल कर **भाप** लीजिये।
9. नज़्ला, ज़ुकाम की शिकायत की सूरत में देसी जड़ी बूटियों का **जोशांदा** फ़ाएदा मन्द है। (दाइमी नज़्ले के 5 इलाज वग़ैरा का मुत़ालआ़ करने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "घरेलू इलाज" स. 51 ता 52 का मुत़ालआ़ कीजिये)
10. ख़ाली ज़मीन पर न सोएं, सर्दी की वज्ह से बीमार होने का ख़दशा है, मोटा कपड़ा बिछा लीजिये या मोटा बिस्तर इस्ति'माल कीजिये।
11. सर्दी के मौसिम में मोटर साइकिल पर सफ़र करना ख़त़रनाक हो सकता है, अगर मोटर साइकिल पर सफ़र करना पड़े तो हेल्मेट और गर्म लिबास पहन लीजिये।

ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची है

दा'वते इस्लामी के शो'बाजात की मदनी ख़बरें

दुन्या भर में फ़ज़्ले रब (عَزَّوَجَلَّ) से दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की धूमधाम है। दा'वते इस्लामी अपना पैग़ाम दुन्या के कमो बेश 200 ममालिक में पहुंचाने के साथ साथ 103 से ज़ाइद शो'बाजात में दीने मतीन की ख़िदमत सर अन्जाम दे रही है, उन में से चन्द शो'बाजात में होने वाले मदनी कामों की मुख़्तसर झलकियां मुलाहज़ा फ़रमाइये :

1 जामिअ़तुल मदीना (लिल बनीन)

★ दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना (लिल बनीन) से इस साल पाकिस्तान भर में तक़रीबन 365 (तीन सौ पेंसठ) मदनी इस्लामी भाइयों की दस्तार बन्दी हुई, इस सिल्सिले में 6 शहरों (बाबुल मदीना कराची, ज़मज़म नगर हैदरआबाद, मदीनतुल औलिया मुलतान, सरदारआबाद फ़ैसलआबाद, मर्कज़ुल औलिया लाहोर और इस्लामआबाद) में दस्तारे फ़ज़ीलत के इज्तिमाआ़त का इन्तिज़ाम किया गया था। इस दौरान सालाना इम्तिहानात में नुमायां पोज़ीशन हासिल करने वाले त़लबा में मदनी तहाइफ़ भी तक़्सीम किये गए। ★ जामिअ़तुल मदीना के तह़्त 10, 11, 12 दिसम्बर 2016 ई. को हज़ारों इस्लामी भाइयों ने 3 दिन के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र किया, जिन में त़लबा के इ़लावा असातिज़ए किराम और मदनी अ़मले के इस्लामी भाई भी शामिल थे। ★ जामिआ़तुल मदीना में इस साल ता दमे तह़रीर पाकिस्तान भर में 5891 (पांच हज़ार आठ सौ इकानवे) नए दाख़िले हुए।

2 जामिअ़तुल मदीना (लिल बनात)

★ दा'वते इस्लामी के शो'बे जामिअ़तुल मदीना (लिल बनात) में हज़ारों इस्लामी बहनें, दर्से निज़ामी (आ़लिमा कोर्स) और "फ़ैज़ाने शरीअ़त कोर्स" कर रही हैं, ता दमे तह़रीर मुल्क व बैरूने मुल्क 231 (दो सौ इक्तीस) जामिआ़तुल मदीना (लिल बनात) में 13548 (तेरह हज़ार पांच सौ अड़तालीस) इस्लामी बहनें इल्मे दीन ह़ासिल कर रही हैं। ★ अब तक (1438 हि.) कमो बेश 2607 (दो हज़ार छे सौ सात) इस्लामी बहनें दर्से निज़ामी करने की सआ़दत ह़ासिल कर चुकी हैं। ★ इस ता'लीमी साल पाकिस्तान भर में اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ 12 नए जामिआ़तुल मदीना (लिल बनात) का आग़ाज़ हुवा। ★ इस साल 4928 (चार हज़ार नव सौ अठ्ठाईस) नए दाख़िले हुए ★ 16 अगस्त 2016 ई. को जामिआ़तुल मदीना (लिल बनात) से दर्से निज़ामी (आ़लिमा कोर्स) में कामयाब इस्लामी बहनों की रिदा पोशी के लिये मुल्क भर में 11 मक़ामात पर इज्तिमाआ़त की तरकीब बनी, जिन में 1160 (एक हज़ार एक सौ साठ) मदनिय्या इस्लामी बहनों ने "रिदा पोशी" की सआ़दत ह़ासिल की। रिदा पोशी बिन्ते अ़त्तार के इ़लावा, अराकीने आ़लमी मजलिसे मुशावरत और दीगर अहम ज़िम्मादार इस्लामी बहनों ने फ़रमाई। ★ रिदा पोशी के साथ साथ मुल्क व बैरूने मुल्क जामिआ़तुल मदीना (लिल बनात) में दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान ह़ज़रत मौलाना ह़ाजी अबू ह़ामिद मुह़म्मद इ़मरान अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي ने मदनी चैनल के ज़रीए सुन्नतों भरा बयान फ़रमाया।

इस दौरान सालाना इम्तिहानात में नुमायां पोज़ीशन ह़ासिल करने वाली त़ालिबात में मदनी तहाइफ़ भी तक़्सीम किये गए।

3 मद्रसतुल मदीना (लिल बनीन व लिल बनात)

★ दा'वते इस्लामी के मदारिसुल मदीना से हिफ़्ज़े कुरआन की सआ़दत पाने वाले हुफ़्फ़ाज़ हर साल सेंकड़ों मसाजिदे अहले सुन्नत में तरावीह़ में कुरआने पाक (मुसल्ला) सुनते, सुनाते हैं । पिछले साल (1436 हि., 2015 ई.) की निस्बत इस साल (1437 हि. 2016 ई.) में तक़रीबन 5557 (पांच हज़ार पांच सौ सत्तावन) हुफ़्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा हुवा, जिन्हों ने तरावीह़ में कुरआने पाक सुनने/सुनाने की सआ़दत ह़ासिल की ★ पाकिस्तान भर में इस साल मद्रसतुल मदीना (लिल बनीन व लिल बनात) में 17317 (सतरह हज़ार तीन सो सतरह) नए दाख़िले हुए । ★ इस साल मद्रसतुल मदीना के तक़रीबन 14754 (चौदह हज़ार सात सौ चव्वन) और जामिअ़तुल मदीना के तक़रीबन 3280 (तीन हज़ार दो सौ अस्सी) हुफ़्फ़ाज़ ने तरावीह़ में कुरआने पाक (मुसल्ला) सुनने/सुनाने की सआ़दत ह़ासिल की ।

4 मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या

★ वॉट्सएप (Whats App) पर बैरूने मुल्क के इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के लिये इस्तिख़ारे की सर्विस का आग़ाज किया गया है, जिस से माहाना हज़ारों इस्लामी बहनें और इस्लामी भाई फ़ैज़याब हो रहे हैं । इस की तफ़्सीलात दा'वते इस्लामी की वेबसाइट (www.dawateislami.net) पर देखी जा सकती हैं । ★ बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से ब ज़रीअ़ए वॉट्सएप (Whats App) मुरीद या त़ालिब होने की सर्विस शुरूअ़ की गई है, जिस से माहाना हज़ारों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें फ़ाएदा ह़ासिल कर रहे हैं । इस नम्बर (+923212626112) पर वॉट्सएप (Whats App) के ज़रीए राबित़ा किया जा सकता है । ★ म-दनी चैनल पर बंगला और इंग्लिश ज़बान में भी "रूह़ानी इलाज" का सिल्सिला शुरूअ़ हो चुका है ।

5 मजलिसे खुद्दामुल मसाजिद

मजलिसे खुद्दामुल मसाजिद (पाकिस्तान) के तह़्त जनवरी ता नवम्बर 2016 ई. (ग्यारह माह) में दा'वते इस्लामी को मसाजिद के लिये 480 प्लॉट्स ह़ासिल हुए । 229 नई मसाजिद की ता'मीरात शुरूअ़ हुईं और 134 मसाजिद में बा क़ाइदा नमाज़ों का सिल्सिला शुरूअ़ हुवा । फ़िल वक़्त पाकिस्तान में तक़रीबन 480 मसाजिद ज़ेरे ता'मीर हैं ।

6 मजलिसे मदनी कोर्सिज़

दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में ज़िम्मादाराने दा'वते इस्लामी के इ़लावा दीगर आ़शिक़ाने रसूल की भी मदनी तरबियत का सिल्सिला जारी रहता है, इस सिल्सिले में वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ का इन्इ़क़ाद किया जाता है । मजलिसे मदनी कोर्सिज़ के तह़्त फ़रवरी ता दिसम्बर 2016 ई. (ग्यारह माह) में पाकिस्तान भर में "12 दिन के 124 म-दनी कोर्स" हुए । जिन में 3977 आ़शिक़ाने रसूल ने कोर्स करने की सआ़दत ह़ासिल की । याद रहे ! येह वोह मदनी कोर्स है, जिस के बारे में बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं कि : "येह किरदार साज़ कोर्स है ।" अल्लाह करे कि हर दा'वते इस्लामी वाला "12 दिन का मदनी कोर्स" करे, कोई महरूम न रहे । अब इस का नाम "इस्लाह़े आ'माल कोर्स" रखा गया है ।

7 मजलिसे तह़्फ़ुज़े अवराक़े मुक़द्दसा

दा'वते इस्लामी के 103 शो'बाजात में से एक शो'बा "मजलिसे तह़्फ़ुज़े अवराक़े मुक़द्दसा" भी है, जिस के तह़्त पाकिस्तान के तक़रीबन 150 से ज़ाइद शहरों में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर 27000 (सत्ताईस हज़ार) बॉक्स (Box) लगाए जा चुके हैं और अब तक अवराक़े मुक़द्दसा के तक़रीबन 2 लाख थेले मह़फ़ूज़ किये जा चुके हैं । पिछले 2 माह में तक़रीबन 6080 थेले मह़फ़ूज़ किये गए और 2 हज़ार से ज़ाइद नए बॉक्स (Box) लगाए गए ।

8 मजलिसे राबित़ा बिल उ़लमा वल मशाइ़ख़

दा'वते इस्लामी का एक शो'बा "मजलिसे राबित़ा बिल उ़लमा वल मशाइख़" भी है जिस के तह़्त पिछले 6 माह में अहले सुन्नत के जामिआ़त व मदारिस के तक़रीबन 2000 से ज़ाइद त़लबाए किराम ने दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत की । 870 से ज़ाइद उ़लमा व मशाइख़, अइम्मा व ख़ुत़बा से मजलिस के ज़िम्मादारान ने मुलाक़ात की सआ़दत पाई । अहले सुन्नत के 160 से ज़ाइद जामिआ़त व मदारिस में मजलिस के ज़िम्मादारान ने ह़ाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल की । पाकिस्तान भर के मुख़्तलिफ़ शहरों में क़ाइम दा'वते इस्लामी के मदनी मराकिज़ में 570 से ज़ाइद उ़लमा व मशाइख़ ने दौरा फ़रमाया ।

9 शो'बा मदनी तरबियत गाहें (इस्लामी बहनें)

शो'बा मदनी तरबियत गाहें (इस्लामी बहनें) के तह़्त इस्लामी बहनों के 12 दिन के कोर्सिज़ तक़रीबन सारा साल जारी रहते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عزوجل 2016 ई. में मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ (मसलन ख़ुसूसी इस्लामी बहन कोर्स, फ़ैज़ाने क़ुरआन कोर्स, फ़ैज़ाने नमाज़ कोर्स, मदनी कोर्स) पाकिस्तान के 7 शहरों : "बाबुल मदीना कराची, मर्कज़ुल औलिया लाहोर, मदीनतुल औलिया मुलतान, रावलपिन्डी, गुलज़ारे त़यबा (सरगोधा), गुजरात, सरदाराबाद फ़ैसलाबाद और हिन्द के दो शहरों आगरा और कानपूर" में कुल 19 कोर्स हुए। इन में 3427 इस्लामी बहनों ने शिर्कत की सआ़दत पाई।

10 मजलिसे कोर्सिज़ (इस्लामी बहनें)

इस्लामी बहनों की मजलिसे कोर्सिज़ वक़्तन फ़ वक़्तन मुल्क व बैरूने मुल्क इस्लामी बहनों को कोर्सिज़ करवाती है। येह कोर्सिज़ ग़ैर रिहाइशी होते हैं और इन का दौरानिया रोज़ाना तक़रीबन दो घन्टे होता है। इन के अय्याम की ता'दाद मुख़्तलिफ़ होती है मसलन 12 दिन, 30 दिन, 92 दिन वग़ैरा। इन कोर्सिज़ के मक़ासिद में मुख़्तलिफ़ शो'बों की इस्लामी बहनों को मदनी माह़ोल के क़रीब लाना और फ़र्ज़ उ़लूम ह़ासिल करने का जज़्बा बेदार करना है। गुज़श्ता 6 माह में इस मजलिस के तह़्त 5 कोर्सिज़ हुए : ★ पाकिस्तान में 83 मक़ामात पर होने वाले "**फ़ैज़ाने ह़ज व उ़मरह कोर्स**" में 1021 इस्लामी बहनों ने शिर्कत की ★ पाकिस्तान में 154 मक़ामात पर "**फ़ैज़ाने तज्वीद व नमाज़ कोर्स**" में 2297 इस्लामी बहनें शरीक हुईं ★ गर्मियों की छुट्टियों से फ़ाएदा उठाते हुए पहली से तीसरी क्लास की मदनी मुन्नियों के लिये पाकिस्तान में 139 मक़ामात पर "**फ़ैज़ाने ह़सनैने करीमैन**" कोर्स हुवा जिस में 2579 मदनी मुन्नियों ने शिर्कत की। इसी त़रह़ येह कोर्स चौथी (4th) से आठवीं (8th) क्लास की मदनी मुन्नियों के लिये पाकिस्तान में 153 मक़ामात पर हुवा, जिस में 2531 मदनी मुन्नियों ने शिर्कत की। ★ पाकिस्तान में 419 मक़ामात पर "**फ़ैज़ाने अन्वारे क़ुरआन कोर्स**" हुवा जिस में 5881 इस्लामी बहनें शरीक हुईं ★ "**फ़ैज़ाने रफ़ीक़ुल ह़रमैन कोर्स**" बाबुल मदीना कराची में एक मक़ाम पर हुवा जीस में शुरका इस्लामी बहनों की ता'दाद 24 ने शिर्कत की थी।

11 मजलिसे ह़ज व उ़मरह (इस्लामी बहनें)

गुज़श्ता 2 माह में मजलिसे ह़ज व उ़मरह (इस्लामी बहनें) के तह़्त पाकिस्तान में 153 मक़ामात पर "**ह़ज तरबियती इज्तिमाआ़त**" हुए जिस में तक़रीबन 7279 इस्लामी बहनों ने शिर्कत की सआ़दत पाई।

12 मजलिसे उ़श्र व अत़राफ़ गाउं

एक अन्दाज़े के मुत़ाबिक़ पाकिस्तान की 70% से ज़ाइद आबादी दीहातों पर मुश्तमिल है, दीहातों में रहने वाले मुसलमानों को नेकी की दा'वत देने के लिये दा'वते इस्लामी की मजलिस उ़श्र व अत़राफ़ गाउं क़ाइम की गई है, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عزوجل येह मजलिस दा'वते इस्लामी के मदनी कामों के लिये उ़श्र भी जम्अ़ करती है और दीहातों में रहने वालों को मदनी माह़ोल से वाबस्ता कर के नमाज़ व सुन्नत का पाबन्द बनाने की कोशिश भी करती है, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عزوجل इस मजलिस के तह़्त आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना (कराची) में 3 दिन के तरबियती इज्तिमाअ़ का इन्इ़क़ाद किया गया, जिस में मुल्क भर के सेंकड़ों दीहातों से कमो बेश छ हज़ार (6000) इस्लामी भाइयों ने शिर्कत की इस तरबियती इज्तिमाअ़ में दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के मुफ़्तियाने किराम और निगरान व अराकीने शूरा ने तरबियती बयानात फ़रमाए, इख़्तिताम पर साढ़े चार सौ (450) से ज़ाइद इस्लामी भाइयों ने अपने आप को 12 माह, 92 दिन, 63 दिन, 41 दिन और 12 दिन के लिये पेश किया।

13 मजलिसे तराजिम

मजलिसे तराजिम का बुन्यादी काम अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه और मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ कुतुबो रसाइल का दुन्या की मुख़्तलिफ़ ज़बानों में तर्जमा करना है। ता दमे तह़रीर मजलिसे तराजिम के तह़्त 36 ज़बानों में 1364 कुतुबो रसाइल का तर्जमा हो चुका है। ह़ाल ही में दर्जे ज़ैल रसाइल का मुख़्तलिफ़ ज़बानों में तर्जमा हुवा : (1) अंग्रेज़ी (English) : ★ ख़ौफ़नाक जादूगर ★ एक ज़माना ऐसा आएगा ★ माले विरासत में ख़ियानत न कीजिये ★ ज़ख़्मी सांप ★ करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म (2) तुर्की (Turkish) : ★ ज़िन्दा बेटी कूंएं में फेंक दी (3) पश्तो (Pashto) : ★ मदनी क़ाइदा ★ मुसाफ़िर की नमाज़ (4) तामिल

(Tamil) : ★ पुर असरार ख़ज़ाना ★ ज़ख़्मी सांप ★ ज़िन्दा बेटी कूंएं में फेंक दी (5) क्रिओल (Creole) : ★ क़ब्र की पहली रात (6) डच (Dutch) : ★ इस्तिन्जा का तरीक़ा (7) पुर्तगाली (Portuguese) ★ हाथों हाथ फूफी से सुल्ह कर ली ★ फ़िरऔन का ख़्वाब ★ सुन्नते निकाह ★ करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म।

हाल ही में शाएअ़ होने वाली चन्द कुतुबो रसाइल

(1) अंग्रेज़ी (English) : ★ बद गुमानी ★ नाम रखने के अहकाम ★ मजूसी का क़बूले इस्लाम ★ मीठे बोल ★ चन्दा करने की शरई एहतियातें ★ तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत (क़िस्त 4) (2) क्रिओल (Creole) : ★ आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का महीना ★ फ़ैज़ाने नमाज़ (3) इन्डोनेशियन (Indonesian) : ★ अश्कों की बरसात ★ ग़रीब फ़ाएदे में है ★ नूर वाला चेहरा (4) इटालियन (Italian) : ★ इस्लाम की बुन्यादी बातें (5) पश्तो (Pashto) : ★ 72 मदनी इन्आ़मात ★ बारह मदनी काम ★ करामाते उ़स्माने ग़नी।

अगले शुमारे में दीगर शो'बाजात में होने वाले दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की झल्कियां पेश की जाएंगी।

जश्ने आज़ादी और दा'वते इस्लामी

★ "यौमे आज़ादी" (14 अगस्त) के मौक़अ़ पर बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़रमान पर आज़ादी के शुक्राने में दा'वते इस्लामी के मुख़्तलिफ़ शो'बाजात जामिअ़तुल मदीना, मद्रसतुल मदीना और दारुल मदीना के हज़ारों आ़शिक़ाने रसूल ने 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कर के मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में दा'वते इस्लामी का मदनी पैग़ाम और नेकी की दा'वत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल की। ★ 12, 13, 14 अगस्त, चिश्ती काबीना (सरदारआबाद, फ़ैसलआबाद) की मुख़्तलिफ़ डिवीज़नों से मुख़्तलिफ़ शो'बाहाए ज़िन्दगी से तअ़ल्लुक़ रखने वाले सेंकड़ों आ़शिक़ाने रसूल ने "ख़ैबर पख़्तून ख़्वाह" (KPK) में 3 दिन के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र किया ★ दा'वते इस्लामी ने यौमे आज़ादी के मौक़अ़ पर इलेक्ट्रोनिक मीडिया (Electronic Media) मसलन मदनी चैनल, सोश्यल मीडिया (Social Media) फ़ेसबुक (Facebook), ट्वीटर (Twitter), वॉट्सएप (Whats App) वग़ैरा पर ज़ियादा से ज़ियादा नेकियों की तह़रीक चलाने की कोशिश की।

रमज़ान ए'तिकाफ़ और दा'वते इस्लामी

दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में हर साल हज़ारों आ़शिक़ाने रसूल मुल्क व बैरूने मुल्क पूरा माहे रमज़ान और आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ करने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं। दुन्याए दा'वते इस्लामी का सब से बड़ा ए'तिकाफ़ दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना (कराची) में होता है, जिस में बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ब नफ़्से नफ़ीस जल्वा फ़रमा होते हैं और हज़ारों मो'तकिफ़ीन की मदनी तरबियत फ़रमाते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! इस साल (1437 हि., 2016 ई.) सिर्फ़ पाकिस्तान में मज्मूई तौ़र पर 83 (तिरासी) मक़ामात पर पूरे माहे रमज़ान का ए'तिकाफ़ हुवा, जिस में तक़रीबन 10216 (दस हज़ार दो सो सोलह) इस्लामी भाइयों ने ए'तिकाफ़ किया, इसी त़रह 1490 (एक हज़ार चार सो नव्वे) मक़ामात पर आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ हुवा, जिस में तक़रीबन 77406 (सतत्तर हज़ार चार सौ छ) इस्लामी भाइयों ने ए'तिकाफ़ की सआ़दत पाई।

चांदरात (ईदुल फ़ित्र) और मदनी क़ाफ़िले

ए'तिकाफ़ की सआ़दत पाने वाले मो'तकिफ़ीन में से कई आ़शिक़ाने रसूल यादे रमज़ान के ह़सीन लम्ह़ात को बर क़रार रखने और इस मदनी मक़्सद **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ"** के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त चांदरात से हाथों हाथ 3 दिन, 12 दिन, 1 माह और 12 माह के मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनते हैं, कई आ़शिक़ाने रसूल मुख़्तलिफ़ मदनी कोर्सिज़ मसलन 63 दिन के मदनी तरबियती कोर्स, 41 दिन के मदनी क़ाफ़िला व मदनी इन्आ़मात कोर्स और किरदार साज़ कोर्स या'नी "12 दिन के मदनी कोर्स" के लिये भी अपने आप को पेश करते हैं। इस साल (1437 हि., 2016 ई.) चांदरात को पाकिस्तान भर से मजमूई तौ़र पर

तक़रीबन 1041 (एक हज़ार इक्तालीस) मदनी क़ाफ़िलों में तक़रीबन 7390 (सात हज़ार तीन सौ नव्वे) आशिक़ाने रसूल ने सफ़र किया।

दा'वते इस्लामी की बैरूने मुल्क की मदनी ख़बरें (Overseas)

दुन्या भर में फ़ज़्ले रब (عَزَّوَجَلَّ) से दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की धूमधाम है। बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा मदनी मक़्सद **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ" पर अ़मल करते हुए दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के अराकीन और दीगर मुबल्लिग़ीन मुल्क व बैरूने मुल्क नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये सफ़र करते रहते हैं। उन में से चन्द मुबल्लिग़ीन के सफ़र और मुख़्तलिफ़ मुमालिक में मदनी कामों की कुछ तफ़्सीलात मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

1 मुख़्तलिफ़ मुमालिक में सफ़र

गुज़श्ता महीनों में अराकीने शूरा और मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी का इन मुमालिक और शहरों में सफ़र रहा :

(1) साउथ अफ़्रीक़ा (South Africa) के शह्र : जोहानिस्बर्ग (Johannesburg), डर्बन (Durban), प्रीटोरिया (Pretoria), वेलकोम (Welkom) और केपटाउन (Cape Town)।

(2) मलाईशिया (Malaysia) के शह्र : कुआला लमपूर (Kuala Lumpur)

(3) अमरीका (America) के शह्र : ब्रोक्लीन न्यूयॉर्क (Brooklyn New York), बॉल्टीमोर मेरीलेन्ड (Baltimore Maryland), शिकागो इलेन्वे (Chicago Illinois), एटलान्टा ज्योर्जिया (Atlanta Georgia), डेलॉस टेक्सास (Dallas Texas) और ह्यूस्टन टेक्सास (Houston Texas)।

(4) केनेडा (Canada) के शह्र : वेंकुवर (Vancouver), केलगरी (Calgary), रेजाइना (Regina), वनीपेग (Winnipeg) मोन्ट्रीयाल (Montreal), ओटावा (Ottawa) और टोरन्टो (Toronto)।

(5) रूस (Russia) के शह्र : मॉस्को (Moscow) और सेन्ट पीटर्ज़बर्ग (Saint Petersburg)।

2 मलाईशिया (Malaysia) में तरबियती इज्तिमाअ़

4 शव्वालुल मुकर्रम 1437 हि. को मलाईशिया (Malaysia) के शह्र कुआला लमपूर (Kuala Lumpur) में दा'वते इस्लामी के ज़िम्मादारान का तरबियती इज्तिमाअ़ हुवा।

3 अमरीका (America) में मुख़्तलिफ़ मदनी काम

फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद सेक्रामेन्टो केलीफ़ोर्निया (Sacramento California) में दा'वते इस्लामी के तह़्त इज्तिमाई तरबियती ए'तिकाफ़ हुवा, जिस में 50 इस्लामी भाई आख़िरी अ़शरे के लिये मो'तकिफ़ थे। मो'तकिफ़ीन ने ईदुल फ़ित्र के दिन केनेडा (Canada) के शह्र वेंकुवर (Vancouver) में मदनी क़ाफ़िले में सफ़र भी फ़रमाया।

★ اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ रेजाइना (Regina) में दा'वते इस्लामी ने चर्च (Church) ख़रीद कर मस्जिद ता'मीर की है।

★ टोरन्टो (Toronto) में इस्लामी भाइयों ने बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की जल्द शिफ़ायाबी की निय्यत से 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में भी सफ़र की सआ़दत पाई।

★ 6 अगस्त 2016 ई. बरोज़ हफ़्ता अमरीका की स्टेट ज्योर्जिया (Georgia) के शह्र एटलान्टा (Atlanta) में दा'वते इस्लामी के नए मदनी मर्कज़ "फ़ैज़ाने मदीना" के इफ़्तिताह़ के सिल्सिले में सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ हुवा। तक़रीबन डेढ़ एकड़ पर

मुहीत़ इस फ़ैज़ाने मदीना में मस्जिद, मदनी मुन्नों के लिये मद्रसतुल मदीना, जामिअ़तुल मदीना और दा'वते इस्लामी के दीगर शो'बाजात क़ाइम होंगे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

4 ईरान में फ़ैज़ाने कुरआन कोर्स

दा'वते इस्लामी के तह़्त ईरान के शह़र बम्बासरी (Bambasari) में 30 दिन का "**फ़ैज़ाने कुरआन कोर्स**" हुवा। इस कोर्स में तज्वीद के साथ कुरआने करीम सिखाने के इ़लावा त़हारत, वुज़ू व ग़ुस्ल, नमाज़ के अह़काम, बात़िनी गुनाहों से आगाही, अख़्लाक़ी तरबियत और दा'वते इस्लामी का मदनी काम करने का अन्दाज़ भी सिखाया जाता है।

5 नेपाल (Nepal) में इमामत कोर्स

नेपाल के शह़र नेपाल गन्ज (Nepal Gunj) में दा'वते इस्लामी के तह़्त 126 दिन का "इमामत कोर्स" हुवा। इस से पहले मुअ़ल्लिमे इमामत कोर्स में इमामत कोर्स करवाने के अह़्ल इस्लामी भाइयों की तरबियत की गई।

6 इटली (Italy) के शह़र बलोनिया में मदनी काम

इटली के शह़र बलोनिया (Bologna) में 12, 13, 14 अगस्त, 3 दिन का तरबियती इज्तिमाअ़ हुवा, जिस में 350 से ज़ाइद इस्लामी भाइयों ने शिर्कत की। इसी दौरान यहां इस्लामी बहनों का 3 दिन का "मदनी काम कोर्स" भी हुवा। ★ इटली के शह़र Brescia में इस्लामी बहनों का 3 दिन का मदनी इन्आ़मात कोर्स हुवा। ★ इस्लामी बहनों की मजलिस शो'बए ता'लीम के तह़्त 10 शव्वालुल मुकर्रम 1437 हि. को इटली में 10 मक़ामात पर "फ़ैज़ाने तज्वीद व नमाज़ कोर्स" करवाया गया, जिस में कसीर इस्लामी बहनों ने शिर्कत की।

7 हिन्द (India) में मदनी काम

★ शव्वालुल मुकर्रम 1437 हि. से हिन्द के मुख़्तलिफ़ शहरों ताजपूर शरीफ़ (नागपूर), कलियर शरीफ़, अ़त्तारआबाद (ठाकुर द्वारा,) भूज, राजोरी, पलवामा (कश्मीर) में दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) करवाने के लिये 6 नए जामिआ़तुल मदीना का आग़ाज़ हुवा। ★ दा'वते इस्लामी की मजलिस जामिअ़तुल मदीना और मजलिस मदनी कोर्सिज़ के तह़्त हिन्द के शह़र अह़मदाबाद और आकोला में 2 मक़ामात पर 126 दिन का "इमामत कोर्स" और ह़ैदराबाद दक्कन और अह़मदाबाद के 3 मक़ामात पर 63 दिन का "फ़ैज़ाने कुरआन कोर्स" जब कि चेन्नई आंध्रप्रदेश में "फ़ैज़ाने नमाज़ कोर्स" हुवा। ★ हिन्द में ही 2 मक़ामात पर इस्लामी बहनों के लिये "फ़ैज़ाने रफ़ीक़ुल ह़रमैन कोर्स" करवाया गया। ★ इस्लामी बहनों की मजलिस शो'बए ता'लीम के तह़्त हिन्द में 10 मक़ामात पर "फ़ैज़ाने तज्वीद व नमाज़ कोर्स" हुवा।

8 ईस्ट अफ़्रीक़ा (East Africa) में मदनी काम

★ اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ईस्ट अफ़्रीक़ा के 2 मक़ामात यूगान्डा (Uganda) और दारुस्सलाम तन्ज़ानिया (Tanzania) में मदनी मुन्नों के लिये मद्रसतुल मदीना (ह़िफ़्ज़) का आग़ाज़ हुवा। ★ 13, 14, 15 अगस्त 2016 ई. तन्ज़ानिया में इस्लामी बहनों का तीन दिन का "मदनी इन्आ़मात कोर्स" हुवा।

9 U.K. में फ़ैज़ाने ह़ज व उ़मरह कोर्स

★ यूके (U.K.) में 12 मक़ामात पर इस्लामी बहनों का ग़ैर रिहाइशी "**फ़ैज़ाने ह़ज व उ़मरह कोर्स**" करवाया गया। ★ इस्लामी बहनों की मजलिस शो'बए ता'लीम के तह़्त यूके (U.K.) में 3 मक़ामात पर "**फ़ैज़ाने तज्वीद व नमाज़ कोर्स**" हुवा।

10 अन्दरून व बैरूने मुल्क मदनी क़ाफ़िलों का सफ़र

बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की जल्द सिह़्ह़त याबी पर पाकिस्तान भर से 3 दिन के 811 मदनी क़ाफ़िलों में हज़ारों शुरका ने सफ़र किया जब कि सिर्फ़ चांदरात और ईदुल फ़ित्र के दिनों में

मुल्क व बैरूने मुल्क से कमो बेश 1191 मदनी क़ाफ़िलों में कमो बेश 6642 शुरका ने सफ़र किया।

12 दिन का मदनी मक़्सद कोर्स : बैरूने मुल्क सफ़र करने के ख़्वाहिश मन्द इस्लामी भाइयों के लिये दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना** (कराची) में 5 अगस्त से 12 दिन का **"मदनी मक़्सद कोर्स"** शुरूअ़ हुवा। इस कोर्स में फ़र्ज़ उ़लूम के साथ साथ बैरूने मुल्क मदनी काम करने का त़रीक़ए कार और पेश आने वाले मसाइल से आगाही और उन का ह़ल सिखाया जाता है। येह कोर्स आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना (कराची) में हर 2 माह में एक बार होता है।

(शख़्सिय्यात की मदनी ख़बरें)

दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में उ़लमा व शख़्सिय्यात की आमद होती रहती है. गुज़श्ता दिनों ह़ज़रत पीर साईं मियां अ़ब्दुल ख़ालिक़ क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی (ख़ानक़ाहे आ़लिय्या भरचोंडी शरीफ़ ज़िलअ़ घोटकी) साह़िबे तसानीफ़े कसीरा ह़ज़रत मौलाना अबुल ह़क़ाइक़ ग़ुलाम मुर्तज़ा मुजद्दिदी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی (मुदर्रिस जामिआ़ अजमेरिया मुजद्दिदिया जामेअ़ मस्जिद नूर मदीना टाउन शिप गोजरांवाला) उस्ताज़ुल क़ुर्रा ह़ज़रत मौलाना क़ारी ख़ादिम ह़ुसैन सईदी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی (प्रिन्सिपल जामिअ़तुस्सईदिया लिल बनात ख़ुशह़ाल कॉलोनी मदीनतुल औलिया मुलतान) और दीगर शख़्सिय्यात ने आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची के मुख़्तलिफ़ शो'बाजात का दौरा फ़रमाया। ह़ज़रत मौलाना ग़ुलाम मुर्तज़ा साक़ी मुजद्दिदी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی ने इस मौक़अ़ पर आ़लमी सत्ह़ पर होने वाली ख़िदमाते दा'वते इस्लामी को ख़ूब सराहते हुए इर्शाद फ़रमाया : दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ बाबुल मदीना कराची में ह़ाज़िर हैं और मुख़्तलिफ़ शो'बाजात के अन्दर भी ह़ाज़िरी हुई, इस्लामी भाइयों ने बड़े प्यार व महब्बत के साथ इस्तिक़्बाल किया, फ़ैज़ाने मदीना एक अ़ज़ीमुश्शान दीनी और इशाअ़ती मर्कज़ है, इस में जिस भी शो'बे को देखा जाए तो इन्सान की अ़क़्ल दंग रह जाती है, जिस अन्दाज़ में यहां दीन और मस्लक का काम किया जा रहा है, मैं समझता हूं कि इस वक़्त अगर जाएज़ा लिया जाए तो वोह दा'वते इस्लामी ही का ह़िस्सा है, बिल ख़ुसूस दा'वते इस्लामी के बानी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه जिन्हों ने बड़े ख़ुलूस और ह़ुस्ने निय्यत के साथ दा'वते इस्लामी की बुन्याद रखी तो **अल्लाह** तआ़ला ने इन के ख़ुलूस की बरकत से दा'वते इस्लामी को मज़ीद तरक़्क़ियां अ़त़ा फ़रमाईं, और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह सिल्सिला बढ़ रहा है, मुस्तक़्बिल में मज़ीद बढ़ता चला जाएगा, जिस अन्दाज़ में शो'बाजात का तआ़रुफ़ करवाया गया तो देख कर ऐसा लगता है कि येह एक ऐसा सिल्सिला है कि दुन्या के किसी भी कोने में कोई शख़्स अगर इस्लाम की या मस्लक की मा'लूमात ह़ासिल करना चाहे तो हर त़रह़ की सहूलत के साथ उसे रहनुमाई ह़ासिल होगी, और शो'बा मद्रसतुल मदीना ऑन लाइन तब्लीग़े (दीन) का बहुत नफ़ीस और ह़सीन सिल्सिला है। मदनी चैनल घर घर जिस अन्दाज़ में इस्लाम की ख़िदमत कर रहा है, इस की मिसाल इस दौर में मिलना मुश्किल है। मैं ने ऐसे ऐसे लोगों को देखा है कि जिन को कलिमे का तलफ़्फ़ुज़ भी नहीं आता था और नमाज़ पढ़ने का त़रीक़ा नहीं आता था लेकिन दा'वते इस्लामी के इस मदनी चैनल से उन लोगों ने बहुत रहनुमाई ह़ासिल की, बहुत कुछ सीखा। जो बे नमाज़ी थे उन्हें नमाज़ी बनने का मौक़अ़ मिला, **अल्लाह तआ़ला** मदनी चैनल को क़ाइम व बर क़रार रखे। आमीन (बरोज़ ह़फ़्ता 23.07.2016)

हज़रत दाता गन्ज बख़्श सय्यिद अ़ली हिजवेरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार की जामेअ़ मस्जिद के ख़तीब हज़रत मौलाना मुफ़्ती हाफ़िज़ अबुज़्ज़िया मुहम्मद रमज़ान सियालवी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی कुछ माह क़ब्ल दा'वते इस्लामी के दारुल मदीना (स्कूल) मर्कज़ुल औलिया लाहोर में तशरीफ़ लाए, आप ने दा'वते इस्लामी की ख़िदमात के बारे में फ़रमाया : आज दारुल मदीना सब्ज़ा ज़ार में हाज़िरी का शरफ़ हासिल हुवा है, चूंकि मेरा एक अ़ज़ीज़ और एक बेटा रिज़ाउर्रहमान यहां ज़ेरे ता'लीम हैं और मेरे एक प्यारे दोस्त और भाई भी अपने बेटे को यहां दाख़िल करवाना चाहते हैं इस सिल्सिले में हाज़िरी हुई है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमेशा की तरह इस बार भी दारुल मदीना में हाज़िर हो कर यहां के ता'लीमी निज़ाम और इस के साथ साथ असातिज़ा और इन के सर परस्तों के ज़ौक़ो शौक़, नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत, दीन की ख़िदमत और सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतों से प्यार (और वाबस्तगी) देख कर बहुत मसर्रत हुई है। जिस ज़ौक़ो शौक़ और लगन के साथ येह मेहनत कर रहे हैं اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह वक़्त दूर नहीं कि जब दा'वते इस्लामी और अहले सुन्नत व जमाअ़त के यहां से फ़ारिग़ुत्तहसील होने वाले हमारे बच्चे और बच्चियां मुल्के पाकिस्तान की तरक़्क़ी, बेहतरी, फ़लाह, अम्न, महब्बत, ता'लीम, मेडीकल और साइन्स वग़ैरा तमाम शो'बाजात में अपनी ख़िदमात सर अन्जाम देंगे और इन की पहचान नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें होंगी। **अल्लाह तआ़ला** इन्हें मज़ीद तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को सिह्हते कामिला आजिला नाफ़िआ़ मुस्तमिरा अ़ता फ़रमाए। (बरोज़ मंगल 02.08.2016)

मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी ने दारुल उ़लूम रज़विय्या ज़ियाउल उ़लूम रावलपिन्डी (पंजाब) का दौरा किया और दारुल उ़लूम के मोहतमिम और बानी, ख़लीफ़ए क़ुत्बे मदीना, उस्ताज़ुल उ़लमा हज़रत मौलाना सय्यिद हसीनुद्दीन शाह ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुलाक़ात की। इस मौक़अ़ पर उन्हों ने अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सिह्हतो तन्दुरुस्ती के लिये दुआ़ फ़रमाई। (बरोज़ हफ़्ता 23.07.2016)

रुक्ने शूरा व निगराने पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना दीगर इस्लामी भाइयों के हमराह फ़क़ीहुल अ़स्र हज़रत मुफ़्ती अबू सईद मुहम्मद अमीन مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی सरदाराबाद (फ़ैसलाबाद) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आप ने बड़े ख़ुश गवार और महब्बत भरे अन्दाज़ से अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का तज़्किरा फ़रमाते हुए दुआ़ए सिह्हत फ़रमाई, जामिअ़तुल मदीना लिल बनात की ता'दाद व कारकर्दगी का सुन कर बहुत ख़ुशी का इज़्हार फ़रमाया। (बरोज़ मंगल 19.07.2016)

मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी ने मर्कज़ुल औलिया लाहोर में साबिक़ चीफ़ जस्टिस ऑफ़ पाकिस्तान इफ़्तिख़ार अह्मद चौधरी से मुलाक़ात फ़रमाई और उन्हें दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत दी। (बरोज़ पीर 25.07.2016)

न्यूरो सर्जन डॉक्टर मुहम्मद शकील और हार्ट स्पेश्यालिस्ट शौकत मेमन ने फ़ैज़ाने मदीना आफ़न्दी टाउन ज़मज़म नगर हैदराबाद में निगराने मजलिसे मदनी क़ाफ़िला पाकिस्तान और दीगर मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी से मुलाक़ात की, इस मौक़अ़ पर डॉक्टर मुहम्मद शकील ने तअस्सुरात देते हुए कहा : मैं पहली बार फ़ैज़ाने मदीना हैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) में आया और यहां का माहोल देख कर मुझे येह एहसास हुवा कि मैं आज से पहले यहां क्यूं नहीं आया। यहां का तरीक़ए कार और माहोल देख कर मैं अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से येह दरख़्वास्त करूंगा कि वोह ज़रूर यहां आएं और देखें कि इस्लाम की तब्लीग़ कैसे की जाती है और इस से इस्लाम का कितना नाम रौशन होता और इस्लाम फैलता है। डॉक्टर शौकत मेमन ने कहा : मैं ने फ़ैज़ाने मदीना आफ़न्दी टाउन हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) में आ कर यहां का माहोल देखा और हर हर चीज़ को मुनज़्ज़म (Organized) पाया। (बरोज़ मंगल 19.07.2016)

Salah, knowledge of spiritual diseases, ways to improve moral conduct and method of carrying out Madani activities of Dawat-e-Islami are also taught in this course along with teaching the recitation of Holy Quran with Tajweed (correct pronunciation).

Imamat Course in Nepal

126 days Imamat course is in progress by Dawat-e-Islami in Nepalgunj, Nepal. Mu'allim Imamat Course had been conducted before this course for training those Islamic brothers eligible to conduct Imamat course.

Madani activities in Bologna, Italy

A 3-day Tarbiyyati Ijtima' was held in Bologna on 12th, 13th and 14th August which was attended by more than 350 Islamic brothers. Meanwhile, a 3-day Madani activities course of Islamic sisters was also carried out here (in a separate portion with purdah [Islamic veil]), along with accommodation facility.

A 3-day Madani In'amaat course for Islamic sisters was conducted in Brescia, Italy.

'Faizan-e-Tajweed-o-Namaz' course was conducted at ten different places in Italy on 10th Shawwal-ul-Mukarram 1437 AH under the department of the 'Majlis Shu'bah Ta'leem' of Islamic sisters. A large number of Islamic sisters attended the course.

Madani activities in India

6 New Jami'aat-ul-Madinah in different cities of India 'Tajpur Sharif' (Nagpur), Kaliyar Shareef, Attarabad (Thakurdwara) Bhoj, Rajouri, Pulwama (Kashmir) have been started to teach Dars-e-Nizami ('Aalim) course.

A 126-day Imamat Course is being held in two cities of India 'Ahmedabad' and 'Akola' under Majlis Jami'a-tul-Madinah and Majlis Madani Course of Dawat-e-Islami. A 63-day Faizan-e-Quran Course was held in Hyderabad Deccan and at 3 different locations of Ahmedabad. Whereas, Faizan-e-Namaz Course is currently being conducted in Chennai and Andhra Pradesh.

Faizan-e-Rafeeq-ul-Haramayn course for Islamic sisters was held at two locations in India.

'Faizan-e-Tajweed and Namaz Courses were held at 10 locations in India under the department of 'Education Majlis for Islamic Sisters'.

Madani activities in East Africa

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ! Initiatives of Madani activities have been taken at two locations in East Africa, Uganda and Dar-us-Salam Tanzania as Madrasa-tul-Madinah (Hifz) have been started for Madani children (boys).

A 3-day Madani In'amaat course was conducted on 13th, 14th, 15th August 2016 in Tanzania.

Faizan Hajj and 'Umrah course in UK

'Faizan Hajj and 'Umrah Course' without boarding facility, was conducted in UK, for Islamic sisters at 12 different locations.

'Faizan-e-Tajweed and Namaz courses were held at 3 locations 'in UK under the department of 'Education Majlis for Islamic sisters'.

May Dawat-e-Islami Progress!

Dawat-e-Islami News Overseas

By the mercy of Allah عَزَّوَجَلَّ, the Madani activities of Dawat-e-Islami are progressing by leaps and bounds across the globe. The members of Markazi Majlis-e-Shura of Dawat-e-Islami and other Muballighin (preachers of Islam) travel regularly within the country as well as across the globe to call people towards righteousness to achieve the Madani Maqsad (aim) set by the founder of Dawat-e-Islami, Ameer-e-Ahl-e-Sunnat دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه: 'I must strive to reform myself and people of the entire world, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ'. Following are some details of the journeys of some Muballighin and the Madani activities which are being carried out in various countries:

Travelling to different countries

The members of Shura and other Muballighin of Dawat-e-Islami have travelled to the following countries and cities during the last two months:

Cities of South Africa: Johannesburg, Durban, Pretoria, Welkom and Cape Town.

City of Malaysia: Kuala Lumpur.

Cities of America: Brooklyn, New York; Baltimore, Maryland; Chicago, Illinois; Atlanta, Georgia; Dallas, Houston, Texas.

Cities of Canada: Vancouver, Calgary, Regina, Winnipeg, Montreal, Ottawa and Toronto.

Cities of Russia: Moscow and Saint Petersburg.

Various Madani activities in America

Congregational Tarbiyyati I'tikaf was organized by Dawat-e-Islami for the last ten days of the blessed month of Ramadan in Faizan-e-Madinah Masjid of Sacramento, California in which 50 Islamic brothers performed I'tikaf. Mu'takifeen also travelled with Madani Qafilah on the day of Eid-ul-Fitr to Vancouver, Canada.

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ! Dawat-e-Islami has purchased a church in Regina and constructed Masjid over there.

Islamic brothers of Toronto were privileged to travel with Madani Qafilah for three days with the intention of early recovery of the founder of Dawat-e-Islami, Ameer-e-Ahl-e-Sunnat دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه.

Sunnah-inspiring Ijtima' (congregation) was held on 6th August 2016 Saturday in Atlanta, Georgia (USA), at the opening ceremony of 'Faizan-e-Madinah' the new Madani Markaz of Dawat-e-Islami. Masjid, Madrasa-tul-Madinah for Madani children (boys), Jami'a-tul-Madinah and other departments of Dawat-e-Islami will be established in this newly built Faizan-e-Madinah having a covered area of about 1.5 acres اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ.

Faizan-e-Quran Course in Iran

30 Days Faizan-e-Quran course is being conducted by Dawat-e-Islami in Bambasari, Iran. Islamic method of attaining purity, laws of ablution and

entire country. In this Tarbiyyati congregation, honourable Muftis of Dar-ul-Ifta Ahl-e-Sunnat, Nigran and the members of Shura delivered speeches. At the end of congregation, more than 450 Islamic brothers presented themselves for 12 months, 92 days, 63 days, 41 days and 12 days.

13. Introduction to Majlis-e-Tarajim (Translation Majlis)

The primary job of Majlis-e-Tarajim (Translation Majlis) is to undertake the task of translation of the books and booklets authored by Shaykh-e-Tareeqat, Ameer-e-Ahl-e-Sunnat 'Allamah Maulana Abu Bilal Muhammad Ilyas Attar Qaadiri Razavi دامت برکاتہم العالیہ and the publication of Maktaba-tul-Madinah. Until the writing of this content, Majlis-e-Tarajim, has the honour to work in 36 different languages of the world in which books and booklets are being translated. Following are the booklets translated recently into different languages:

English: Khofnak Jadugar, Aik Zamanah Aysa Aaye Ga, Maal-e-Wirasat mayn Khiyanat na Ki-Jiye, Zakhmi Saanp, Karamaat Farooq-e-A'zam رضی اللہ تعالی عنہ. Islam ki bunyadi batein Part-3, Miswak Sherif k Fazail, Tazkira e Mujaddid Alf e Sani رحمۃ اللہ تعالی علیہ Aashiqan-e-Rasool ki 130 Hikayat.

Turkish: Zindah Bayti Kunwayn mayn Phaynk Di.

Pashto: Madani Qai'dah, Musafir ki Namaz

Tamil: Pur-Asraar Khazanah, Zakhmi Saanp, Zindah Bayti Kunwayn mayn Phaynk Di.

Creole: Qabr ki Pehli Raat

Dutch: Istinja ka Tareeqah

Portuguese: Hatho Hath Phoophi say Sulah Ker Li, Fir'awn ka Khuwab, Tazkirah Ameer-e-Ahl-e-Sunnat Part 3 (Sunnat-e-Nikah), Karamaat Farooq-e-A'zam رضی اللہ تعالی عنہ.

Thus Majlis-e-Tarajim had the privilege of translating total 21 booklets recently in seven different languages.

Following are the books and booklets expected to be published soon:

English: Bad-Gumani, Naam Rakhnay kay Ahkam, Majoosi ka Qubool-e-Islam, Meethay Bol, Chandah Kernay ki Shar'i Ihtiyatayn, Tazkirah Ameer-e-Ahl-e-Sunnat Part 4 (Shauq-e-'Ilm-e-Deen), Neki ki Dawat, Aashiqan e Rasool ki 130 Hikayat, Naik Banney aur bananey k tariqey, Islam ki bunyadi batein Part-3.

Creole: Aqa ka Mahinah, Faizan-e-Namaz

Indonesian: Ashkon ki Barsaat, Ghareeb Fa`eeday mayn Hay, Noor Wala Chehra

Italian: Islam ki Bunyadi Baatayn

Pashto: 72 Madani In'amaat, 12 Madani Kaam, Karamaat 'Usman-e-Ghani رضی اللہ تعالی عنہ.

These are total 19 books/booklets.

Madaris. More than 570 Scholars and Mashaaikh visited Madani Marakiz of Dawat-e-Islami situated in different cities of Pakistan.

9. Shu'bah Madani Tarbiyyat Gahayn (Islamic sisters)

Under the department of Shu'bah Madani Tarbiyyat Gahayn (Islamic sisters), 12-day courses remain continued almost the whole year. اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ different courses namely (Special Islamic Sisters Course, Faizan-e-Quran Course, Faizan-e-Namaz Course and Madani Course etc.) were held in 7 different cities (Bab-ul-Madinah Karachi, Markaz-ul-Awliya Lahore, Madina-tul-Awliya Multan, Rawalpindi, Gulzar-e-Taybah Sargodha, Gujrat and Sardarabad Faisalabad), and total 19 courses were conducted in two cities of Hind (India) Agra and Kanpur. 3427 Islamic sisters got privilege to attend these courses.

10. Majlis Courses (Islamic sisters)

The department 'Majlis Courses (Islamic sisters)', is conducting courses from time to time, for Islamic sisters in home-country and abroad. Class duration of these courses is about 2 hours daily and these courses are without boarding facility. Number of days vary from course to course for example 12 days, 30 days, 3 months, 92 days etc.

The purpose of these courses is to bring the Islamic sisters close to the Madani environment of Dawat-e-Islami and to develop the eagerness to learn obligatory Islamic knowledge. In the last 6 months, five courses were conducted by this Majlis.

1021 Islamic sisters attended the 'Faizan-e-Hajj-o-'Umrah Course' held at 83 different locations in Pakistan.

2297 Islamic sisters attended the 'Faizan Tajweed-o-Namaz Course' held at 83 different locations in Pakistan. Taking the advantage of summer vacations, 'Faizan Hasanayn Karimayn Course' was conducted for the Madani children (girls) of class 3 at 139 locations in Pakistan, this was attended by 2579 Madani children (girls); similarly, this course was also held for the Madani children (girls) of class 4 and class 8 at 153 locations which was attended by 2531 Madani children (girls). "Faizan-e-Anwaar-e-Quran Course" was conducted in 419 different locations in Pakistan which was attended by 5881 Islamic Sisters. "Faizan-e-Rafiq-ul-Haramayn Course" was conducted at one place in Babul Madinah, Karachi, which was attended by 24 (2 times 12) Islamic Sisters.

11. Majlis Hajj-o-'Umrah (Islamic sisters)

In the last months, under the department of Majlis Hajj-o-'Umrah (Islamic sisters) Hajj Tarbiyyati congregations were held at 153 locations. This was attended by 7279 Islamic sisters.

12. Majlis 'Ushr & Surrounding Villages

According to an estimate 70% population of Pakistan lives in rural areas, so, in order to call the Muslims living in villages towards righteousness, 'Majlis 'Ushr & Surrounding Villages' has been formed. اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ this Majlis not only collects 'Ushr for the Madani activities of Dawat-e-Islami but also tries to make people Sunnah-performing and Salah-performing Muslims by associating them with the Madani environment of Dawat-e-Islami.

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ! Under this department, a 3-day Tarbiyyati congregation was conducted, attended by approximately 6000 Islamic brothers from the

Muhammad Imran Attari was delivered on Madani Channel on Rida-Poshi of 1160 Madaniyyah Islamic sisters who completed Dars-e-Nizami.

At different locations of Pakistan, Zimmahdar Islamic sisters of Alami Majlis Mushawarat made Rida-Poshi of Islamic sisters of Jami'a-tul-Madinah.

4. Madrasa-tul-Madinah (for Islamic brothers and sisters)

The numbers of Islamic brothers having privileged to become Haafiz and to lead Taraweeh every year in hundreds of Ahl-us-Sunnah Masajid, have been increased in 1437AH 2016AD, by approximately 5557, who got the privilege to lead Taraweeh or do Sama'at (listen recitation) as compared to 1436AH 2015AD.

17317 new admissions in Madrasa-tul-Madinah (for Islamic brothers and sisters) have been sought this year throughout Pakistan.

In the current year, 14554 Huffaz from Madrasa-tul-Madinah and approximately 3280 Huffaz from Jami'a-tul-Madinah have been privileged to lead Taraweeh or do Sama'at.

5. Majlis Khuddam-ul-Masajid

Under the department of Majlis Khuddam-ul-Masajid, 480 plots were awarded (in 11 months from January to November 2016) to Dawat-e-Islami for Masajid. New construction of further 229 Masajid have been initiated as well as Salahs have been started regularly in 134 Masajid. At present, approx. 480 Masajid are under construction in Pakistan.

6. Majlis Madani Courses

Dawat-e-Islami imparts Madani Tarbiyyah (training) to its Zimmahdaran (responsible) Islamic brothers and other devotees of Rasool as well. In this regards, various courses are conducted for them from time to time. Majlis Madani Course had the privilege to conduct, '124 Madani Courses of 12 Days' all over Pakistan from February till December 2016 (11 months), which were attended by 3977 devotees of Rasool. Remember! This is a unique Madani course for which founder of Dawat-e-Islami, Ameer-e-Ahl-e-Sunnat دامت برکاتہم العالیہ has stated: This is a character building course. May Allah عزوجل bestow privilege to every Islamic brother of Dawat-e-Islami to attend this Madani course of 12 days. No one may remain deprived of it. Now the title assigned to this course is "Islah-e-Aamaal Course" (Deeds Reforming Course).

7. Majlis Tahaffuz-e-Awraaq-e-Muqaddasah

Majlis Tahaffuz-e-Awraaq-e-Muqaddasah has installed nearly 27,000 boxes at various locations in approximately more than 150 cities of Pakistan and until now, more or less 200,000 bags of Awraaq-e-Muqaddasah have been preserved. In last two months approximately 6080 bags have been persevered and more than 2000 new boxes were installed.

8. Majlis Rabitah bil-'Ulama wal-Mashaaikh

Majlis Rabitah bil-'Ulama wal-Mashaaikh is also one of the departments of Dawat-e-Islami under which approximately more than 2000 students belonging to different Jami'aat and Madaris attended weekly Sunnah-inspiring congregation in the last 6 months. Zimmahdaran of Majlis have got the privilege to meet more than 870 Scholars, Mashaaikh, Aimmah and Khutabah (preachers). Majlis Zimmahdaran had an honour to visit more than 160 different Ahl-us-Sunnah Jami'aat and

May Dawat-e-Islami Progress!

Brief Activities of Dawat-e-Islami's Majalis

By the grace of Allah عَزَّوَجَلَّ! Dawat-e-Islami is progressing by leaps and bounds across the globe. Along with conveying its message to 200 countries, Dawat-e-Islami has been serving Islam through actively working in more than 103 departments. Here is the brief information of few departments functioning under Dawat-e-Islami:

1. Majlis Maktubat-o-Ta'wizat-e-'Attariyyah

WhatsApp Istikharah service has been launched for Islamic brothers and sisters living abroad through which monthly thousands of Islamic brothers and sisters are benefiting. For details, please visit Dawat-e-Islami's website www.dawateislami.net.

WhatsApp service for becoming Mureed or Taalib of Ameer-e-Ahl-e-Sunnat دامت برکاتہم العالیہ, the founder of Dawat-e-Islami, has been launched which is monthly benefiting thousands of Islamic brothers and sisters. Please dial the following number if you wish to contact via WhatsApp: (+92 321 2626112). The segment of spiritual cure has also been launched in Bangla and English languages on Madani Channel.

2. Jami'a-tul-Madinah (for Islamic brothers)

Dastar-Bandi (turban-tying ceremony) of approx. 365 Madani Islamic brothers of Jami'a-tul-Madinah from all over Pakistan was held. In this regards, congregations were organized in 6 different cities [Bab-ul-Madinah (Karachi), Zamzam Nagar (Hyderabad), Madina-tul-Awliya (Multan), Sardarabad (Faisalabad), Markaz-ul-Awliya (Lahore) and Islamabad]. During this ceremony, Madani gifts were also presented to those who secured prominent positions.

Thousands of Islamic brothers, travelled with Madani Qafilahs for three days on 10th, 11th and 12th December 2016. The travellers of Madani Qafilah also included Madani students, respected teachers and Madani employees Islamic brothers.

Until the writing of this content, according to the progress report received from Jami'a-tul-Madinah, 5891 (five thousand eight hundred and ninety one) new admissions have been sought in this year.

3. Jami'a-tul-Madinah (for Islamic sisters)

Thousands of Islamic sisters are doing Dars-e-Nizami ('Aalimah) course in Jami'a-tul-Madinah (for Islamic sisters). 13548 Islamic sisters are seeking Islamic education in 231 Jami'aat-ul-Madinah throughout Pakistan till writing of this content. Until now (1438 AH), more or less 2607 Islamic sisters had the privilege to complete Dars-e-Nizami.

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ 12 new Jami'a-tul-Madinah (Lil-banaat) were started throughout Pakistan in the current academic year. This year, 4928 new admissions have been sought.

The Sunnah-inspiring Bayan of Nigran of Markazi Majlis-e-Shura, Maulana Haji Abu Haamid

I.T Majlis Update

Quiz Application

ZEHNI AZMAISH

अल कुरआनुल करीम मोबाइल एप्लीकेशन

कुरआने पाक के तमाम पारों और सूरतों को तिलावत करने के साथ साथ तिलावत सुनने की सहूलत

Available At :

Useful Tips

उर्दू और अंग्रेज़ी मज़मीन में दुरूद शरीफ़ लिखने की सआदत हासिल करें

माइक्रोसोफ़्ट वर्ड में FDFA लिखने के बा'द "Alt+x" को प्रेस करने से दुरूद शरीफ़ ﷺ में तब्दील कर सकते हैं। मज़ीद येह कि दुरूद शरीफ़ ﷺ लिखने की मुख़्तलिफ़ शोर्ट कीज़ (Short keys) इस्ति'माल करते हुवे भी दुरूद शरीफ़ ﷺ लिखा जा सकता है, येह त़रीक़ए कार फ़क़त़ माइक्रोसोफ़्ट वर्ड में दुरुस्त रहेगा जब कि येह वेब पेजिज़ या नोट पेड वग़ैरा में ठीक त़रह़ से काम नहीं करेगा। जैसा कि स्मार्ट फ़ोन्ज़ वग़ैरा में जहां अ़रबी या अ़रबी त़रह़ के फ़ोन्ट्स मौजूद नहीं होते वहां येह सिर्फ़ एक ख़ाली बोक्स दिखाता है। ठीक उसी त़रह़ जहां यूनीकोड के केरेक्टर्ज़ मिस हों और उन के फ़ोन्ट्स मौजूद न हों।

मुख़्तलिफ़ शोर्ट कीज़ (Short keys)

FDFB	+	ALT	+	X	=	ﷻ
FDFA	+	ALT	+	X	=	ﷺ
FDF2	+	ALT	+	X	=	الله
FDF3	+	ALT	+	X	=	اكبر
FDF4	+	ALT	+	X	=	محمد
FDF6	+	ALT	+	X	=	رسول
FDF7	+	ALT	+	X	=	عليه
FDF8	+	ALT	+	X	=	وسلم
FDF9	+	ALT	+	X	=	صلى

केरियर पोर्टल (Career Portal)

दा'वते इस्लामी की वेबसाइट पर केरियर पोर्टल सर्विस मौजूद है जिस के ज़रीए आप नोकरी के लिये बा आसानी दरख़्वास्त दे सकते हैं।

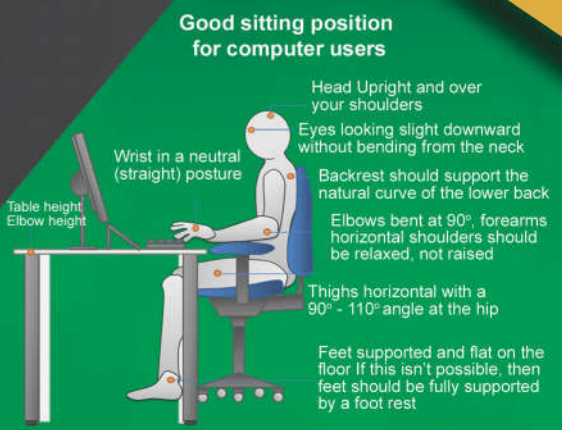

कम्प्यूटर इस्ति'माल करते वक़्त बैठने का बेहतर अन्दाज़

आज बड़ी सर्दी है !

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब सख़्त गर्मी होती है तो बन्दा कहता है : “ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه ” आज बड़ी गर्मी है ! ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ! मुझे जहन्नम की गर्मी से पनाह दे । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दोज़ख़ से फ़रमाता है : “मेरा बन्दा मुझ से तेरी गर्मी से पनाह मांग रहा है और मैं तुझे गवाह बनाता हूं कि मैं ने इसे तेरी गर्मी से पनाह दी ।” और जब सख़्त सर्दी होती है तो बन्दा कहता है : “ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه ” आज कितनी सख़्त सर्दी है ! ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) मुझे जहन्नम की ज़्महरीर से बचा । अल्लाह तआ़ला जहन्नम से कहता है : “मेरा बन्दा मुझ से तेरी ज़्महरीर से पनाह मांग रहा है और मैं ने तेरी ज़्महरीर से इसे पनाह दी ।” सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : जहन्नम की ज़्महरीर क्या है ? फ़रमाया : वोह एक गढ़ा है जिस में काफ़िर को फैंका जाएगा तो सख़्त सर्दी से उस का जिस्म टुकड़े टुकड़े हो जाएगा । (اَلْبُدُوْرُ السَّافِرَة لِلسُّيُوطی ص٤١٨ حديث١٣٩٥)

मदनी मुज़ाकरा फ़ैज़ाने मदीना

मसाजिद और जामिअ़तुल मदीना

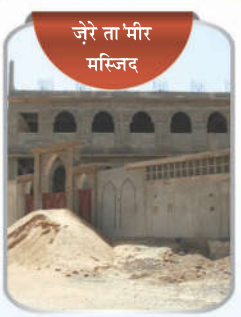

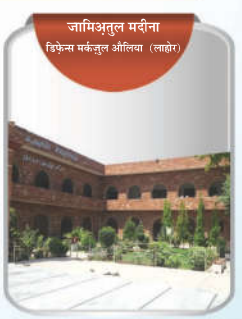

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी दुन्या के 200 से ज़ाइद मुमालिक में 103 से ज़ाइद शो'बाजात के ज़रीए दीने इस्लाम की ख़िदमत के लिये कोशां है ।

मक्तबतुल मदीना, 421- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
Web: www.dawateislami.net / Email: mahnama@dawateislami.net
MC 1286